हरि: इलैक्ट्रो कम्प्यूटर्स

दी माल – सोलन (हि.प्र.) 173 212

फोन : 01792 – 222228, 226228, 98050 – 22028

वैज्ञानिक परम्परा सुमन – 4

सोलन की सर्वहित साधना

डॉ. लेखराम शर्मा दर्शनाचार्य

एम.ए. (संस्कृत हिन्दी) पी.एच.डी.

वैज्ञानिक परम्परा सुमन – 4

सोलन की सर्वहित साधना

डॉ. लेखराम शर्मा दर्शनाचार्य
एम.ए. (संस्कृत हिन्दी) पी.एच.डी.
पूर्व प्राचार्य, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय,
(नाहन – सोलन)

वैज्ञानिक परम्परा सुमन – 4

सोलन की सर्वहित साधना

आराधनम्
डॉ. लेखराम शर्मा ...
गांव धाला
डाक घर देवठी, सपरून (173 211)
तहसील व जिला सोलन (हि.प्र.)

मूल्य : पचहत्तर रूपए

डिजाईनिंग व प्रिन्टिंग :–
हरिः इलैक्ट्रो कम्प्यूटर्स
विपरीत ऑरियन्ट इन्शोरैन्स, दी माल सोलन
तह. व जिला सोलन (हि.प्र.) 173 212
फोन : 01792 – 222228, 98050 – 22028

प्रकाशन :

Catageri-5/2012-ISBN-13-978–81–925402–1–4
नंदी प्रकाशन
नंदी ग्राम, सुबाथू रोड,
धर्मपुर, जिला सोलन,
हिमाचल प्रदेश–173209
फोन : 01792–265060

सादर समर्पण

हिमाचल प्रदेश की जानी–मानी
पुरानी रियासत बघाट के संस्कृत,
संस्कृति, सनातन धर्म, राष्ट्रहित,
शरणागत और मानवता के प्रबल पोषक
अंतिम स्व. राजा दुर्गा सिंह जी
को जिनके करकमलों द्वारा
संस्थापित सोलनस्थ
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश
पाकर
दुर्लभ मानव जीवन को यथासंभव
समझने का स्वर्णावसर मिला।

– लेखक

मेरी पूर्व प्रकाशित पुस्तक

'जय बघाटेश्वरी मां शूलिनी' पर सोलन क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश तथा भारतीय संस्कृति के लिए एक समर्पित वरिष्ठ संस्कृत विद्वान् के कृपापूर्ण विचार :

(1) डॉ. लेखराम शर्मा जी देववाणी संस्कृत के योग्य आचार्यों में परिगणित होते हैं। सफल अध्यापक तो रहे ही हैं, पुस्तक रचना के कारण सफल लेखकों में भी आ गए हैं।

(2) प्रस्तुत पुस्तक मुख्य रूप से बघाटेश्वरी देवी मां की महिमा पर लिखी गई है, पर जब इसका अवेक्षण किया गया, तो सोलन जिले के सम्बन्ध में भी इसमें महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध हो जाती है।

(3) उदाहरण के रूप में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बिलासपुर के चन्देल वंशीय राजा वीरचन्द के अधिकार में पर्वतीय ठकुराईयों की ओर संकेत और 'बघाट' शब्द की निरूक्ति 'बहुघाट' के रूप में देने से नवीनता और शुद्ध शब्द निरूक्ति का भी पृष्ठपोषण हो जाता है, जो ऐतिहासिकता की पुष्टि करता हुआ प्रतीत होता है।

(4) जटोली, बोहच, करोल, जौणाजी आदि प्रसिद्ध स्थानों का उल्लेख बच्चों के लिए भी उपयोगी है।

(5) जिले के धार्मिक जीवन की और संकेत, पुरातन बघाट में शक्ति पूजा की महिमा बताकर विज्ञलेखक ने साधारण रूप से तो बघाट और विशेष रूप से समस्त प्रदेश के अन्य शक्तिपीठों की महत्ता की ओर भी पाठक के ध्यान को आकर्षित किया है।

(6) प्रस्तुत पुस्तक यदि प्राथमिक पाठशालाओं के छात्रों के अध्ययनक्रम में नियत कर दी जाए तो उनका लाभ स्थानीय भूगोल को जानने में भी उपयोगी सिद्ध होगा।

एम.आर. शर्मा 'अरूण'
पूर्व प्रभारी संस्कृत विभाग
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.)सोलन हिमाचल प्रदेश।
दिनांक : 15.9.2012

शूलिनी बुक स्टोर सोलन से प्राप्त
मेरे द्वारा पूर्व लिखित पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव *(सोलन क्षेत्र के पारंपरिक प्रधान देवता की जानकारी)*	60/-
जय बघाटेश्वरी मां शूलिनी *(सोलन क्षेत्र की पारंपरिक प्रधान देवी की जानकारी)*	95/-

शूलिनी बुक स्टोर, राजगढ़ रोड, सोलन (हि.प्र.)
फोन : 92180-32892

विषयसूचिका

साम्मान्य प्रेमी पाठकों से

हमारा जीवन उस अज्ञात आद्यन्त यात्रा का एक ऐसा हिस्सा है जिसको हमने अनेक सोपानों में बांटा है। शूद्रत्व (निम्नस्तर) से लेकर ब्राह्मणत्व (उच्चस्तर) तक यही यात्रा संपन्न होती है। शूद्रत्व उस आत्मिक विकास यात्रा का जन्म से ही पहला सोपान और पांव है, जिसमें से हम सभी को अनिवार्यतः गुजरना पड़ता है। इसमें शारीरिक श्रम तो भरपूर होता है, लेकिन मंजिल का ज्ञान कम होता है। उसके लिए दूसरों का मार्गदर्शन लेना ही पड़ता है।

मेरी विद्यार्थी जीवन से अच्छे विचारों को नोट कर लेने की आदत कभी पुस्तकाकार पा सकेगी इसका मुझे खुद भी ज्ञान नहीं था। उन विचारों के मंथन से जो एक विशेष विचारधारा निकल कर सामने आती है उसे आपके सामने प्रकट करते हुए मुझे खुशी होती है। उस विचारधारा को देश-कालानुरूप ढालकर संदेशात्मक बनाने में कहां तक सफल हुआ हूं यह मेरे सम्मान्य पाठक ही बता सकते हैं। उन महान् विचारकों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूं , जिनके श्रेष्ठ विचारों के मंथन से यह रचना सामने आ सकी है।

यह हम, आप और सभी के लिए परम सौभाग्य की बात है कि हमारा जन्म या निवास एक ऐसे क्षेत्र में हुआ है, जहां के नदी-नाले, पेड़-पौधे, हरयाली, उपजाऊ खेत, सुन्दर पहाड़ियां और संतुलित जलवायु जीव-जंतुओं और इन्सानों से बातें करते नजर आते हैं। सर्वजीवकल्याण के आदर्श शिव-पार्वती के प्रतिनिधि देवता-देवी, राजा-रानी और पुरूष-स्त्री पग-पग पर हमारा सन्मार्गदर्शन करते नजर आते हैं। लगभग ऐसे ही वातावरण पर यहां पाठकों से चर्चा करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

हमारा जन्म हमारी प्रकृति के अनुसार भूगोल के एक विशेष अक्षांश-रेखांश पर हुआ है। यहां के विशेष जलवायु-वातावरण का हमारे व्यक्तिगत जीवन पर स्वतंत्र प्रभाव पड़ा है। उसकी हम अनदेखी नहीं कर सकते। यहां की बोली और जीवनशैली हमारा पहला विद्यालय है। हम इस पहली सीढ़ी को छोड़कर सबसे ऊपर की सीढ़ी पर पांव नहीं रख सकते। विश्व स्तर पर हम जितना मर्जी सीख लें, लेकिन अंगुली पकड़कर सबसे पहले चलना हमें हमारी जन्मभूमि मां ने ही सिखाया है। यह हमें एक दुर्लभ संतुष्टि प्रदान करती है। अगर मेरी यह रचना इस बिन्दु पर भी हमें कुछ सोचने पर बाध्य करती है तो मुझे अपने प्रयत्नों से कुछ संतुष्टि मिल सकेगी। प्रस्तुत रचना के माध्यम से मैं विनम्र निवेदन करना चाहता हूं कि मनुष्य की सबसे बड़ी प्यास है-अपने आप को समझना। अपने आप को समझना ही आनंद पाने का या समस्याओं से मुक्ति पाने का सर्वोत्तम साधन है। यही कारण है कि हमारे आदरणीय अनुभवी विचारकों ने 'आत्मानं विद्धि या अपने आपको समझो' रूप संदेश पर जोर दिया है। अपने आप को स्थानीय बोली और परंपराओं के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है। वर्तमान विश्व की चेतनाहीन विश्वग्राम की अवधारणा मनुष्य को अशांत और अव्यस्थित बना रही है। विभिन्न जन समुदायों की तरह ही हम भी अपनी बोली और परंपराओं के माध्यम से अपनी आत्मिक प्यास को बुझा सकते हैं। ब्राह्मणत्व वस्तुतः आत्म विकास का एक साधन है। ब्राह्मणत्व साधना से अभिप्राय है भगवान् शिव के आदर्शानुरूप सर्वजीव कल्याणकारी कार्यों से आत्म संतोष प्राप्त करना। सर्वजीव कल्याणकारी ब्रह्मा की तरह ही उसकी संतानें हम भी अपने सर्वजीव कल्याणकारी स्वभाव व कार्यों से भला कैसे विमुख हो सकते हैं। अगर इस लघु रचना के माध्यम से किसी पाठक को अपनी आत्मा से मधुर संवाद करने का तनिक भी स्ववसर मिलता है तो मैं अपने आपको कृत-कृत्य समझूंगा।

जय मां शूलिनी।

श्री गायत्र्यर्पणम्

शारदीय नवरात्र प्रतिपदा, वि.सं. 2069

16 - 10 - 2012

सैंकड़ों भवनों और मंदिरो के निर्माता और प्रतिष्ठापक एक कर्मकांडी पंडित के विचार

आमतौर पर लोग ब्राह्मणत्व शब्द के अर्थ को नहीं जानते। ब्राह्मणत्व शब्द वास्तव में एक गूढ़ तत्त्व है। इसका मतलब आमतौर पर लोग उसी प्रकार से नहीं जान पाते, जिस प्रकार कड़छी व्यंजन के स्वाद को नहीं जान सकती। जो व्यक्ति ब्राह्मणत्व शब्द का रहस्य जानता है वह कलियुग के काम-क्रोधादि दोषों से बच जाता है। एक सच्चा ब्राह्मण समाज के लिए जो आदर्श स्थापित कर देता है, लोग उस पर आचरण करके अपने जीवन को सुखमय बनाते हैं। वास्तव में जन्म लेने मात्र से तो सभी मनुष्य शूद्र (ब्रह्मज्ञानरहित) होते हैं। ब्राह्मण (ब्रह्मज्ञानी) बनने के लिए तो लंबी साधना की जरूरत पड़ती है। ब्राह्मण मनुष्यमात्र के लिए सद्बुद्धि की कामना करता है। यहां तक कि वह अपने शत्रुओं के नाश की भी बात नहीं सोचता। वह सोचता है कि अगर शत्रुओं में सद्बुद्धि रहेगी तो ही हम सभी सुखी होंगे। अत: वह कहता है-'शत्रूणां सद्बुद्धिरस्तु।' अर्थात् शत्रुओं को भी अच्छा ज्ञान मिले। इस सोच में सच्चा ब्राह्मणत्व है। इसी सोच को पाने के लिए मानव मात्र को प्रयत्न करना चाहिए।

हरि राम शर्मा

ग्राम क्वारग (कण्डाघाट)

ब्राह्मणत्वं वंदे

आनंददं जगत्सूते ब्रह्म यद्धि सनातनम्।
योजयित्वा करौ वंदे बीजाज्जातं सुपुष्कम्।।
बीजे भवाः गुणाः सर्वे यथायान्ति हि वृक्षके।
गुणाः सर्वे तथायान्ति ब्रह्मजाते तु जीवके।।

काले काले यथा क्षरति भूमिगतस्तु प्रस्तरः।
शनैः शनैः तथा क्षरति ब्रह्मज्ञानं हि जीवतः।।
कालस्य ये बलं ज्ञात्वा ज्ञानं रक्षन्ति यत्नतः।
ब्राह्मणास्तु सदा उक्ताः लोकेऽब्राह्मणवंदिताः।।

कार्यकारणरूपं तत् जन्मादेश्च नियामकम्।
नमामि शिरसा ब्रह्म तद् ब्राह्मणत्वदायकम्।।
ब्रह्मज्ञानं स्वयं लब्ध्वा ब्रह्मज्ञानं ददाति च।
तन्निमित्तं च कर्माणि कृत्वा सुखेन मोदते।।

स्वभावजं कर्म कृत्वा ब्रह्मज्ञानं हि कर्म च।
ब्राह्मणत्वं सदा पाति नरमात्रः प्रयत्नतः।।
ब्राह्मणत्वस्य लाभाय कर्मशुद्धिर्हिशंसिता।
तस्मात्किंचिद् हि कुर्याम ब्राह्मणाः वयं निद्रिताः।।

ब्राह्मणत्वं वरं लोके कर्मशुद्धिप्रदायकम्।
कर्मशुद्धया सुखं लोके तस्माद् ब्राह्मणत्व सेवनम्।।
ब्राह्मणत्वं सदा वंदे भुक्ति मुक्ति प्रदायकम्।
ब्राह्मणत्वरतांल्लोके पुनः पुनः नमाम्यहम्।।

सोलन की सर्वहितकारी ब्राह्मणत्व साधना

बघाट देवभूमि हिमाचल का वह दिव्य हिस्सा है जहां प्रकृति ने अपनी आकर्षक छटा बिखेरी है। छोटी-छोटी सुंदर हरी-भरी पहाड़ियां, सड़कें, नाले, उपजाऊ खेत और नदियां निरंतर इसके सौंदर्य को बढ़ाते हैं। करोल, कसौली, धारों की धार, बड़ोग और दयारशघाट इसके दर्शनीय स्थान हैं। मक्की और बारहमासी सब्जियां इसकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करती हैं। भोले-भाले, सज्जन, ईमानदार और कर्मठ बघाटी आगंतुकों के मन को बखूबी

लुभाते हैं। कभी जाबली से राजधानी आरंभ करके यह रियासत टूटू (शिमला) तक फैली हुई थी। बाद में कुल बारह परगनों में से केवल तीन परगनों तक सीमित हुई। इस रियासत के अंतिम राजा दुर्गा सिंह थे, जो आज भी अपने सर्वहितकारी आदर्श के रूप में लोगों के तन-मन में बसे हुए हैं। बघाटी सामाजिक संस्था उनके जन्म दिवस 15 सितंबर को बघाट दिवस के रूप में मनाने की ओर अग्रसर है। इतना ही नहीं वे सोलन में उनकी पैतृक भूमि पर बघाटी परंपराओं के संरक्षण के लिए एक 'बघाट भवन' बनाने के लिए भी प्रयत्नशील हैं। माना जाता है कि राजा दुर्गा सिंह का राज्याभिषेक बोहच नामक महल में हुआ था। दुर्भाग्यवश दो साल पहले यह महल बेचा और नष्ट किया जा चुका है। राजा दुर्गा सिंह के कार्यकाल में यहां की जनपरंपराओं, मां शूलिनी, अन्य देवी-देवताओं सहित संस्कृत भाषा और संस्कृति के विकास को बड़ा बल मिला, जिसके कारण यह क्षेत्र सदा दूर-दूर तक याद किया जाता रहेगा। बघाट या सोलन क्षेत्र के स्थायी-अस्थायी निवासी तथा पर्यटक यहां के रीति-रिवाज और परंपराओं का हृदय से आदर करते हैं, जो हम सभी के लिए एक गौरव की बात है। कुल मिलाकर केवल वही व्यक्ति ब्राह्मणत्व की साधना का अधिकारी कहला सकता है जो स्वच्छता, सदाचार और सामाजिक समन्वय के

प्रति सचेत होकर अपना कार्य करता है, भले ही पृथिवी पर उसका कहीं और कैसे भी जन्म हुआ हो। जहां तक सोलन क्षेत्रीय परंपराओं का सवाल है, यहां राज दरबार के साथ-साथ प्रजाजनों में ब्राह्मणों, विद्वानों और ज्ञानियों का आदर करने की परंपरा रही है। भारत के विख्यात महापुरुषों का यहां यदा-कदा स्वागत होता रहा है। इसके अतिरिक्त उपासना, कर्मकांड और संस्कृत भाषा के लिए यह क्षेत्र भारत भर में विख्यात रहा है। अपनी परंपरा के अनुरूप आज यहां का जनमानस संस्कृत विश्व विद्यालय का सपना देख रहा है।

राजा दुर्गा सिंह की अध्यक्षता तथा आनंदमयी मां के गुरुत्व में चलने वाले आध्यात्मिक प्रशिक्षण के सत्र 'संयम सप्ताह' आज भी अनेक स्थानों पर संचालित होते हैं। राजा दुर्गा सिंह, सनातन धर्म के स्तंभ थे। उनको काशी की विद्वन्मंडली द्वारा 'धर्म मार्त्तण्ड' की उपाधि प्राप्त थी। हर वर्ष 15 सितंबर को सोलन में उनकी जयंती मनायी जाती है। ये बघाट के शासकों में 77वें राजा थे। इनका परमार राजवंश कभी मध्य भारत की सीमा की धारा नगरी से यहां आया था। इस रियासत के संस्थापक हरिचंद पाल माने जाते हैं। सोलन क्षेत्र का प्राचीन काल से व्यापारिक और सामरिक महत्व रहा है। अमरकोट, बनासर, धारों की धार और

बस्सी (बसंतपुर) इसके महत्वपूर्ण स्थान रहे हैं। राजा महेंद्र पाल ने अमर सिंह थापा पर अंग्रेजों द्वारा आक्रमण किए जाने पर ईस्ट इंडिया कंपनी का विरोध किया था। इसके एवज में उसे बघाट रियासत के महत्वपूर्ण नौ परगनों से हाथ धोना पड़ा था। वास्तव में उस समय गोरखों को भगाने में साथ न देने के हर्जाने के रूप में अंग्रेजों द्वारा एक लाख रुपये मांगे गए थे शायद जो राजा के वश की बात नहीं थी। वह हर्जाना राजा पटियाला ने चुकाया तो वे नौ परगने पटियाला रियासत में चले गए। बघाट केवल तीन परगनों पर सन् 1947 तक टिका रहा। सन् 1815 में 5000 रुपए में कंपनी ने कसौली भी खरीद ली। सन् 1850 में लैप्स की नीति के तहत राजा के लावारिस होने से अंग्रेजों ने बघाट पर कब्जा कर लिया। 1857 में बघाट ने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति में साथ दिया। राजा उमेद सिंह ने लैप्स की नीति के विरोध में मुकदमा दायर किया था, जिसमें वह जीत गए और रियासत पर फिर से कब्जा बहाल हो गया।

सन् 1863 में सोलन का कैंटोनमेंट एरिया 500 रुपए में अंग्रेजों को बिक गया। लाहौर कॉलेज में पढ़ते समय किसी नवाब के पुत्र विद्यार्थी द्वारा राजा दुर्गा सिंह को अपमानजनक शब्द कहे गए थे। पुत्र की निराशा पर सोलन की राजमाता को यह बात न भाई और उन्होंने ब्रिटेन की रानी के पास इस बात की लिखित

शिकायत भेजी। ब्रिटिश रानी के आदेश पर उस नवाब के पुत्र को राजा दुर्गा सिंह से लिखित रूप में माफी मांगनी पड़ी थी। हिमाचल का नामकरण, शास्त्रीय संगीत प्रेम और टेनिस का खेल दुर्गा सिंह के नाम के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हैं। माना जाता है कि कभी पिंजौर से टूटू तक यह रियासत फैली हुई थी। शंकराचार्य श्री कृष्ण बोधाश्रम जी को भी कभी इस रियासत का आश्रय और सम्मान मिला था। हिमाचल की 30 रियासतों को एकजुट करने में राजा दुर्गा सिंह का विशेष योगदान माना जाता है। राजा साहब में शिक्षा के प्रति अनोखा अनुराग था। श्री शिव सिंह चौहान के अनुसार ये आदर्श राजा, प्रजाप्रेमी, न्यायप्रिय, कर्मठ, वीर, शूर, समाजसेवक, राष्ट्रभक्त, दूरदर्शी, परोपकारी और कूटनीतिज्ञ थे। सर्वप्रथम सोलन को जिला बनाने का प्रस्ताव भी इन्होंने ही रखा था। आज प्रदेश में सोलन सर्वाधिक राजस्व देने वाला जिला विश्वविद्यालयों, पत्रकारिता, वाहन संख्या और बेमौसमी सब्जियां उगाने में प्रथम स्थान रखता है। संस्कृत भाषा सहित भारतीय संस्कारों और परंपराओं का यहां जिस तरीके से विकास हुआ है उसे देखते हुए यहां एक संस्कृत शोध संस्थान अथवा संस्कृत विश्वविद्यालय की आज महती आवश्यकता है। यहां की भूमि के मूल संस्कारों को संस्कृत भाषा संबंधी अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के द्वारा शक्ति प्रदान करना

हम, आप और सभी का नैतिक कर्त्तव्य है, ताकि यहां की बढ़ती हुई भौतिक समृद्धि को आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिलता रहे।

जय बघाट।

इससे पहले कि बघाट क्षेत्रीय ब्राह्मणत्व साधना पर प्रकाश डाला जाए यह जानना आवश्यक है कि शूद्रत्व की भावना का हमारी आत्मिक विकास यात्रा में महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में यह हमारी विकास यात्रा का एक पांव या स्तंभ है, जिसके ऊपर संपूर्ण विकास टिकता है। संपूर्ण विकास के शारीरिक श्रम का अधिकतर भार उसको ही उठाना और ढोना पड़ता है। यह भी कि विकास पुरुष के इस महत्वपूर्ण अंग के विना वह हीनांग और अपूर्ण हो जाएगा। इस बात में भी दो राय नहीं कि विकास पुरुष की विकास यात्रा पांव से आरंभ होकर मस्तिष्क पर पूर्ण होती है। मस्तिष्क प्रधान अंग है। उसी में ब्राह्मणत्व की प्रतिष्ठा है। ब्राह्मणत्व या श्रेष्ठता की साधना में मानवमात्र का अधिकार है। ब्राह्मणत्व श्रेष्ठता की चरमसीमा है। वह ब्रह्म या परमात्मा के प्रयोजन के लिए जीवन जीता है। उसमें अपने या दूसरों के प्रति हीनता की भावना नहीं होती। उसमें शूद्र या शूद्रत्व के प्रति भी मंगल की भावना होती है। वह स्वयं ब्रह्मज्ञान रहित शूद्रत्व में से होकर गुजरा होता है। जिसने सचमुच अपना आत्मिक विकास किया है, वह दूसरों के

विकास के लिए भी एक आदर्श प्रेरणा बनने का प्रयास करता है। उसका वैदिक औपचारिक ब्राह्मणत्व हेतु संस्कार हुआ हो या न हुआ हो, वह अपना यह दिव्य कर्म कभी छोड़ता नहीं। ब्राह्मणत्व कब प्राप्त होगा, यह नितान्त ईश्वरीय कृपा पर निर्भर होता है। कभी क्षण भर में प्राप्त हो जाता है तो कभी अनेक जन्मों में भी प्राप्त नहीं होता। हम तो केवल उस पथ के पथिक हैं और उस पर चलना हमारा परम कर्त्तव्य है। इस भावना के साथ कि 'चलन् मधु विंदति' अर्थात् अपने लक्ष्यपथ पर बढ़ने वाले को ही अपना लक्ष्य प्राप्त होता है।

हमारे ऋषियों के अनुसार ब्रह्म का तेज ही असली बल है। इसी तेज के कारण ब्राह्मण सदा स्वाभिमानी रहा है। अपने स्वाभिमान के कारण वह भले ही आर्थिक रूप से पिछड़ गया हो लेकिन उसने स्वाभिमान को नहीं छोड़ा है। आरक्षण के सबसे बुरे प्रभाव को भी वह निरंतर झेलता जा रहा है। ब्राह्मण सभी वस्तुओं में ब्रह्म को देखता है। सारे संसार को अपना परिवार मानता है। सभी जीवों के हित में काम करता है। सबकी भलाई में विश्वास रखता है। इसलिए कि वह परमपिता की पहली संतान है। सबसे बड़े भाई के कर्त्तव्य पिता के समान होते हैं।

गायत्री आदि मंत्रों के जप से ब्रह्मतेज का संचय

होता है। प्राचीन काल में ब्राह्मण वचन को भगवान् का वचन माना जाता था। ब्रह्मर्षियों के निकट रहने से वेदव्यास, विश्वामित्र और लोमहर्षण सूत जैसे लोग ब्रह्मर्षि बन गए। ब्राह्मण ब्राह्मणत्व का शक्तिपात करके किसी को भी संस्कारी ब्राह्मण बनाने की क्षमता रखता है। गंगा मां के समान पावन ब्राह्मण साधारण जल को गंगा जल के समान पावन बना सकता है। ब्रह्म या परमात्मा की संतानों की रक्षा करने वाला कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण कहलाता है।

भारत की भा या चमक उसका आध्यात्मिक प्रकाश है। ब्राह्मणों के बुलाने पर भगवान् को भी इस धरती पर अवतार लेना पड़ता है। प्राचीन ग्रन्थों और आयुर्वेद पर अनुसंधान की आज बहुत आवश्यकता है। ब्राह्मण विद्याओं के पिछड़ने के कारण ही आज मानवता का सही मार्गदर्शन नहीं हो पा रहा है। ब्राह्मणत्व की साधना का यह समय है। आज के समय की आसुरी वृत्ति पुराणों में बताए गए कल्कि अवतार की और संकेत करती है। सतयुग में वामन, त्रेता में प्रभु राम के रूप में अवतार लेने के बाद कलियुग में कल्कि के रूप में अवतार लेने वाले हैं। उक्त सभी ब्राह्मण के रूप रहे हैं। नीला रंग न्याय का प्रतीक है और घोड़ा शक्ति का। उस ब्राह्मण रूप की शक्ति उसकी इच्छानुसार काम करेगी। वह शुद्ध अंहकार से अशुद्ध अंहकार वाले बुद्धिमानों को परास्त करेगा।

उसकी प्रबलतम शक्ति अद्वितीय होगी। पदार्थ से परे न देख सकने वाले बुद्धिवादियों से वह युद्ध करेगा। संभवत: सभी प्रदेशों के सहयोगियों के साथ मथुरा के समीप उसका कार्यक्षेत्र होगा। वह ब्रह्मगायत्री का रहस्यवेत्ता और उपासक होगा। वह विचारों से विचारों को काटने की कला में अतीव कुशल होगा। वही आर्ष ग्रन्थों का उद्धार करेगा। संपन्न होने पर भी साधारण गृहस्थ जैसा होगा। वह अपनी संपत्ति लोकमंगल के लिए खर्च करेगा। उसके भयंकर विचारों से कांपते लोग उसकी धर्मपत्नी से माधुर्यपूर्ण मार्गदर्शन पाएंगे। उस अवस्था में भारत बहुत उन्नति करेगा तथा विश्व पर छा जाएगा। ऐसा मनीषियों का विचार है।

आज के कर्त्तव्य विमुख ब्राह्मण अपने कर्त्तव्य के बोध के लिए आतुर होने हैं। ब्राह्मण क्रोध, लोभ और मोह से अपना बचाव करता है। सच्चा ब्राह्मण सतयुग को सामने ला सकता है। इस युग के मनोविकार तब मिटेंगे जब ब्राह्मणत्व प्रकट होगा। ब्राह्मणत्व एक श्रेष्ठ जीवन की साधना है। इस साधना को करने से शूद्र ऐतरेय भी ब्राह्मण हो गया था। इस साधना के विपरीत चलने वाले जन्म से ब्राह्मण अजामिल और धुंधुकारी भी शूद्र हो गए थे। समाज से कम से कम लेकर उसको अधिकतम देने वाला ही सच्चा ब्राह्मण है। वह अपनी तपस्या, विचार और आदर्श जीवन से औरों

का मार्गदर्शन करता है। वह ईश्वर के प्रयोजन की पूर्ति के लिए, औरों के सुख के लिए एक दर्द को साथ लेकर चलता है। वैदिक परंपरानुसार खतरनाक दुष्टों के संहार के लिए उसका शस्त्र उठाना दोषरहित या उचित माना गया है।

ब्राह्मण मात्र एक जाति नहीं बल्कि भारत की संस्कृति व सभ्यता का प्रतीक है। वह भारतीय संस्कृति का रचनाकार है। उसने संपूर्ण संसार के लोंगों को चरित्र की शिक्षा दी थी। प्राचीन काल में ब्राह्मणादि चारों वर्ण पवित्र और भगवन्मय माने जाते थे। ब्राह्मणों ने ही भगवान् राम को भगवान् बनाया था-ऐसा स्वयं भगवान् राम का वचन है। वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे ब्रह्मर्षि न होते तो भगवान् राम भी न होते। प्राचीन राजा अपने राज्य में एक ब्राह्मण राजगुरू जरूर रखते थे।

ब्राह्मण कन्या लक्ष्मी बाई ने सबसे पहले भारत की स्वतंत्रता के लिए बलिदान किया था। मंगल पांडे जैसे ब्राह्मण भी स्वतंत्रता संग्राम से पीछे नहीं रहे। त्रेतायुग में सहस्त्रबाहु ने जब ब्राह्मणों और गौ माताओं पर अत्याचार किए तो भगवान् परशुराम अपना परशु लेकर मैदान में उतर गऐ थे। ब्राह्मणों और सनातन धर्म से ही आज तक भारत सुरक्षित रहा है। आज के विश्व के हालातों ने ब्राह्मणों को अपनी रक्षा के लिए भी मजबूर कर दिया है। ब्राह्मण

संगठन यूरोपीय देशों में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन कर रहा है। इस संस्था ने हॉलैंड की सरकार से मिलकर वहां हिन्दुओं के लिए शमशान स्थल और बाल कारागार में हिन्दू राजगुरु की व्यवस्था और नियुक्ति करवाई है।

शास्त्रों के अनुसार केवल वेद-शास्त्र का ज्ञाता ही राजा बनने का हक रखता है। आमतौर पर ब्राह्मण सदाचारी, न्यायप्रिय और लोकोपकारी होता है। वह तिलक, यज्ञोपवीत, संध्या और पवित्र संस्कारों से अपनी पहचान बनाए रखता है। वह अपने आशी: वचन से सबका कल्याण करने को सदा तत्पर रहता है। ब्राह्मण के लिए सारा संसार एक परिवार है। वह न्याय और सच्चाई का पक्षधर है। ब्राह्मणों ने ही निषाद कन्या से उत्पन्न द्वैपायन को वेदों का उद्धारक व्यास बनाया। क्षत्रिय विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि की उपाधि प्रदान की। नैमिषारण्य के निवासी लोमहर्षण सूत को पुराणोपदेशकर्ता का पद दिया। उसने कभी अपने लिए सत्ता नहीं चाही। ब्राह्मणों की उपयोगिता समझ कर ही भगवान् कृष्ण ने सुदामा के चरण धोए थे। इन्हीं अग्रज ब्राह्मणों से संसार भर के लोगों ने अपने-अपने चरित्र और व्यवसाय सीखे थे। लोकतंत्र की रक्षा के लिए ये सदा दधीचि बनने को तैयार रहते हैं।

ब्राह्मणत्व के महान् उपासक महर्षि अगस्त्य ब्रह्मक्षेत्र

पुष्करराज की एक पावनस्थली में तपस्यारत थे। महर्षियों की तपस्या दु:खियों के त्राण के लिए होती है। तभी समस्त देवता कातर भाव से उनकी शरण में आकर बोले- 'ऋषिवर, कालदेव नाम के राक्षस हम देवताओं और ब्राह्मणों को खाकर सागर की गहराई में जाकर छिप जाते हैं। दुनिया में हाहाकार मच रहा है। कृपया हम सबकी रक्षा करो।' भगवान् अगस्त्य ने सागर के पास जाकर उसके जल से तीन बार आचमन किया। सागर सूख गया। देवताओं ने निर्जल सागर में राक्षसों को पाकर उन पर आक्रमण कर दिया और धरती को पापियों के भार से मुक्त कर दिया। धन्य थे हमारे पूर्वज ऋषि जो जीवों की कातर पुकार से उन पर निष्काम कृपा करते थे। ऐसे ऋषियों की संतान होने पर हमें गौरव है। हम भी उनकी राह अपनाकर अपने आस-पास के दु:खी जीवों का येन-केन प्रकारेण उद्धार कर सकते हैं। जय ब्राह्मणत्व।

ब्राह्मण भूख-प्यास आदि कष्टों को सह सकता है, लेकिन झूठ और भ्रष्टाचार का सहारा नहीं ले सकता। वह सरस्वती की उपासना करता है, लक्ष्मी के पीछे नहीं भागता। नारायण ब्राह्मणों के तप और त्याग को जानते थे इसलिए ब्राह्मण के पाद प्रहार की परवाह न करते हुए पूछने लगे कि कहीं मेरी कठोर छाती पर आपके कोमल पांव को चोट तो नहीं लगी। लक्ष्मी को पति का

यह अपमान न रूचा तो शाप दे डाला कि मैं कभी ब्राह्मणों के घरों में वास न करूंगी। फिर भी ब्राह्मणों ने लक्ष्मी (प्रकृति) की पूजा न छोड़ी। नारायण (परमात्मा) का संग कभी न छोड़ा। अपने पति नारायण के संग लक्ष्मी (सुख) को भी ब्राह्मण के घर आना ही पड़ा।

जो लोग केवल लक्ष्मी (सुख-संपत्ति) के पीछे भागते हैं और नारायण की परवाह नहीं करते, लक्ष्मी जी उन्हें शाप देकर दूर चली जाती हैं। हमारी संस्कृति का रूप ही लक्ष्मी-नारायण का है। इसके अनुसार लक्ष्मी (अचेतन) के साथ नारायण (चेतन) की भी पूजा की जाती है। श्री राधाकृष्णाभ्यां नम: और उमाशंकराभ्यां नम: इसी के पावन प्रतीक हैं। वर्तमान कालिक व्यक्ति के चरित्र के पतन से प्रकृति (लक्ष्मी) नाराज और विश्व संचालक (नारायण) परेशान होते हैं। इसी कारण त्रस्त जनों के तारक पुराणोक्त ब्राह्मणावतार कल्कि सबका हिसाब लेने वाले हैं।

शासकों की धर्मनिरपेक्षता लोगों के साथ सरासर धोखा है। धर्मनिरपेक्षता का मतलब धर्महीनता नहीं है। ऐसा कौन सा जड़ या चेतन पदार्थ है, जिसका कोई धर्म या गुण न हो। आंख का धर्म देखना है तो औषधि का धर्म रोग का नाश करना है। अपने धर्म या गुण के विना न तो कोई वस्तु कायम रह सकती है

न मनुष्य। धर्मनिरपेक्षता या धर्महीनता वहीं कायम रह सकती है जहां ब्राह्मणों की शक्ति अश्वथामा की मणि के समान छीन ली गयी हो। धर्म या गुण तो वास्तव में मानवमात्र की सांस होती है। सांस ही जीवन है।

ईश्वर की प्रेरणा से धर्म या गुण का पता सर्वप्रथम ब्राह्मणों ने ही लगाया था। स्व0 आचार्य पं0 श्री प्रभाकर मिश्र के अनुसार संविधान निर्माताओं में कोई भी ब्राह्मण सदस्य नियुक्त नहीं था। यही कारण है कि आज हमारे देश में ब्राह्मणों का अपमान और भ्रष्टाचार का बोल-बाला हो रहा है और भ्रष्टाचारी लोग संसद में पहुंचकर देश का जी भर कर शोषण कर रहे हैं।

ब्राह्मणों ने कभी वर्णों में भिन्नता नहीं देखी। विविध प्रकार के कर्मों के लिए वर्णों की व्यवस्था अवश्य की थी। सभी लोग न विद्वान् हो सकते हैं न यज्ञ कर सकते हैं। सभी लोगों को आजीविका की जरूरत थी। अपने-अपने गुणों और कर्मप्रवीणता के आधार पर मनुष्य को वर्ण को चुनने की आजादी दी गई थी। कर्मों का विकेन्द्रीकरण कर दिया गया। जो शिक्षा, उपदेश और अनुसंधान का काम कर सकते हैं, वे ब्राह्मण कहलाते हैं। जो देश की बाहरी और आंतरिक रक्षा कर सकते हैं, वे क्षत्रिय कहे जाते हैं। जो देश का आर्थिक विकास कर सकते हैं, वे वैश्य कहलाते हैं।

कोई भी कर्मविभाग कर्मचारियों के विना नहीं चलता, अतः वे सभी शूद्र या सेवक कहलाते हैं। शूद्र या सेवक सर्वदा अस्पृश्य नहीं, बल्कि अपनी अपवित्रता को हटाने पर वह स्पृश्य हो जाता है, अन्य सामान्य जनों की तरह।

यदि जन्म का ब्राह्मण कर्म भी ब्राह्मण वाला करे तो वह सर्वोच्च ब्राह्मण है। ब्राह्मण के अंदर आज भी ऋषियों का रक्त बहता है। गीता के अनुसार हर कोई ब्राह्मण के घर जन्म नहीं ले सकता। जन्म से ब्राह्मण होना प्रयत्न साध्य नहीं बल्कि अपने कर्म और ईश्वरीय कृपा का फल है। हां, कर्म से अवश्य ब्राह्मण हुआ जा सकता है, लेकिन ऐसे ब्राह्मण को विद्वान् लोग विप्र कहते हैं। विप्र होने का अर्थ श्रेष्ठता और ब्राह्मण के कर्म में आस्था होना है। जो कोई भी गायत्री माता, वेद, सनातन धर्म और सदाचार में विश्वास करता है, विप्र कहलाने योग्य है। ब्राह्मण या विप्र कोई जाति नहीं बल्कि एक संस्कृति, सभ्यता और जीवन दर्शन है। गीता के अनुसार किसी भी व्यक्ति को पवित्र ब्रह्मज्ञान को पाने का अधिकारी है।

मानवधर्म, देश और ब्राह्मणत्व (सदाचार) की रक्षा के लिए शास्त्रों में शस्त्रबल का प्रयोग अनुचित नहीं माना गया है। ब्राह्मण अहिंसा का पक्षधर अवश्य है, परन्तु मानवता के मूल्य पर कदापि नहीं। आततायी या आतंकी को विना विचारे मार देने का

सुझाव हमारे महार्षियों ने दिया है। ब्राह्मण भगवान् का सिर या शरीर का प्रधान अंग है। अगर प्रधान सिर ही चुप बैठ जाए तो बाकी छोटे अंग तो अपने आप नष्ट हो जाएंगे। गौ, ब्राह्मण और मानवता को संकट में देखकर भगवान् परशुराम का परशु चुप न रह सका था। सबके हित के लिए सर्वहितकारी ब्राह्मण के कदम कभी रूक नहीं सकते। वह निरंतर सर्वहितकारी काम करता रहता है। सदा सब की रक्षा के लिए सावधान रहता है।

आजकल दलित के नाम पर वोट तो इकट्ठे किए जाते हैं, लेकिन दलितों के नेता दलितों का कितना भला करते हैं, इसका आम दलित को पता भी नहीं चलता। आम दलित तब तक सबके साथ जुड़ भी नहीं सकता, जब तक वह दलों के दल-दल से बाहर नहीं निकलता। दलित समर्थक दल उसे बाहर निकलने भी नहीं देना चाहते, ताकि उसका दल फलता और फूलता रहे। आज के दिन दलों का मतलब है स्वार्थी। गरीबी जाति नहीं देखती, वह तो किसी को भी अपना शिकार बना सकती है। अत: नीति ऐसी होनी चाहिए जो किसी भी जाति के अनारक्षित गरीब की गरीबी को दूर करने में भी सहायक हो।

ब्राह्मण कोई भी व्यवसाय करे उसको तिलक, शिखा, जनेऊ और संध्या आदि से अपनी पहचान बनाए रखनी चाहिए। वह

ब्राह्मण दहेज के लेन-देन से बचे। भ्रूण हत्या का विरोध होना चाहिए। हम अपने बच्चों में ब्राह्मणत्व के संस्कार डालें। उन्हें ब्राह्मणों का इतिहास बताया जाए। ब्राह्मण बालक व्यावहारिक संस्कृत भाषा के ज्ञान से वंचित न रहें। पूजा-पाठ और यज्ञादि का उन्हें वैज्ञानिक अर्थ आना ही चाहिए। हम उन्हें शास्त्रीय कथाओं का भावार्थ बताएं। हमें अपने निकटतम स्थान के ब्राह्मण सम्मेलन में अवश्य भाग लेना चाहिए। ब्राह्मणों की उन्नति में सहयोग देना हमारा परम कर्त्तव्य है। स्थानीय ब्राह्मण सभा की बैठकों के लिए एक कमरे का निर्माण अवश्य होना चाहिए। सभा के क्रियाकलापों में सभी सनातनप्रेमियों को भाग लेना चाहिए।

आज के व्यवस्तता भरे जीवन में अपनी पवित्र परंपराओं के निर्वाह के लिए किसके पास समय है। हमारे समीप के मंदिरों में भंडारा, यज्ञ होते रहते हैं। उसमें ब्राह्मण देवयज्ञ का काम, क्षत्रिय अनुशासन रखने का काम, व्यवसायी धन संग्रह का काम और सेवक सबके साथ सहयोग का काम कर सकते हैं। यह सब कार्य भेद यज्ञ की उचित व्यवस्था के लिए हैं। उचित व्यवस्था से ही सृष्टि रूप यज्ञ संपन्न होगा, हम यह मानकर चलें। भगवान् वर्णों के निर्माता भी हैं तो अनिर्माता भी। निर्माता इस अर्थ में कि संसार यज्ञ में उचित व्यवस्था हो, अनिर्माता इस अर्थ में कि उसमें किसी प्रकार का

भेद-भाव न हो। शूद्र शब्द का अर्थ निकृष्ट या त्याज्य नहीं होता। कोई भी आदमी कभी भी देशकालानुसार अपवित्र हो सकता है। अपवित्र या कदाचारी ही शूद्र है। स्नानादि स्वच्छता कर लेने पर वह पवित्र या अन्य वर्णों के समकक्ष हो जाता है। शूद्र का प्रयोजन है यज्ञ में सहायक होना। सहायक भगवान् या संसार का चरण है। चरण न हों तो भगवान् चलेंगे कैसे? सहायक को सहायता में भागना-दौड़ना पड़ता है। सेवक प्रभु के आदरणीय चरण हैं। भगवान् की पूजा में चरणामृतपान का अभिप्राय ही यह है कि हम सेवकों या श्रमिकों की अतुलनीय सेवा के लिए उनके तहे दिल से शुक्र गुजार हों। हर जनसेवक भगवान् का चरण है। भगवान् के चरणों में रहना सौभाग्य की बात है। भगवान् के सिर पर तो केवल असुर चढ़ते थे और उसका फल भी भोगते थे। ब्राह्मण या श्रेष्ठ लोग तो भगवान् के चरणों के लोभी होते हैं। भगवान् के चरणों में ही सच्चा सुख है। सेवा में सुख है। पवित्र भाव से की गई सेवा से प्रभु अत्यंत प्रसन्न होते हैं। भगवत् सेवा जिस किसी रूप में भी मिल जाए, अवसर को चूकना नहीं चाहिए। सबसे बड़ी अपवित्रता तो मानव-मानव के बीच का भेद-भाव है, जो कि किसी भी सूरत में होना नहीं चाहिए। यही संसार रूपी भगवान् जगदीश की सबसे बड़ी सेवा है।

जन्म से तो ब्राह्मण भी शूद्र है। गर्भादि से लेकर यज्ञोपवीत तक के संस्कारों को करने से वह द्विज बनता है। वेदाभ्यास करने से वह विप्र हो जाता है। ब्रह्म को जानने की योग्यता को पा लेने पर वह ब्राह्मण होता है। अपने कर्मों की उच्चता के कारण ब्राह्मण 'ब्राह्मण' कहलाता रहा है। ब्राह्मण के ग्यारह लक्षण बताए गए हैं- क्षमा, दया, इंद्रियसंयम, दान, सत्य, शौच या पवित्रता, ईश्वरस्मरण, सत्कर्म, विद्या, विज्ञान और आस्तिकता या ईश्वर में विश्वास। इन लक्षणों का पालन करना ही ब्राह्मणत्व है।

ब्राह्मण सरल स्वभाव वाला और अंहकार रहित होता है। सब जीवों पर दया करने से उसकी बुद्धि पवित्र रहती है। ब्राह्मणों तथा अन्य मनुष्यों के जीवन का प्रयोजन तपस्या और धर्मानुष्ठानादि करके मोक्ष को प्राप्त करना है। अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ करना और करवाना तथा दान लेना और देना ब्राह्मणों के कर्त्तव्य बताए गए हैं। सत्यवचन, पवित्रता, विद्यानुराग और नित्यकर्म से ब्राह्मण पहचाना जाता है। ब्राह्मणरूप वृक्ष की जड़ उसकी संध्या उपासना है। संध्या या उपासना की रक्षा सबसे जरूरी है। जिस देश में ब्राह्मणों को सताया जाता है वह देश नष्ट हो जाता है। जिस देश में ब्राह्मण का ज्ञान और क्षत्रिय का तेज़ साथ-साथ मिलकर काम करते हैं वह देश सदा फलता-फूलता रहता है।

ब्राह्मणों के लिए हर दिन पांच यज्ञ करने जरूरी बताए गए हैं-वेदाध्ययन, हवन, जीव-जन्तुओं को अन्नदान, अतिथि सत्कार और पितरों का तर्पण। विद्या को बेचने वाले ब्राह्मण की निंदा की गई है। विचारकों के अनुसार लाखों जीवयोनियां भोगने के बाद उसका मनुष्य के घर में जन्म होता है। चोरी और व्यभिचार आदि पापों से बचा हुआ मनुष्य अगला जन्म भगवत् प्रेमी के घर में पाता है। न्याय और नीति से व्यापार करने वाला मनुष्य अगले जन्म में सत्कर्मी माता के गर्भ से जन्म लेता है। क्षत्रिय धर्म का सही तरह से पालन करने वाला ब्रह्मज्ञानी परिवार का सदस्य बनता है। ब्रह्मज्ञानी या ब्राह्मण अपने आचरण से सदा परमात्मा के निकट रहता है। ब्रह्मज्ञान की ज्योति जलाए रखना ब्राह्मण का पहला कर्त्तव्य है।

ब्रह्मा जी के मुख से जन्म लेने के कारण पहले सारा संसार ब्राह्मण ही था। बाद में आवश्यकतानुसार अलग-अलग कर्म अपनाने के कारण एक वर्ण से अनेक वर्ण बन गए। ब्राह्मण कर्म को त्याग कर जो लोग विषयानुरागी, तीक्ष्ण स्वभाव वाले क्रोधी और साहस के कामों से जुड़ गए तथा लाल रंग के शरीर वाले हो गए, वे ब्राह्मण क्षत्रिय कहलाए। अंग्रेज लोग संभवत: उन्हीं लोगों मे से हैं। जिन लोगों ने खेती को अपनाया तथा शरीर से पीले पड़ गए,

वे ब्राह्मण वैश्य कहलाए। जो पवित्रता और सदाचार को छोड़कर हिंसक और असत्यवादी होकर शरीर से काले हो गए, वे ब्राह्मण शूद्र हो गए। ब्राह्मण से अलग हुए वर्णों के लिए भी धार्मिक कार्यों का निषेध नहीं किया गया है। विशेष लोभ के कारण शूद्र वर्ण का वेदसम्मत ज्ञान अवश्य लुप्त हो गया। ब्राह्मण के कर्म से हीन निंदित कर्म करने वाला ब्राह्मण शूद्र के समान होता है। अपने काम को भगवदर्पण करके जीने वाला किसी भी वर्ण का आदमी भगवान् को प्राप्त करता है।

जिस आदमी का जीवन धर्म और भगवान् के काम में लगता है वह ब्राह्मण है। ब्राह्मण न किसी से डरता है न किसी को डराता है। उसका मुख्य धन उसका शुभ आचरण है। कोई भी वर्ण केवल उसके रंग से नहीं पहचाना जाता। ब्राह्मण में ब्रह्मतेज होता है। ब्राह्मण का खजाना उसकी ब्रह्म विद्या है। मनुस्मृति के अनुसार भारत विविध ज्ञान-विज्ञानों, कला-कौशलों और सुंदर आचरणों वाला देश है। यहां के ब्राह्मण शिक्षक समस्त संसार के शिक्षक हैं। केवल अध्ययनकर्ता और प्रयोग शील व्यक्ति ही ब्राह्मण या विप्र कहलाता है।

वेदादि शास्त्रों में बताए गए शुभ कर्मों को आचरण में लाना अनिवार्य है। अगर ऐसा नहीं होगा तो अन्य वर्णों के लोग

भी अपना आचरण छोड़ देंगे। बड़ा भाई पथभ्रष्ट हो जाएगा तो छोटे भी वैसा ही करेंगे।

अथर्ववेद में बताया गया है कि हे ब्राह्मण, तू श्रेष्ठ बनने की इच्छा रखने वालों को अपना ज्ञान देकर समृद्ध बना दे। उनको आयु, प्राणशक्ति, संतान, पशु और यश प्रदान कर। क्योंकि तेरे शुभ आचरण और आशीर्वाद से ही यह सब कुछ होगा। ज्ञानदान ब्राह्मण का ही कर्त्तव्य है। तेरे दिए ज्ञान से ही वे भौतिक और आत्मिक रूप से संपन्न होंगे। देश को जागृत रखने का काम ब्राह्मण का है।

ब्राह्मण सब जीवों का मित्र और हितैषी है। वह यज्ञ या परोपकार के माध्यम से सब का भला करता है। संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु सद्बुद्धि है और ब्राह्मण उसी का उपासक होता है। गायत्री मंत्र सद्बुद्धि की अक्षरमूर्ति है। शुद्धात्मा पंडित को कोई भय नहीं सताता। पुरोहित अपनी जिह्वा और मन को वश में रखता है। वह यजमान से यथाश्रद्धा प्राप्त दक्षिणा से प्रसन्न रहता है।

ऋग्वेद के अनुसार ब्राह्मण वह है जो अपने ज्ञान से दूसरों को सन्मार्ग पर लाता है। वह समस्त प्राणियों के अंदर प्रेम का भाव भर देता है। धर्म का उपदेश करने वाला ब्राह्मण प्रशंसनीय होता है। ब्राह्मण द्वारा अपने शुभ ज्ञान को आचरण में लाना जरूरी

है। ज्ञानी आचरणवान् ब्राह्मण वशिष्ठ के सामने अपार सैन्य बल वाला राजा विश्वामित्र हार गया था। विश्वामित्र ने स्वीकार किया था कि अकेली भौतिक या संसारिक शक्ति को धिक्कार है। असली बल तो ब्रह्मबल ही है। इसी बल के आधार पर वे दूसरी सृष्टि की रचना में सक्षम हो गए थे। ब्रह्मबली श्री परशुराम ने हिंसक और अत्याचारी राजाओं का सफाया किया था। ब्रह्मबलशालिनी देवी सावित्री अपने पति के प्राणों को यमराज से वापिस लेकर आयी थी। महामंत्र गायत्री ब्रह्मतेज को देने वाला है। यही मंत्र हमें आयु, प्राणशक्ति, संतान, पशु, यश और धन प्रदान करता है। वेदमाता गायत्री देवी की उपासना हमें ब्रह्मशक्ति प्रदान करती है जो सभी कामनाओं की पूरक है। अन्य देवता हमें अन्य सब कुछ दे सकते हैं, परन्तु ब्रह्मशक्ति नहीं। भगवान् राम और कृष्ण भी गायत्री उपासक थे। यज्ञोपवीतधारकों के लिए गायत्री का जप अनिवार्य है।

गुरू द्रोणाचार्य कहते हैं कि मैं चारों वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण भी हूं और धनुषधारी क्षत्रिय भी। जो पापी लोग ज्ञान से नहीं मानते, उनको मैं शस्त्रों से मनवाता हूं। संसार में सदाचार को कायम रखना ब्राह्मण का ही कर्त्तव्य है।

सर्वव्यापी परमात्मा यज्ञ या परोपकार में स्थित रहता है। यज्ञ के माध्यम से मानव मनस्वी बनता है। इस प्रकार का व्यक्ति

सौ हाथों से कमाता है और उसे बांटता हजार हाथों से है। इससे समाज में संतुलन बनता है और आध्यात्मिक समाजवाद का प्रचार और प्रसार होता है। सख्त कानून की जरूरत नहीं पड़ती। दान करने से जरूरत से ज्यादा धन इक्कठा करने की प्रवृत्ति समाप्त होती है।

महर्षि वशिष्ठ के अनुसार हर एक प्राणी का हर दूसरे प्राणी से कोई न कोई संबंध जरूर होता है। देवता, मनुष्य और राक्षस तीनों मनु की संतानें हैं। मनुष्य ही उच्च विचारों से देवता तथा निकृष्ट विचारों से राक्षस कहलाता है। विज्ञान ने भले ही हमें अपार सुख दिए हैं, परन्तु 'वसुधैव कुटुंबकम्' की विचारधारा की कमी के कारण मनुष्य समाज परमाणु बम के ऊपर बैठा है। विश्व मानवता का बचाव केवल ब्रह्मज्ञान से ही हो सकता है।

संस्कार यज्ञों के माध्यम से हमें आकर्षक रूप देते हैं। सुधार ही संस्कार है। ये हमारे दोषों को दूर करके तथा नए गुणों का विकास करके हमारा सुधार करते हैं। संस्कार हमारे जीवन व्यवहार को उत्कृष्ट बनाते हैं तथा सही और गलत का निर्णय लेने में हमारी सहायता करते हैं। हमारे चरित्र या आचरण समूह रूपी वृक्ष के बीज हमारे संस्कार हैं।

शूद्रत्व बुरा नहीं, शूद्रत्व के प्रति हमारी सोच बुरी है। विश्व का आधार स्तंभ तथा ईश्वर का पांव होने के नाते वह आदरणीय है। वह अपने शारीरिक श्रम के रूप में सारे विश्व या भगवान् की सेवा में रत रहता है। दूसरी ओर हम अपनी पूजा में भगवान् के आदरणीय चरणों की पूजा करते हैं। यह विरोधाभास नहीं होना चाहिए। जो व्यक्ति भगवान् के चरणों को कष्ट पहुंचाता है, उसके परिणाम का अनुभव हम स्वयं कर सकते हैं। भगवान् के इस चरण को हम कुछ और न दे सकें तो कम से कम उसका सही मेहनताना तो उसे मिलना ही चाहिए। भगवच्चरण की यही सच्ची पूजा होगी।

कहते हैं एक बारहसिंगे को अपने सुन्दर सींगों पर अभिमान हो गया, परन्तु वह अपने भद्दे पैरों को देखकर ईश्वर की आलोचना करने लगा। एक दिन घने जंगल में एक शेर द्वारा पीछा किए जाने पर अपनी जान बचाने के लिए तेज भागने लगा। कितना भागता, झाड़ियों में सुंदर सींग फंस गये। अब अकल आई, भद्दे पैर तो जी जान से काम आ रहे थे, पर सुंदर सींगों को कैसे निकाले। हमारा भी वही हाल है। अपने भौतिक सौंदर्य पर तो हम मोहित हैं, लेकिन जिस श्रम के सहारे वह खड़ा है, उसकी आलोचना करने से हम रूकते नहीं। ब्राह्मणत्व या श्रेष्ठता का सबसे बड़ा गुण

यही है कि वह शारीरिक श्रम को भी उतना ही महत्व देता है, जितना बौद्धिक श्रम को। अत: ब्राह्मणत्व की साधना में शारीरिक श्रम को महत्व देना भी अनिवार्य है।

गर्भस्थ बालक पर उसकी माँ के सत्संकल्प प्रभाव डालते हैं। प्रह्लाद को उच्च संस्कार उसकी मां कयाधू से मिले थे। कयाधू को संस्कार नारद जी से मिले थे। संस्कारों की परंपरा इसी तरह आगे बढ़ती है। रानी मदालसा ने अपने तीन पुत्रों को ब्रह्मज्ञानी बनाकर चौथे पुत्र रिपुदमन को पवित्र राजधर्म की शिक्षा दी थी। कारागार में मां देवकी के सत्संकल्प के कारण ही उनके गर्भ से पापनाशक पुत्र कृष्ण का जन्म हुआ था। मां सुनीति ने ध्रुव को अपने उत्तम संस्कार दिए थे।

संस्कार संपन्न करने से शरीर और मन दोनों पवित्र होते हैं। इससे मनुष्य का जीवन परिष्कृत होता है। आजकल नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, उपनयन और विवाह ही मुख्य रूप से करवाए जाते हैं। संस्कारों में घृत दीपक जहां 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का संदेश वाहक है, वहां वह अपने जीवन की ऊर्जा को कुछ बांटने के लिए भी कहता है। यज्ञोपवीत के नौ धागे देवताओं के नौ गुणों ब्रह्मज्ञान, तेजस्विता, धैर्य, प्रसन्नता, स्नेह, प्रजापालन, पवित्रता, प्राणशक्ति और संपूर्ण स्वास्थ्य के प्रतीक हैं।

देवपूजन, वृद्धिश्राद्ध, वरपूजन, गोत्रोच्चार, कन्यादान, पाणिग्रहण, अग्नि साक्षित्व, लाजाहोम, सप्तपदी और अग्नि परिक्रमा आदि करने से विवाह संस्कार संपन्न होता है। वधू प्रवेश का मतलब है लक्ष्मीरूप गृहस्वामिनी का घर में प्रवेश। यह एक प्रकार का धार्मिक संस्कार है।

जन्म से सभी बालक संस्कार रहित शूद्र (शरीर मात्र) होते हैं। प्राचीन काल के गुरुकुलों में बालकों को उनकी योग्यता और प्रवृत्ति के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य वर्ण में दीक्षित किया जाता था। आजकल व्यक्ति की प्रवृत्ति की अनदेखी से समाज गिर रहा है। विद्या रूपी जन्म पा लेने पर ये तीनों वर्ण द्विज कहलाते हैं। जिनको विद्या प्राप्ति का अवसर नहीं मिल पाता, वे केवल शारीरिक मेहनत ही कर सकते हैं। फिर भी वे गीता के अनुसार अनौपचारिक रूप से ब्रह्मज्ञान के अधिकारी हैं। प्राचीनकाल में अलग-अलग किस्म के काम करने पर भी चारों वर्णों में संभवत: छुआछूत नहीं थी। वर्ण का मतलब है स्वेच्छा से अपने योग्य काम का चुनाव करना। धर्माचरण करने से छोटे वर्ण भी उन्नत या श्रेष्ठ हो जाते थे। अधर्मपूर्वक जीवन जीने वाले लोगों को राजनियमानुसार उच्च वर्ण के व्यक्ति को भी निम्न वर्ण (श्रेणी) में डाल दिया जाता था। अपने धर्म या कर्त्तव्य को ईश्वर को सौंपना सबसे उत्तम साधन

है। यही साधना का सार है। जीवनोपयोगी कोई भी कर्म अपने आप में बुरा नहीं, कर्म के प्रति सोच बुरी हो सकती है।
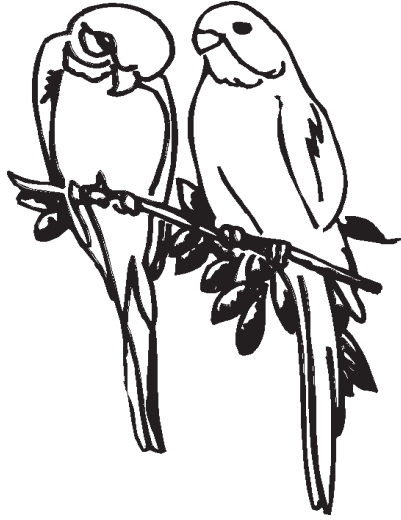
भारतीय स्तर पर ब्राह्मणत्वसाधकों की परंपरा

ब्राह्मणत्व या श्रेष्ठता का साधक विश्व के किसी भी हिस्से का हो, वह एक ही महान् विचारधारा का पोषक है। वह अपनी पावन परंपरा के प्रति समर्पित है। उसकी जीवन शैली एक महाव्रत है, जिसका वह येन-केन प्रकारेण पालन करने से नहीं चूकता। वह अध्ययनशील, ब्रह्मवेत्ता और वैज्ञानिक होता है। जीवन की हर गतिविधि को परोपकार में ढालने में निपुण होता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों के ब्राह्मणों के विभिन्न गोत्र और परंपराएं रही हैं

फिर भी वे सब एक ही महामंजिल के यात्री हैं। वे एक-दूसरे के श्रेष्ठ गुणों के अनुसरण में अग्रणी रहते हैं।

भारतीय स्तर पर ब्राह्मणत्व साधकों ने उल्लेखनीय काम किए हैं। कश्यप ऋषि का कार्यक्षेत्र काश्मीर होने से उन्हीं के नाम पर इस राज्य का नाम पड़ा था। शर्मा ब्राह्मण अपने आपको कान्यकुब्जमूल का बताते हैं। ये देहरादून में भी मिलते हैं। अग्रेंजों की फौज़ में एक ब्राह्मण बटालियन भी होती थी। ये खूंखार, धर्म परायण और जुझारू किस्म के थे। ये' मारो और मरो' के आधार पर काम करते थे। भगवान् शंकराचार्य के संगठन में भी संभवत: इनकी एक फौज़ का होना बताया जाता है।

सारस्वत ब्राह्मणों के वंशपूर्वज दधीचि बताए जाते हैं। बंगदेश से लेकर अमरनाथ तक का इलाका गौड़ देश बताया गया है। कश्मीरी ब्राह्मणों का कुलपद पंडित कहा जाता है। पुराणों में ब्राह्मणों के चौरासी गोत्र बताए गए हैं। वेदों को पढ़ने वाले द्विवेदी या दूबे कहलाते हैं। त्रिपाठी का दूसरा नाम तिवारी है। वेद के अध्यापक पांडे, पाठक, भट्टाचार्य और उपाध्याय कहे जाते हैं। निर्मल गुणों और कार्यों में निपुण तथा सबके साथ मिलकर रहने वाले मिश्र कहलाते हैं। जो जिस ऋषि के वंश में पैदा हुआ उसी ऋषि के नाम पर उसका गोत्र आरंभ हुआ। ब्रह्म की पहली संतान

होने के नाते ब्राह्मण में ब्रह्म के लक्षण औरों से अधिक होने ही चाहिए। कुशनामक राजा की घृताची नामक पत्नी से सौ अतिरूपवती कन्याएं पैदा हुई थी। पक्षाघात के कारण वे कुब्जाएं हो गई थी। उनका विवाह महर्षि ब्रह्मदत्त से हुआ था, जिनके स्पर्श से वे कन्याएं कुब्जत्व से मुक्त होकर दिव्य स्वरूप वाली हो गई। उनका निवास स्थान कान्यकुब्ज कन्नौज कहलाया तथा वहां के ब्राह्मण कान्यकुब्ज कहलाने लगे। कन्नौज को उदीच्य देश और ब्राह्मणों का आदिस्थान भी कहते हैं।

शांडिल्य गोत्री ब्राह्मणों का मानना है कि उनकी उत्पत्ति महर्षि कश्यप के अग्निकुंड से उत्पन्न हुए हुताशन के नाम पर हुई है। उपमन्यु गोत्रजों को वशिष्ठ की संतान बताया गया है। भरद्वाज ऋषि की उत्पत्ति बृहस्पति से हुई मानी जाती है। द्रोणाचार्य का पौत्र इस वंश का आधार रहा है। भारद्वाज ऋषि के शिष्य तपोधान ने चित्रकूट की क्षत्रिय राजकन्या से विवाह किया था। ब्राह्मणों से अग्निहोत्री पद प्राप्त करने पर उन्हीं से यह गोत्र आरंभ हुआ था।

धनंजय गोत्री विश्वामित्र के वंशज हैं। विश्वामित्र को कौशिक भी कहते हैं। ऋग्वेदीय गोत्रों का उपवेद आयुर्वेद, शाखा आश्वलायन, सूत्र आश्वलायन, शिखा और पाद वाम तथा

देवता ब्रह्मा हैं। यजुर्वेदीय गोत्रों का उपवेद धनुर्वेद, शाखा माध्यन्दिनी, सूत्र कात्यायन, शिखा और पाद दक्षिण तथा देवता शिव हैं।

सामवेदीय गोत्रों का उपवेद गांधर्व, शाखा कौथुमी, सूत्र गोभिल, शिखा और पाद वाम तथा देवता विष्णु हैं।

मानवसृष्टि के आदिपुरुष महर्षि कश्यप हैं। जिनका गोत्र ज्ञात न हो उनका गोत्र कश्यप होता है। वंश के आदि पुरुष को गोत्र कहते हैं। गोत्र, प्रवर, शाखा और सूत्रादि के साथ संकल्पोच्चारण तथा ज्ञान के विना कोई भी धार्मिक काम सफल नहीं हो सकता।

सामवेद का अध्ययन करने वाले पांच वंश है - कश्यप, काश्यप, वत्स, शांडिल्य और धनंजय। शेष दस वंश यजुर्वेद के हैं।

सूत्रों के तीन भाग हैं। श्रौतसूत्रों में पुरोहितों के लिए यज्ञादि कर्मकांड का विधान है। गृह्य सूत्रों में यजमानों के लिए स्वयं यज्ञ करने का विधान है। धर्मसूत्रों में धर्म - नीति और सदाचार का विधान है।

हर वेद का अनुयायी किसी खास देवता का उपासक होता था। वही देवता उस गोत्र वालों के लिए मुख्य माना जाने लगा। ऋग्वेदियों के मुख्य उपास्य इन्द्र देवता हैं। ब्रह्मा जी से उत्पन्न

होने के कारण ब्राह्मणों के कुल देवता ब्रह्मा हैं।

दक्षिण शिखा वाले दाहिनी ओर से शिखा में गांठ लगाते हैं। दक्षिण पाद वाले पहले दाहिना पैर धोते या धुलाते हैं। वाम पाद वाले इससे विपरीत विधि करते हैं। दस यजुर्वेदीय गोत्र क्रमशः भारद्वाज, सां., कात्यायन, उपमन्यु, गौतम, गर्ग, भरद्वाज, कविस्त, वशिष्ठ और पाराशर हैं। विध्यांचल से दक्षिण तक कर्नाटक तैलंग, द्रविड़, महाराष्ट्र और गुजरात के निवासी ब्राह्मण पंचद्रविड़ कहलाते हैं। दक्षिण भारत के ब्राह्मण शैव और वैष्णव दो संप्रदायों में विभक्त हैं। ये दोनों ही शाकाहारी हैं।

गुजराती औदीच्य ब्राह्मण राजस्थान में अधिक हैं। ये राजा द्वारा दिए गए दान को विष के समान त्याज्य समझते हैं। नागर ब्राह्मण स्पृश्यास्पृश्य नियमों का दृढ़ता से पालन करते हैं। पुष्करणे ब्राह्मण पौहकरू (राजस्थान) से संबन्ध रखते हैं। ये दान देते हैं, लेकिन लेते नहीं।

महाभारत के अनुसार चार वर्णों से अनेक जातियों का निर्माण हुआ। आजकल ब्राह्मण जाति के अंदर ही चार वर्ण अपने गुण और कर्म के अनुसार समाए हुए हैं। एक प्रकार से ब्राह्मण चारों वर्णों का प्रतिनिधित्व निभा रहे हैं। उनमें वैज्ञानिक, सैनिक, व्यवसायी और श्रमिक चारों मिलते हैं। ब्राह्मण जाति के हर परिवार

में ब्रह्म से तादात्मय स्थापित करने के लिए आज भी उपासना के लिए पूर्ववत् समय निकाला जाता है। इष्ट देव पूजन, संध्यावंदन, तुलसी चौरा पर दीपक जलाना, पूजन कक्ष में अगरबत्ती जलाना तथा मुख्य संस्कारविधान आदि सब बराबर किए जाते हैं।

महर्षियों ने अपने शरीर के अंदर ही ब्रह्म की खोज की थी। ब्रह्मज्ञान की यही विरासत ब्राह्मणों की मुख्य धरोहर है। ब्राह्मणों द्वारा खोजा गया ब्रह्मज्ञान मनुष्य जाति को 'वसुधैव कुटुंबकम्' की ओर ले जाता है। इस समय हमारे देश में लगभग दो करोड़ ब्राह्मण हैं। भगवान् मनु के अनुसार व्यक्ति को अपने पिता-पितामहादि द्वारा अपनाए गए सन्मार्ग पर चलना ही चाहिए। शेष सारा संसार सर्वकल्याणकारी ब्राह्मण का अनुसरण करता है।

ब्राह्मण स्वभावत: समाज का मुखिया होता है। भगवान् परशुराम ने विदेशी आक्रामक सहस्त्रार्जुन को पदच्युत करके सदाचारी ब्राह्मणों को राज्यासन पर बैठाया था। वस्तुत: ब्राह्मणत्व एक दार्शनिक विचार धारा है। इसी विचारधारा से विश्व के समस्त दर्शनों को प्रेरणाएं मिली थी। आज के स्वार्थपूर्ण राजनीतिक कुचक्रों से बचकर ब्राह्मणों को अपने लिए आर्थिक आधार खोजने की एक बड़ी जरूरत है। उनको अपना अध्ययन स्तर भी ऊंचा और व्यापक करने की जरूरत है। आत्मबल और ब्रह्मबल से जीवन के हर क्षेत्र

में जीत हासिल करने की जरूरत है। इसके लिए चुनावों में ब्राह्मण सहित सर्वहितकारी प्रत्याशियों को जिताना होगा। उनमें से भी श्रेष्ठतम को आगे लाना होगा। परोपकार के प्रतीक कर्मकांड को लोकप्रिय और सरल बनाने की जरूरत है।

चरित्रनिर्मात्री संस्कृत भाषा का ज्ञान छोटे-बड़े सब तक जाना चाहिए। दहेज पर जीने वाले की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह नष्ट हो जाता है। सर्वहितार्थ सामूहिक उपनयन, विवाह, टेक्निकल और मेडिकल एजुकेशन, का प्रबन्ध करना जरूरी है। ब्राह्मण वर्ग दलित (पीड़ित) हुआ जा रहा है। भ्रष्ट नेता ब्राह्मणों को आपस में लड़ाकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। भगवान् परशुराम की हम संतानों को दुराचार का सफाया करने के लिए अपनी कमर कसने की जरूरत है।

ब्राह्मण धरती का देवता है। ब्राह्मणों को मुख कहने का अभिप्राय है उसमें ज्ञानेन्द्रिय जन्य ज्ञान का अधिक होना। ब्राह्मण अगर अपनी पवित्र विचारधारा के विपरीत चलने लग पड़े तो उसका दुष्परिणाम सारे समाज को भोगना पड़ता है। वह समाज का मस्तिष्क और आंख है। चरित्र उसका धन है। ब्राह्मण समाजरूपी शरीर (भगवान्) का अंगरक्षक है। वह उसके अन्दर हानिकारक तत्त्वों को घुसने नहीं देता। वह समाज द्वारा दी गई दान दक्षिणा

में अपना गुजारा बहुत कम खर्चे में करके शेष यज्ञादि के रूप में समाज को लौटा देता है। ब्राह्मण न केवल उपयोगी प्रवचनों द्वारा बल्कि उपयोगी लेखन द्वारा भी समाज का भला करता है। देने वाला देवता कहलाता है अत: ब्राह्मण भी देवता है।

उत्तम चरित्र का निर्माण केवल भाषणों से नहीं, बल्कि स्वयं आदर्श पेश करके होता है। ऋषि अपने उपदेशों से अधिक स्वयं अनुकरणीय आदर्श पेश करते थे। धार्मिक नेता केवल चरित्रवान् आदमी ही हो सकता है। महात्मा बुद्ध के अनुसार जटा, गोत्र और जाति से कोई ब्राह्मण नहीं हो सकता, बल्कि सत्य और धर्म को पालन करने वाला व्यक्ति ही ब्राह्मण हो सकता है। वह पानी में कमल की तरह सुखों से कभी लिप्त नहीं होता।

सद्‌बुद्धि के साथ काम करने वाला दुनिया का हर वैज्ञानिक नि:संदेह एक ब्राह्मण है। संसार का सारा विकास ब्राह्मणों के कुशल हाथों से हो रहा है। वे संसार को नये विचार, दिशा और दृष्टि देते हैं। सारी नई खोजें सात्विक परोपकारी ब्राह्मण कर रहें हैं, जबकि उसका नियंत्रण पथ भ्रष्ट राजनेताओं के हाथों में होता है। यह लगाम मानव धर्मविदों के हाथों में होनी चाहिए, अधर्मियों के नहीं। समस्त प्राणियों को अभयदान देने वाला व्यक्ति सभी यज्ञों का कर्ता हो जाता है और स्वयं भी निर्भय हो जाता है। अभय

अवस्था को प्राप्त एक ऋषि का कथन है कि वह जहां भी जाता है वहां से सभी अत्याचारी खुद भाग जाते हैं।

ब्राह्मण चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय का स्नातक था। मगध नरेश महानंद का सेनापति शकटार अपने राजा के यहां भोज के लिए निमंत्रणार्थ ब्राह्मणों की खोज में निकला था। उसने बुद्धिमान् चाणक्य को भी भोज के लिए आमंत्रित किया। चाणक्य को मानो अंधे को दो आंखें मिल गई। वह स्वयं चाहता था कि वह महानंद को समझाए कि वह विलासिता छोड़ कर यूनानी आक्रमणकारी सिकंदर से भारत भूमि की सावधानी से रक्षा करे। महानंद एक कुरूप ब्राह्मण को पंगत में देखकर क्रोध से भड़क उठा और उसे वहां से बाहर करने का आदेश दे डाला। शकटार भी मन से यही चाहता था कि यह अपमानित विद्वान् ब्राह्मण महानंद के अहंकार को ठिकाने लगाए। चाणक्य ने नंदवंश के नाश की प्रतिज्ञा कर ली। मुरा नाम की एक सुंदरी महानंद से अपमानित होकर एक जंगल में दिन बिता रही थी। अचानक उसका मिलन आचार्य चाणक्य से हुआ। चाणक्य ने मुरा के पुत्र चन्द्रगुप्त में अपनी मां के अपमान के बदले की आग भांप ली थी। अत: उसे अपना शिष्य बना लिया।

महानंद से सताया शकटार स्वयं भी उन दोनों से मिल गया। वह आचार्य की पैनी और सर्वकल्याणकारी बुद्धि से पहले

ही परिचित था। चंद्रगुप्त ने शकटार से युद्धकला सीखी और महानंद की सेना में भर्ती होकर वहां अप्रसन्न सैनिकों को बागी बनाकर स्वयं उनके नेतृत्व में सिकंदर का सामना करने निकल पड़ा। सिकंदर यूनान को भागते हुए रास्ते में ही मर गया। भारतीय वीरता से प्रभावित होकर सिकंदर के सेनापति सेल्युकस ने अपनी बेटी हेलना का विवाह श्रेष्ठ वीर चंद्रगुप्त से कर दिया।

चंद्रगुप्त ने महानंद को गिरफ्तार करके आचार्य के कदमों में डाल दिया। चाणक्य ने उसका सिर उड़ा देने का आदेश दिया। इस प्रकार मगध के आसन पर चंद्रगुप्त को बैठा कर अपने जीवन का कल्याणकारी संकल्प पूरा किया। आचार्य चाणक्य प्रधानमंत्री बन गए। उस समय गुप्त साम्राज्य की सीमाएं अफगानिस्तान तक फैली हुई थी। चाणक्य कृत कौटिल्य अर्थशास्त्र में राज्य संचालन की विधि का मननीय वर्णन है। हर ब्राह्मण चाणक्य की तरह योग्यता वाले व्यक्ति का सम्मान करता है। चाहे वह किसी भी जाति या वर्ग का क्यों न हो। योग्यता को माप कर ही व्यक्ति को सम्माननीय पद दिया जाना चाहिए। भ्रष्ट राजनीतिक दलों द्वारा जनता पर लादे गए उम्मीदवार को नहीं। दलों का लक्ष्य वोट हथियाना हो गया है, मतदाताओं का कल्याण नहीं।

हमारे दैनिक व्यवहार में ब्राह्मणत्व की साधना

भगवती तारा माता तारक हैं, हमें कष्टों से उबारती हैं। वाणी या विद्या देती हैं। ये संसार या मोह माया से तारती या पार करवाती हैं। हमारे लिए उपयोग की हर वस्तु प्रदान करती हैं। इनकी पूजा वैदिक और तांत्रिक दोनों विधियों से संपन्न होती है। चैत्र शु. नवमी की रात्रि को उपवास किया जाता है। महर्षि वशिष्ठ ने उनकी उपासना सहरसा (बिहार) में की थी। वहां ये त्रिमूर्ति के रूप में स्थापित हैं। हमारे यहां समीप में तारा देवी में माँ का

आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।

सादे जीवन और उच्च विचार का प्रतीक बाबा भल्खु चायल के समीप झाजा गाँव का निवासी था। पुराने लोग बताते हैं कि वह सिर में जुओं को उनके खाने के लिए शक्कर डालता था। यह बात सच हो न हो पर वह अहिंसा के मार्ग पर जरूर चलता था। कहते हैं कि अगर बंदर उसके खेत में आ जाते थे तो वह उन्हें औरों की तरह भगाता नहीं था, बल्कि चुप बैठा रहता था। 18वीं सदी के अंत में इसी अनपढ़ आदमी ने कालका-शिमला रेलवे लाइन का सर्वे विना किसी वैज्ञानिक यंत्र के केवल अपनी आंतरिक शक्ति और लाठी के सहारे से किया था। अंग्रेज इंजीनियरों को भी उसकी प्रतिभा को दाद देनी पड़ी थी। विशेषकर बड़ोग की सुरंग का सर्वे तो उसकी प्रतिभा का एक बड़ा निशान है। भल्खू के विशेष अध्ययन के माध्यम से न केवल हम हिमाचल की प्रतिभा का बल्कि भारत की मौलिक वैज्ञानिक थाह पा सकते हैं। कहा जाता है कि यह अपने जीवन के अंत में जगन्नाथ धाम की यात्रा पर गया था, परन्तु वहां से वापिस नहीं लौटा। इस प्रेरक व्यक्तित्व के बारे में अभी तक बहुत कुछ खोजा जाना बाकी है।

सोलन में ठोडो ग्राउंड अपनी उपयोगिता के लिए दूरस्थ देशों तक प्रसिद्ध है। इसका निर्माण बघाट के राजा दुर्गा सिंह

ने आजादी से पहले धनुर्विद्या का खेल खेलने के लिए किया था। वास्तव में ठोडा खेल हमारी सांस्कृतिक विरासत है, जो वैदिक काल से लेकर चली आ रही है। प्राचीन युद्ध कौशल को खेल का रूप दिया जाना कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है। अब तो शायद ही कभी इस मैदान में ठोडा खेला जाता हो, लेकिन जब तक यह मैदान बना रहेगा, हमें वैदिक धनुर्विद्या ठोडा की याद जरूर दिलाता रहेगा। वैदिक परंपरानुसार युद्ध असत्य पर सत्य की विजय के प्रतीक हैं।

अति सभी कामों की बुरी मानी जाती है। हालांकि दान करना अच्छा है, लेकिन अति दान करना बुरा है। दूसरे दान का अभिमान भी बुरा है। राजा बलि ने भगवान् वामन को तीन पग पृथ्वी दान की थी, जिसमें उसका अपना शरीर भी साथ में दान हो गया था। अति करने वाले को भगवान् वचन से बांध लेते हैं अथवा अपने वश में कर लेते हैं। मानवता की सीमा को लांघने का मतलब है दानवता की सीमा में प्रवेश करना। दानवता को बांध लिए जाने पर मानवता की रक्षा और विजय के उल्लास में गिरिपार और कुल्लु आदि क्षेत्रों में बूढ़ी दीवाली मनाई जाती है। यह त्योहार मार्गशीर्ष मास की अमावस्या को मनाया जाता है। गांव के लोग अपने इष्ट देवता के मंदिर में रात के चौथे पहर में इकट्ठे होकर उजाला करते हुए मंदिर की परिक्रमा के साथ बुराई को जोर से ललकारते हैं। बली

का एक अर्थ धनबली अथवा धनाभिमानी होना भी है। पर्व पर बलीराज जलाने का मतलब है दानी होने के अभिमान को जलाना। अति दान में अभिमान होना स्वाभाविक है। उसका राज या शासनप्रणाली ही अभिमान भरी थी, उसको जला दिया जाता है। जनविरोधी नीति वाले राज या शासनप्रणाली को समाप्त करने या जलाने की भी हमारी परंपरा है। प्रह्लादवंशी वह असुर श्रेष्ठ दानी होने से पूजनीय भी है। भगवान् वामन एक व्यक्ति के प्रतीक नहीं बल्कि उपेक्षित गरीब लोगों के प्रतीक हैं। वामन (छोटे) गरीब अथवा भूखे और नंगे उपेक्षित लोग ही शासन को पलटते हैं। बली (मोटे) शासकों को वामन (गरीब बुद्धिमान) तब नजर आते हैं जब उनके सिरों पर उनका पैर (दबाव) पड़ता है और वे पाताल पहुंचा दिए जाते है। वास्तव में उपेक्षित जनता ही वामन भगवान् (जनता जनार्दन) होती है।

देवठन का त्योहार हमारे अंदर के देवत्व को जगाने का प्रतीक है। देवत्व एक महान् गुण है। कुछ देने वाला ही देवता होता है। देवत्व का मतलब है दूसरों के काम आना। जो दूसरों के काम आता है वही देवता है। जब तक हमारे अंदर का देवत्व सोया हुआ रहता है हम दूसरों के काम नहीं आ सकते। देवता की उपासना से हमारे अंदर का देवत्व जाग जाता है। भगवान् नारायण

या विष्णु हमारे लोकपालक देवता हैं। इनकी उपासना का लाभ तभी मिल सकता है जब ये खुद जागे हुए हों। ये देवठन अथवा मार्गशीर्ष शु. एकादशी को जागते हैं तभी इनकी पूजा-अर्चना की जाती है। फिर पूरे छः महीने तक जागे रहते हैं। सूर्य ही विष्णु हैं। जगत् पालक हैं। यही इनका दिन है। दिन में हमें सूर्य की ऊर्जा मिलती है। इस समय सूर्य के झुकाव की दिशा उत्तर होती है। उत्तर की ओर से आने वाली सूर्यकिरणें हमारे अंदर देवत्व अथवा परोपकार करने हेतु जोश भर देती हैं। भगवान् सूर्य की तरह ही हम दूसरों के काम आने लगते हैं। भगवान् सूर्य के प्रति जितनी हमारी श्रद्धा होगी उतना ही देवत्व हमें प्राप्त होगा।

पवित्र गंगाजल के छूने मात्र से हमारे सारे पाप अथवा मन पर पड़े अपराधों के संस्कार दूर हो जाते हैं। सारी अपवित्रताएं नष्ट हो जाती हैं। केवल पूजा में ही नही संध्या में भी इसका नित्य प्रयोग लोक और परलोक का सुख देता है। मां गंगा साक्षात् महाशक्ति हैं। दर्शन मात्र से मां गंगा का संपूर्ण इतिहास मन में स्मरण हो आता है। ये तीर्थमाता हैं। पार्वती मां की बड़ी बहन और हिमालय और मां मैना की पुत्री हैं। एक साल तक शिवजटा (सघन वन) में रहकर राजा भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल के शाप से भस्म सगर के पुत्रों का कल्याण करने के

लिए कपिल के आश्रम में पहुंची थी।

भगवती लक्ष्मी आदि देवता संसार के पालक भगवान् विष्णु की मदद करते हुए थक जाते हैं। उनके द्वारा आराम की इच्छा प्रकट करने पर उनको देवशयनी एकादशी से देवठनी एकादशी तक का छः महीने का समय आराम के लिए दिया गया है। इस काल में भगवान् विष्णु सो जाते हैं। वस्तुतः हमारी आत्मचेतना परोक्षतः आराम करती है। सोए हुए भगवान् या चेतना हमारी पूजा-अर्चना ग्रहण नहीं कर पाते। उनके निमित्त किए जाने वाले यज्ञोपकार आदि बंद रहते हैं। नए कार्य आरंभ नहीं होते। आराम कर रहे देवताओं को भी प्रायः बीच में बाधित नहीं किया जाता। इस काल में हमारा सक्रिय रजोगुण प्रायः शांत रहता है।

भगवान् भैरव को संध्या और पूजा में याद किया जाता है। दीपक में इनका निवास माना जाता है। ये काल या मृत्यु से हमारी रक्षा करते हैं। काशी के काल भैरव नरक की लंबी सजा को क्षणों में दूर कर देते हैं। ये अपनी भैरवयातना द्वारा कर्मों के लंबे भोग को सोटे से पीट पीट कर सामने-सामने ही थोड़े समय में पूरा कर देते हैं। ये शिवरूप हैं तथा श्वान पर सवारी करते हैं। ये भयानक होने पर भी सौम्य और पोषक हैं। इनसे काल या मृत्यु भी भय खाते हैं। ब्रह्मा को अपने आप पर परमसत्ता होने का

अभिमान हो गया था। भगवान् शिव ने मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को भैरव रूप में अपना अंशावतार लेकर उनका अभिमान चूर कर दिया था।

भगवान् शनि देवता संसार के न्यायाधीश हैं। अपने प्रभावकाल में ये दुष्कर्मी को उसके दुष्कर्मों की सजा जरूर देते हैं। कर्मों के फल से कोई बच नहीं सकता। सत्कर्मियों को ये पुरस्कृत करते हैं। अकारण किसी को दु:ख नहीं देते। न्यायपसंद देवता हैं। अन्याय के विरूद्ध अपने पिता को भी नहीं बख्शते हैं। ये सत्यवादी, निडर, हठी और क्रोधी हैं। अकारण किसी को भयभीत नहीं करते। परोपकारियों पर हमेशा कृपालु रहते हैं।

गंदे और अशुद्ध स्थानों में प्रेतादि नीच योनियों या रोगकारक कीटाणुओं का वास माना जाता है। रास्तों में रखी तांत्रिक प्रभाव वाली फूल, हरी मिर्च, नींबू आदि सामग्री में बुरी ईर्ष्यादि दुष्ट भावनाएं मिली रहती हैं। ऐसी चीजों को छूने से बचकर निकलना चाहिए।

जमीन की सीमाओं को दर्शाने वाले पत्थर को ओडा कहा जाता है। यदि संतान न होने के कारण किसी की वंशवृद्धि रूक जाए तो उसके निकटस्थ परिवार की परंपरानुसार जिस पात्र व्यक्ति की जमीन के साथ उसकी जमीन को मिलाना होता है

उसको ओडा ढालना (बंटी हुई जमीन को एक करना) कहते हैं। संबंधित व्यक्ति अपने देवता बीजेश्वर का जाग्रा करवाता है और संतानहीन व्यक्ति की जमीन की मिट्टी पर देवता को पूजन से पूर्वक बैठाया जाता है। इसके बाद सीमा विभाजक पत्थर को उठाया जाता है और दोनों बंटी हुई जमीनों का पूर्ववत् एकीकरण हो जाता है।

बघाट रियासत के राजा दुर्गा सिंह धार्मिक संस्कारों से संपन्न और उच्च शिक्षित व्यक्ति थे। लगभग पचासी वर्ष पूर्व खंडोल में उन्होंने वेदाध्यापक को वेदपाठ करवाने हेतु अढाई रु. मासिक देने मंजूर किए थे। अढाई रुपए ग्रामवासी स्वयं चंदा करके देते थे। कुल पांच रुपए वेतन दिया जाता था। वेदपाठी बाद में सोलन के सेठों के घरों में यदा-कदा पुरुषसूक्त का पाठ करके अढाई रुपए दक्षिणा स्वयं ही कमा लिया करते थे। राजा को श्री 108 की उपाधि प्राप्त थी, जबकि उनकी गुरू माता आनंदमयी मां को श्री 1008 की। रानी मां स्वयं भी बुद्धिमती और धार्मिक संस्कारों से संपन्न थी। दोनों धार्मिक शिक्षा के पक्षधर थे। रानी दिवाली को स्वर्ण मुद्राओं पर लक्ष्मी पूजन करवाती थी। राज पुरोहित और कर्मचारियों के लिए पके भोजन का प्रबंध किया जाता था। कहते हैं कि एक बार सवर्ण लोगों ने राजा से शिकायत की थी कि असवर्ण लोग सवर्णों की

तरह सज-धज के साथ वर की बारात नहीं निकाल सकते, अतः उन्हें ऐसा करने से रोका जाए। राजा के यह कहने पर कि युग परिवर्तन हो गया है, होने दो। सवर्ण लोगों ने अपने आप फैसले पर उतर कर इस प्रथा को रोकना चाहा। राजा ने आगामी असवर्णों के विवाह में विपत्ति को टालने के लिए पुलिस का मजबूत प्रबंध कर दिया। फिर भी उस विवाह में कोई सवर्ण देखते-देखते बारातियों के नगाड़े छीनकर तथा नाले में फेंककर भाग गया था। बहुत पहले असवर्णों में तलवार पर पगड़ी रखकर उसी से कन्या का विवाह किया जाता था। वर घोड़े की सवारी नहीं कर सकता था। वर की जगह तलवार यात्रा करती थी। औपचारिक अग्निसाक्षित्व निभाया जाता था। केवल वर का छोटा भाई तलवार के साथ जाता था। वेदमंत्रों से उन का विवाह वर्जित था। इस बारे में बिशा (कंडाघाट) गांव के स्व. पं. श्री शक्तिराम जी ने पौराणिक मंत्रों से उनके लिए विवाह विधि छपवाई थी। आज सर्वत्र गुणों का ही आदर होता है। राजा दुर्गा सिंह अपने जन्म दिवस पर प्रत्येक ब्राह्मण परिवार से एक व्यक्ति को जिमाने हेतु निमंत्रित करते थे। वे श्रद्धा से पैरों को धोते-पोंछते थे। दक्षिणा प्रत्येक ब्राह्मण को उसकी शैक्षणिक योग्यतानुसार दी जाती थी, सबको एक समान नहीं। राज परिवार में किसी की मृत्यु पर पहले रियासत भर की स्त्रियों को शोकस्वरूप अपना सुहाग (श्रृंगार)

उतारना पड़ता था। इस प्रथा को बुद्धिमती रानी शशिप्रभा ने बंद करवाया था। आज की तरह गायत्री मंत्र का उच्चारण ऊंचे स्वर से नहीं बल्कि मौन स्वर से किया जाता था। मंत्रसाधना मन से होती है, तन से नहीं। राजा साहब विवाह संबंधी कुरीतियों को समझा बुझाकर दूर करवा दिया करते थे।

पूजा में कलश का दर्शन करते ही रत्नदाता समुद्र की याद आ जाती है। हम पांच रत्न अर्पण करके उसके प्रति अपने श्रद्धा भाव को दिखाते हैं। उसके दिए हुए पेड़-पौधों के प्रतीक पत्तों से उसे सजाते हैं। उसे मोती आदि रत्नों से भरकर रत्नाकर का रूप देते हैं। वह हमारे श्रद्धा भाव से प्रसन्न होकर हमें अपनी ही तरह सुखी, संपन्न और दाता बनाता है। उसे हमारे वस्त्रों, धान्य और नारियल आदि से कोई मतलब नहीं, वह तो केवल हमारे देने के भाव से ही खुशी से भर जाता है। हमारे कृतज्ञता के भाव का प्रदर्शन हर वस्तु से बड़ा होता है। कलश (सागर) के ऊपर रस के अधिष्ठाता देवता वरुण का आवाहन रस (स्नेह) से हमें सराबोर कर देता है। यही रस हमें समाज और संसार से जोड़कर 'सारा संसार एक परिवार' का मधुर अनुभव देता है। वरूण देवता स्वयं मधुर स्नेह के भंडार हैं। स्नेह की मूर्ति की पूजा हमें स्नेह से भर देती है। इस विश्वनियामक देवता के स्नेहपाश बड़े मधुर और मजबूत हैं, जिससे ये बड़ी कुशलता से संसार

का नियमन या व्यवस्था करते हैं। हम इनकी अद्‌भुत शासन व्यवस्था के लिए हृदय से कृतज्ञ हैं।

तुलसी मां के पौधे की जड़ में अर्पण किया गया जल हमारी मांओं की सतीत्व की मर्यादा को सींचता है। वृंदा का पति भले ही राक्षस था, फिर भी सती मां वृंदा ने उसके प्रति अपना समर्पण भाव न त्यागा। यही मानवीय मर्यादा है। संसार के नियामक को आसुरी आचरण और देवत्व के आचरण के बीच चरम संघर्ष में देवत्व की रक्षा हर किसी भी तरीके से करनी थी, जो कि सदा से होती भी आई है। परमेश्वर ने एक तीर से दो शिकार किए। वृंदा के सतीत्व के प्रभाव से उसका पति जालंधर लोकोपकारी देवताओं पर हावी हो रहा था। सतीत्वरूप अमृत विष बन रहा था। जालंधर को उस अमृत प्रभाव से वंचित करके उसे मारकर एक तो हिंसारूप विष मर गया, दूसरे अमृत (सतीत्व या देवत्व) की रक्षा हो गयी। वृंदा के मृत पति के साथ सती होने पर भी सती होने के स्थान पर जो तुलसी का पौधा उगा वह सनातन सतीत्व के भाव का प्रतीक बन गया, जिसे हम जगत् नियामक (विष्णु) की प्रिया पत्नी के रूप में पूजते हैं। वस्तुतः हर पत्नी परमात्मा की पत्नी होती है। उसकी पतिसेवा से अंततः परमात्मा ही प्रसन्न होते हैं। मां वृन्दा के बलिदान से देवत्व (परोपकार भाव) की विजय हुई। देवत्व (परोपकार भाव) की विजय

के लिए किया गया अपने जीवन या वस्तु का त्याग ही बलिदान (पूजा) कहलाता है। केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किसी पशु के जीने के हक को छीनना कभी बलिदान (पूजा) नहीं हो सकता। सतीत्व (देवत्व) का फल वृंदा को जगत् नियामक विष्णु का सनातन संग मिला। देवत्व को अपनाने का अंतत: यही फल मिलता है। भगवती तुलसी में देवत्व (भगवत्सेवा) की पराकाष्ठा है। मां तुलसी (प्रकृति) का देवठन को विष्णु (परम पुरुष) के साथ विवाह कराना विष्णु का सान्निध्य दिलाने वाला माना गया है। उनका सामीप्य पाना अथवा उनके प्रयोजन के लिए मर मिटना ही अणुमात्र का लक्ष्य है। तुलसी समस्त सांसारिक पदार्थों का सार है और वह विष्णु के प्रयोजन (देवत्व के गुणों द्वारा विश्व की रक्षा और पालन) के लिए नित्य समर्पित हैं। वे हमसे श्रद्धापूर्वक पूजित होकर हमारे अंतर् को भी इसी दिव्य भाव से भर देती हैं। सद्‌गुणों का नाम ही देवत्व है। दुर्गुणों को आसुरी भाव कहते हैं। कदाचित् देवत्व वाले लोगों में अंहकार का भाव भर जाए तो भगवान् विष्णु उनका नियमन असुरों को उन पर हावी होने का मौका देकर करते हैं। आसुरी भाव अंहकारादि कमजोरियों वाले लोगों पर शासन करते हैं। अंहकार रहित देवत्व सदैव आसुरी भाव पर शासन करता देखा गया है। देवों और असुरों के बीच संतुलन बनाए रखने में ही भगवान् की भगवत्ता है।

स्त्री को भगवान् विष्णु का सामीप्य केवल वृन्दा की तरह पति के प्रति समर्पित होने से मिल सकता है। स्त्री के समर्पण भाव का जालंधर जैसा असुर व्यक्ति जीवन निर्माता गुणों की हत्या करे, यह बात संसार नियामक विष्णु को कतई पसंद नहीं है। जरूरत पड़ने पर वे सामान्य समर्पण को महासमर्पण में बदल देते हैं।

सोलन जिला के पर्यटन स्थल चायल में पहाड़ी वैज्ञानिक भल्खू की याद में हर साल 6 नवंबर को स्थानीय पंचायत द्वारा मेला मनाया जाना कोई कम गौरव की बात नहीं। बस स्टैंड के पास उस पहाड़ी वैज्ञानिक की भव्य मूर्ति आगंतुक को बरबस आकर्षित करती है। इस वैज्ञानिक की कार्यशैली पर खोज जिज्ञासुओं को एक नया प्रकाश दे सकती है।

सोलन क्षेत्र के देवठी (गड़खल) आदि बीजेश्वर देवता के स्थानीय मंदिरों में करियाला करवाने की परंपरा दर्शकों को अपने पुराने गौरव की याद दिलाती है। इसमें स्थानीय लोगों के लिए सुख-समृद्धि की कामना की जाती है। धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। कलाकारों द्वारा मशाल पूजन, देवस्तुति, चंद्रावली नृत्य, साधों की नगरिया, पंडित जी के पहाड़ी शटराले, नेपाली बाबू, लंबरदारी, थानेदार और नट-नटी आदि विविध स्वांगों को देखकर दर्शक लोट-पोट हो जाते हैं। अटपटा डांस, अजीबो-गरीब पहरावे और

विकृत परंपराओं पर हास्य-व्यंग्य दृश्य को रोचक और मनमोहक बनाकर रख देते हैं। वर्तमान सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य की इस तरह पैनी चोट करते हैं कि चोट खाए व्यक्ति का भी खुशी से खून बढ़ जाता है। हींग लगे न फटकड़ी, भूले-भटके लोगों को सही रास्ता मिल जाता है। हंसी खेल में हर व्यक्ति को अपने जीवन व्यवहार के लिए एक बहुत मधुर मार्गदर्शन मिल जाता है। सबसे बड़ी बात यह कि करयालची केवल 10-20 फुट लंबी-चौड़ी ऊबड़-खाबड़ जगह पर अपना स्टेज बना लेते हैं और वहीं पर उपलब्ध टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी, किल्टा, फटी लालटेन, फटी टोपी या कपड़े आदि को अपना हंसाने का श्रृंगार साधन बना लेते हैं। आज के नए कलाकार न जाने क्यों चुप्पी साधे हैं, जबकि ये आज के घिनौने सामाजिक व राजनीतिक हथकंडों को अपने व्यंग्य का पैना और रोचक लक्ष्य बना सकते हैं।

लोकमंगल के लिए अपना बलिदान करने वाले लोगों को पहाड़ी लोग नहीं भूलते। लगभग अढ़ाई सौ साल पहले शावगा (सिरमौर) के लोगों को देवता शिरगुल के छोटे भाई को पूजा करने वाले ब्राह्मणों की रक्षा का जिम्मा सौंपा गया था। एक बार क्षेत्र में लुटेरों का आतंक बढ़ गया था। ब्राह्मण मनौण गांव में रहते थे। उस गांव में लुटेरों के प्रवेश की सूचना पाकर एक किड़ा नाम का

नौजवान अकेला ही उन लुटेरों पर टूट पड़ा। लुटेरे तो भाग गए लेकिन किड़ा लड़ते हुए घायल होकर शहीद हो गया। आज भी ठीक दिवाली के दूसरे दिन उसे 'किड़ा मोड़िया' की उपाधि के साथ याद किया जाता है और उसकी याद में त्योहार मनाया जाता है। ब्रह्मकर्मी अथवा देवपूजक ब्राह्मणों के रक्षक वीर की स्मृति में यह एक अनोखा पहाड़ी उदाहरण है।

महादेव शिरगुल को ओपरा (अदृश्यबाधा) दोष निवारक मुख्य देवता माना जाता है। ये भगवान शिव के अंशावतार माने जाते हैं। शाया गांव के मंदिर में साजी और पड़ेई को नौतबीन (नौ परगने के लोग) देवता का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए यहां आते हैं। पहले इस क्षेत्र के हर गांव में रामलीला होती थी।

विषेश ग्रहदोष अथवा संकट में रूद्राभिषेक किया जाता है। रूद्र क्रोध के आधिष्ठाता हैं। उनके सिर पर सिंचन (शांति) करने से उनके अधीनस्थ सभी देवता शांत हो जाते हैं तथा हमें कष्टों से निवृत्ति मिल जाती है। इस प्रक्रिया में विशेषत: शिव परिवार का पूजन, दूध से शिवलिंगाभिषेक, पुष्प, माला, बिल्व और आरती निवेदित किए जाते हैं।

वैदिक परंपरा के अनुसार वेदोत्पत्ति का मुख्य लक्ष्य

यज्ञ अथवा लोककल्याणकारी कार्य हैं। ये कार्य शुभकाल में करने जरूरी हैं। शुभकाल का निर्णय ग्रहशास्त्र करता है। शुभ काल का मतलब है शुभ कार्यों पर शुभग्रहों की दृष्टि रहना। शुभदृष्टि के विना कोई भी कार्य हितकर नहीं होता। शुभकाल ही हमें अंधेरे (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाता है। शुभ कार्य का भी यही उद्देश्य है। हमारे सर्वकल्याणकारी कार्य पर शुभग्रहों का प्रकाश होना जरूरी है।

धर्मपत्नी को परंपरा में सर्वोत्तम मित्र माना गया है। वह पति की दासी, नौकरानी अथवा अधीन नहीं है, न ही वह कोई भोग्य वस्तु है। उसमें पवित्र आत्म चेतना है। उसके विना वंशवृद्धि अंसभव है। स्त्री भ्रूण उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि पुरुष भ्रूण। हमारे घर की सुख-संपत्ति पर उसकी बराबर की भागीदारी है। घर के विकास की योजनाओं पर उसकी राय लेना भी जरूरी माना गया है। प्रेम का मतलब केवल शारीरिक मेल नहीं बल्कि प्रेमी के लिए त्याग की भावना है। त्याग की भावना से प्रेम उपजता और बढ़ता है। स्वार्थ से प्रेम डूबता है। बेटे की आस में बेटियों का अंबार लगा देना भी पत्नी के प्रति अन्याय है। अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए पत्नी को राजनीति में झोंकना भी अमानवता माना जाता है।

आज बढ़ती गरीबी का एक बड़ा कारण जातीय आधार

पर आरक्षण की नीति हो गया है। पहला अभिशाप जातियों को पैदा करना था तो दूसरा अभिशाप विविध जातियों में ऊंच-नीच की भावना पैदा करके उसका केवल वोट के लिए राजनीतिक लाभ उठाना है। आज की विषम स्थिति में आरक्षण केवल आर्थिक रूप से विपन्न परिवार को मिलना चाहिए। धनवान् आरक्षितों को अब सरकारी क्षेत्र में लाभ दिया जाना बंद होना चाहिए।

बघाट और आस-पास के पहाड़ी क्षेत्र के रीति-रिवाज हमारी वैदिक परंपराओं की याद दिलाते हैं। कुंगश (आनी) में दिवाली के दिन बगड़ी नामक घास की मोटी रस्सी बनाकर दोनों ओर से खींचकर वासुकि नाग रूप रस्सी से समुद्र मंथन की रस्म निभाई जाती है। उसी की अगली सुबह दानवीरता के लिए राक्षस राजा बलि की पूजा की जाती है। अच्छे या बुरे गुण ही हमें देवता अथवा राक्षस बनाते हैं। बली को अच्छे गुणों वाला असुर माना जाता है।

जिला शिमला के ऊपरी भागों में देवठियों (देवमंदिर परिसरों) में आज भी करयाला करने का रिवाज है। रात भर बलीराज जलाया या प्रकाशित किया जाता है। यह राजा बली की दानवीरता का परिचायक है। शरत् पूर्णिमा से अमावस्या तक श्रीराम की लंका विजय की गाथा गायी जाती है। दिन में लोग अपने इष्टदेवता के चरणों में अपनी मनोकामना की पूर्ति हेतु सिर नवाते हैं।

बघाट में शुभ शकुन के रूप में अस्कुली पकाई जाती है जो घी-शक्कर के साथ अति स्वादिष्ट होती है। ये चावल के आटे को पानी में घोलकर पत्थर के कलापूर्ण सुराखदार तवों पर बनाई जाती हैं। सुराख गोल अथवा आंख के आकार के अथवा मिश्रित होते हैं। अस्कुली का विकल्प लुश्का अथवा पटांडा भी है। लुश्का भी मोटे तवे पर रोटी के आकार का बनता है। ये व्यंजन तवे को ढक कर बनते हैं जिसमें पकने पर छेद अपने आप हो जाते हैं। इस प्रसंग में एक प्राचीन श्रुति है-एक संयुक्त परिवार में एक नई बहू ब्याह कर आयी। वह बेचारी लुश्के पकाने की कला से अनभिज्ञ थी। जेठानी से आग्रहपूर्वक बोली- 'बहिन में लुश्के बना तो दूंगी पर मुझे उसमें छेद करने नहीं आते।' जेठानी भी खुशी से बोली-'बहिन, तुम आराम से लकड़ी का बोझा ले आओ' बाकी मैं सब काम निबटा दूंगी।'

पटांडा गेहूं के मोटे आटे को पानी में अधपतला गूंथ कर बनाया जाता है। लोहे के तवे में ऊपर को हल्का सा उभार होता है। आटे की गोल पिंडी पकड़कर गर्म तवे पर गोल घुमाई जाती है और इसमें हाथ को जलने से बचाया जाता है। अस्कुली और लुश्के का आटा काफी पतला गूंथ कर कड़छी से तवे में गिराकर उसे ढका जाता है। आज ये सब चीज़ें लुप्त हो रही हैं। शायद पटांडा और लुश्का अब भी

कहीं देखने को मिल सकता है। स्थानीय मेलों में इनका व्यवसाय किया जा सकता है। आज तो इन सब चीजों का स्थान हलवा, पूरी और पूड़े ने ले लिया है। कारण? हर व्यकित का अपनी रोटी-रोजी और व्यवसाय के साथ जुड़ने से समय की कमी होना। वैज्ञानिक उपकरणों की खोज करके इन व्यंजनों का निर्माण फिर से संभव किया जा सकता है, ठीक इडली और डोसे आदि की तरह।

जिनके पुत्र नहीं होते उनके लिए आश्विन शुक्ल पूर्णिमा की रात को गाय के दूध में मेवों सहित पकाई गई खीर चंद्रमा की किरणों के प्रभाव में छत पर रखी जाती है। सबेरे मुंह अंधेरे खीर उतार कर पहले श्री गणेश जी को भोग लगा कर फिर संतानेच्छुक दंपत्ति को खिलाई जाती है। इस खीर में समस्त वनौषधियों के गुण माने गए हैं। परिवार के सभी सदस्यों को औषधि के रूप में भी उसे खिलाया जाता है। कहते हैं इससे दमा भी नहीं होता। इस रात को चंद्रमा पृथ्वी के सबसे समीप होता है। माना जाता है कि इस खीर में अमृत बरसता है। इस रात चांद 16 कलाओं से पूर्ण होता है। इसी रात यमुनातट पर कृष्ण (परमात्मा) और गोपियों (जीवात्माओं) का रासोत्सव या दिव्य प्रेमोत्सव संपन्न हुआ था। इस खीर के प्रयोग से परिवार सहित सभी जीवों से शीतल प्रेम संबंध मजबूत होते हैं। इस प्रकार हमारे पारंपरिक उत्सवों में भगवदानंद अनुस्यूत रहता है।

हमारे धार्मिक व्यवहार में ब्राह्मणत्व की साधना

धन की शक्ति लक्ष्मी हमें आर्थिक समृद्धि प्रदान करती है। बुद्धि की शक्ति सरस्वती के उपासना केन्द्र हमारे विद्यालय अथवा विश्वविद्यालय होते हैं। उनका वाहन हंस है, जो विवेक या अनुसंधान का प्रतीक है। दुर्गा माता दुर्गम कामों को साधने वाली हैं। ये साहस की प्रतीक हैं। लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा तीनों देवियां क्रमशः धन, बुद्धि और साहस हमको प्रदान करती हैं। देवता अपनी परिक्रमा या फेरे करने के माध्यम से हमें अपने साथ एकाकार होने का मौका देते हैं। देवता

जीवमात्र की भलाई का काम करते हैं तभी संसार में उनकी पूजा की जाती है। देने के भाव का नाम देवता है। पूजा से प्रसन्न होकर देवता हमारे अंदर परसेवा का भाव भरते हैं।

शिखा या चोटी हमारी चेतनाशक्ति रूपी देवता की प्रतीक है। इसके वंदन से हमें लंबी उम्र, तेज और बल मिलता है। यह हमारी आत्मशक्ति को बढ़ाती है। शिखा के माध्यम से सभी देव शक्तियां हमारी रक्षा करती हैं। बिना शिखा के कोई भी यज्ञ सफल नहीं होता। तेतीस करोड़ देवताओं का मतलब है तेतीस प्रकार के देवता। इनमें वसु, रूद्र, आदित्य, इन्द्र और प्रजापति गिने जाते हैं। प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में जागने से हमें 41 प्रतिशत ऑक्सीजन का लाभ होता है।

संकल्प का मतलब है अपना काम भगवान् को सौंपने की प्रतिज्ञा। पूजा-अनुष्ठान से पहले स्वस्तिवाचन अर्थात् यजमान एवं सबके कल्याणार्थ प्रभु से प्रार्थना की जाती है। अंत में शान्ति पाठ द्वारा सब के लिए शान्ति की कामना की जाती है। भार का मतलब है गुरुत्व। भारत का नाम इसके गुरुत्व के कारण पड़ा है। दीप जलाने का अभिप्राय है विश्व को प्रकाश या ज्ञान का दान करना। यह सबको जागते रहने के लिए सचेत करता है। माथे पर तिलक लगाने का मतलब है अपने उदात्त या उदारवादी विचारों का सम्मान

करना। पवित्र जल छिड़कने मात्र से भी स्नान हो जाता है। 'पुंडरीकाक्षाय नमः' से कमलपत्र के समान विवेकी भगवान् को प्रणाम समर्पित किया जाता है। भगवान् शिव अनजाने में चढ़े बिल्व के पत्ते से भी प्रसन्न हो गए तो श्रद्धापूर्वक चढ़ाने से तो बात ही क्या। विष्णु ने जगत् कल्याणार्थ धोखे से वृन्दा का आलिंगन करके उसके पतिव्रता धर्म को भंग करके अत्याचारी राक्षस जालंधर को परमगति दे दी तथा वृन्दा या तुलसी को साक्षात् अपनी संगिनी नारायणी बना दिया। प्रलयकाल में मार्कण्डेय द्वारा प्रयाग के वटपत्र में बालक कृष्ण के दर्शन होने से वटवृक्ष पूज्य हो गए। महालक्ष्मी की बड़ी बहिन दरिद्रता रविवार को पीपल के पेड़ में बस गई और केवल उस दिन के लिए पीपल को अपूज्य बना दिया। शनिवार को स्वयं लक्ष्मी ने उसमें निवास करके उसे उस दिन के लिए अति पूज्य बना दिया। फिर भी ऑक्सीजन वह विना प्रार्थना के दिन-रात बांटता है। दूसरों को कुछ देने या खिलाने की प्रवृत्ति ने उसे देवता बना दिया। असुरों ने भगवान् से पूछा- 'तुम हमेशा देवताओं की ही मदद क्यों करते हो, हमारी क्यों नहीं?' भगवान् बोले- 'क्योंकि तुम केवल अपना पेट भरते हो, दूसरों का नहीं, इसलिए।' असुर केवल लेता है, देता किसी को कुछ नहीं। तमोगुणी अज्ञानी असुर शोषण और लूट मार को बढ़ावा देते हैं। तमोगुण का रंग है काला। कलियुग भी काला है।

काले धन का बोलबाला है। इसके कालेपन का अंत भगवान् के अवतार से ही संभव है।

भगवान् कृष्ण ने शंखासुर के शरीर का पाँचजन्य शंख बनाकर यमलोक में उसे बजाया तो वहां सारे के सारे बंधन (नरक) में पड़े जीव उनके गुरुपुत्र सहित नारकीय कष्ट से मुक्त हो गए। तब से शंखध्वनि में असर आ गया और आज भी इससे वातावरण शुद्ध होता है। शंखदेवता की नित्य पूजा की जाती है।

सोना औषधि रूप है। हल्दी में गणेश जी का वास होता है। यह चर्मरोग निवारक है। ब्रह्मा जी की गोद में शिशुरूप में दूध के लिए चिल्लाने वाले रूद्र देवता कष्ट से रोने वाले संसारियों को हंसा देते हैं। राजा दिलीप की गोसेवा ने गौमाता को पुत्रदात्री बना दिया। बर्फीले पर्वतों के जंगल शिव की जटाओं के रूप में दर्शनीय और पूजनीय हैं। भगवान् विष्णु अपने शंख से सर्वजीवकल्याण की घोषणा करते हैं। दक्षिणायन सूर्य में देवताओं के सोने का मतलब है धरती पर माया या मोहरात्रि (आलस्य-अज्ञान) का छा जाना। इस समय बाह्य शक्ति के क्षीण होने के कारण शुभ कार्यो के मुहूर्त रूक जाते हैं। विष्णु जी की गदा पराक्रम की प्रतीक है। कमल का फूल उनकी संसार के प्रति अनासक्ति का प्रतीक है।

शिवजी का त्रिशूल तीन गुणों सत्व, रज और तम के प्रभाव से मुक्त रहने को कहता है। सरस्वती की वीणा से हम अपने नाड़ी मंडल में संगीत पैदा करना सीखते हैं। माथा झुकाने से हमारा अंहकार गलता जाता है। यमराज की दिशा दक्षिण की ओर केवल शव के पैर किए जाते हैं, जीवित के नहीं। दुर्गा का वाहन शेर स्वार्थी लुटेरों से लोक या वन की रक्षा करता है। भोग लगाने का अर्थ है देने वाले के प्रति कृतज्ञता का ज्ञापन। वह भूखा नहीं, केवल हमारी नियत का पारखी है। हमारा शरीर पवित्र देवनगरी अयोध्या है। श्रावण मास में मिट्टी के शिवलिंग की पूजा द्वारा भूः (पृथ्वी माता) तत्त्व की पूजा की जाती है। भगवान् शिव साक्षात् स्वयं भूः (पृथ्वी) हैं। जहां समान गोत्र के विवाह में शुभ संस्कारों का उचित विकास नहीं हो पाता वहीं दूसरे वर्णों के साथ विवाह वर्ण (व्यवसाय) विशेष के विकास में बाधक हो जाता है। गीता के अनुसार वर्णमिश्रण (व्यवसायमिश्रण) ही वर्णसंकर कहलाता है। वर्णविशेष हमें अपने निष्काम स्वकर्म के द्वारा उदर पोषण और भगवान् की प्राप्ति करवाता है।

शनिदेव की चुनौती पर हनुमान जी ने उन्हें युद्ध में परास्त कर दिया था। जख्मी शनि की प्रार्थना पर उन्होंने उनके जख्मों पर तेल लगाकर उन्हें स्वस्थ कर दिया। ब्रह्मांडीय घटना के अनुसार शनि का क्रोध तेल दान करने से शान्त हो जाता है। लाल

मौली हाथ में बांधने से रक्त संचार निर्बाध रूप से होता है। गरीगुट की भेंट कोमलता और मिठास का समर्पण है। पान का उपचार भोजनोपरान्त कफनाशक माना जाता है। 'फलं समर्पयामि' अपने कर्मफल का समर्पण है। जल का अर्पण जीवनरूपी नदी के जल का भगवान् रूप सागर में अर्पण है। प्रचलित चावल की मूड़ी देने से सुदामा के जीवन की तरह कायाकल्प हो जाता है। ब्राह्मण का आदर करना एक कल्याणकारी विचारधारा का आदर करना है। ब्राह्मणादि चार वर्ण शिक्षा, रक्षा, धन और शारीरिक श्रम के प्रतीक हैं। वेदाधरित मनुस्मृति मनुष्यमात्र की आचार संहिता है। संसार देवताओं या कल्याणकारी चीजों के अधीन है। वे मंत्र या मनन से अपने भक्तों पर कृपा करते हैं। मनन या विचार करने में ब्राह्मण स्वाभाविक तथा श्रेष्ठ होते हैं। यही कारण है कि ब्राह्मण या भारत जगद्गुरु है।

भगवान् का अवतार देश और काल के अनुसार होता है। हिरण्याक्ष अथवा धन (सोने) को ही भगवान मानने वाले लोगों द्वारा संसार का पतन किए जाने पर भगवान् वराह अथवा कठोर मेहनती किसानों द्वारा उसे सही रास्ते पर लाया गया था। भगवान् धन्वन्तरि अमर चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद को लेकर अवतरित हुए थे। स्वार्थपूर्ण असुरराज बली को हटाने के लिए भगवान् वामन ने उसकी आंखों में धूल झोंक डाली थी। परशुराम ने धरती पर से आतंकी

राजाओं का सफाया किया था। व्यास जी ने अल्पबुद्धि मनुष्यों के कल्याण के लिए वेदों को शाखाओं या खंडों में बांट दिया। वस्तुत: हर जीव या अवतार कल्याणकारी व्यक्तित्व होता है। भगवान् कृष्ण ने क्रूर कंस के द्वारा दूध पर लगाए गए भारी टैक्स के विरूद्ध क्रान्ति का बिगुल बजाया था। उनकी गोवर्धन लीला एक सफल हरित क्रांति थी।

ग्रहण के समय धरती पर शुद्ध प्रकाश किरणों का अभाव होता है। उस समय असमर्थ आदमी खाना खा सकते हैं। ग्रहण से पूर्व स्नान फिर पूजा-दानादि तथा अंत में फिर से स्नान करने की सनातन परंपरा है। नित्य सूर्यार्ध्य के जल में सूर्य के बिंब को देखना शुभ माना जाता है। कृष्ण जी ने सूर्य ग्रहण पर ब्रह्म सरोवर (कुरुक्षेत्र) में आरोग्य प्राप्त्यर्थ स्नान-दान किया था। शरद् पूर्णिमा की रात को बाहर छत पर रखी खीर में भगवान् चन्द्रमा अमृत बरसाते हैं। चन्द्रमा को गणेश जी का शाप है कि जो भी तुम्हें भाद्र शु. चतुर्थी को देखेगा वह तुम्हारी तरह कलंकित हो जाएगा। ये सब सृष्टि की उत्पत्ति और उसके विकास के क्रम में घटी ब्रह्मांडीय घटनाएं हैं। जो उस समय हुआ था, वह पुन: भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता। यहां केवल सावधानी रखने का संदेश दिया गया है। ब्रह्मा जी ने बसंत पंचमी के दिन पृथिवी को प्राणवायु देने के लिए कुशा की उत्पत्ति की थी। कुशा में ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों

देवताओं का निवास बताया गया है।

श्राद्ध कार्य में कुशा को कमर में इसलिए धारण किया जाता है ताकि उस समय शरीर में प्रेत योनि के जीव प्रवेश न करें। कुशा के पौधे विष्णु के रोम से पैदा हुए हैं तथा पूजा कर्म में सर्वत्र काम आते हैं। संसार के हर आदमी ने अपने जन्म, धर्म, कर्म और गुण के अनुसार अपना वर्ण स्वीकार किया है। वर्ण का आधार स्वाभाविक धर्म या योग्यता है। संसार में निरंतर दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष होता रहता है। बलि दान का मतलब है अन्नादि का दान करना। बलि पशु की ली नहीं बल्कि पशु को दी जाती है। उन्हें कुछ खाने को दिया जाता है। जैसे 'काकाय बलि:' अर्थात् कौए को बलि दी जाती है। उनका जीने का हक नहीं छीना जाता। जिस तरह जीभ के चटोरे लोगों ने योगियों के पंचमकारों के अर्थ को बदलकर अपनी मौज मस्ती में लगाया उसी तरह पशुबलि शब्द को स्वार्थपूर्ति में लगाया गया है। बलि का सही अर्थ है समाज या विश्व की भलाई में अपना योगदान देना अथवा दधीचि की तरह जान तक न्योछावर कर देना। किसी की जान लेना नहीं बल्कि किसी के लिए जान देना सच्चा बलिदान है। ठीक भगतसिंह और मंगल पांडे आदि की तरह।

स्वस्तिवाचन के पाठ द्वारा देवताओं से सब जीवों के

कल्याण की कामना की जाती है। ॐ विश्व के अस्तित्व की ध्वनि है, विद्युत् है। हमारा मस्तिष्क या सहस्त्रार चक्र ब्रह्म का धाम या घर है। इसमें बुद्धिरूपा सरस्वती का निवास है। हृदय में प्रेम के देवता विष्णु का निवास है। इनकी शरण में कुंठा या तनाव नहीं होता है। अतः यही वैकुंठ कहलाता है। शाबर मंत्र सांसारिक उन्नति देते हैं तो वैदिक मंत्र आध्यात्मिक उन्नति। गायत्री मंत्र शरीर, मन और आत्मा तीनों का संतुलित विकास करता है। रूद्राक्ष साक्षात् शिव है। तुलसी और फूल आदि का संग्रह स्नानोपरान्त शुभ होता है। गाए के घी की जोत जलाना सुख-समृद्धि दायक है।

विवाह का प्रयोजन भगवान् शिव के विवाह की तरह विश्व का कल्याण है। उनसे उत्पन्न कार्तिकेय ने तारकासुर का वध करके देवत्व या परोपकार की रक्षा की थी। ब्रह्मा जी को मजबूरी में दूसरा विवाह करके सरस्वती माता का शाप झेलना पड़ा था। भागवत् की कथा मृतात्मा तथा जीवितात्मा दोनों को शांति देती है। नित्य संध्या ऋषियों से चली आ रही महान् परंपरा है। मंत्रों से मन और वस्तुएं प्रभावित होती हैं। सिद्ध मंत्र व्यक्ति का संचालक होता है। अज्ञानपूर्ण तामसी पूजा आमानवीय होती है। भस्मधारण सत्य (मृत्यु) स्मरण का प्रतीक है। संसारी चीजों की भूख महिष (मोटी अकल) असुर की प्रतीक है। रावण के दस सिर बुद्धि की दासता के प्रतीक हैं।

महामृत्युंजय जप मृत्यु के भय से बचाता है और अकालमृत्यु का भी निवारण करता है। हमारा शासक परमात्मा हमारे अंदर निवास करता है। मन्दिर या यज्ञ समाज में समन्वय पैदा करते हैं, समता और सुख लाते हैं। रामराज्य का अर्थ है राजा या नेता द्वारा प्रजा के सुख के लिए अपने सुख का त्याग। ध्यान हमारे मस्तिष्क की कोशिकाओं का पोषण करता है। महामृत्युंजय जप से मार्कण्डेय जी को जीवनदान मिला था। कुंडली का कमजोर भाव अपने भावफल को कमजोर करता है। निर्जला एकादशी को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है और वर्षा का सूचक है। वर्षाविज्ञान पर प्राचीन पुस्तक नारद रचित 'मयूर चित्रकम्' मानी जाती है।

मृत्यु शरीर का धर्म है। दधीचि के पुत्र पिप्पलाद ने पीपल वृक्ष की वैज्ञानिक शक्तियों का पता लगाया था। भावना शब्दों से अधिक प्रभावी होती है। सुषुम्णा नाड़ी शरीर की समस्त नाड़ियों का नियंत्रण केन्द्र है। गरुड़ पुराण अनेक विद्याओं का कोष है। ब्राह्मण की सर्वोच्च उपाधि 'पंडित' है। उत्तरकांड संपूर्ण रामकथा का सार है। बालक का सार्थक नामकरण उसके सार्थक जीवन का आधार है। शनि का नीला रंग न्याय का प्रतीक है। योग वामन व्यक्ति को विराट् व्यक्ति में बदल देता है। वास्तु (गृह) देवता का सिर पूर्व में और पैर दक्षिण में होता है। अंक आठ शनिदेव का

प्रतिनिधि है। तंत्र शास्त्र में शिव द्वारा दिए गए पार्वती के प्रश्नों के उत्तर हैं। कुंडली में बलवान् शनि व्यक्ति के दु:ख को कम करके उसके सुख को बढ़ाता है। कमजोर शनि के कष्ट को गरीब को चमड़े के जूते देकर तथा अपने इष्ट देवता और गायत्री की पूजा करके अनुकूल किया जा सकता है।

राखी या रक्षासूत्र भद्रारहित काल में मिष्ठान्न खिलाकर बांधने की परंपरा है। शनिदेव अपने प्रकोप से व्यक्ति का मनोबल परखते हैं, ऐसा उनका स्वयं का कहना है। श्राद्ध कर्म में लहसुन और प्याज का वर्जन है। कुत्ते, कौए और भैंसे में क्रमश: भैरव, शनि और यमराज का निवास माना गया है। कष्टदायक ग्रहों की शान्ति हेतु कांसे के पात्र में घी और पंचरत्न रखकर समंत्र मुखछाया का दर्शन करके उसे दान किया जाता है। देवता हमें कुछ देना सिखाते हैं। देवत्व के लिए धन नहीं दिल चाहिए। निष्काम पूजा सर्वोत्तम है। इसका फल भी अनंत है। दीप जलाना ज्ञान रूप प्रकाश का आदर है। सूर्य जैसे देश बदलता चलता है उसी तरह मनुष्य भी जन्मांतरों तक अपने जन्म के स्थान बदलता रहता है। गोमूत्र और दूध आदि अनेक चीजों का दान करने के कारण गाय सर्वदेवमयी है। आम तौर पर एक देवता एक ही चीज का दान कर पाता है। स्वेच्छा से किया गया प्रेम (गान्धर्व) विवाह विस्तृत विधि-विधान अपनाने से वह ब्राह्मविवाह

नहीं हो सकता। प्रेम विवाह हेतु शास्त्रों में केवल अग्नि के तीन फेरे बताए गए हैं। वे भी केवल गन्धर्व जाति के लिए हैं, अन्यों में तो वह तरीका अपनाना ही गलत है। गलत तरीके को बलात् शास्त्रीय कैसे बनाया जा सकता है।

यज्ञ भगवान् का स्वरूप है, जिसमें हर जीव अपनी-अपनी आहुति (योगदान) डालता है और जिससे सबको प्रसाद प्राप्त होता रहता है। हमारा शरीर एक पोशाक है और हमारी सांसारिक भूमिका अदा होने पर उसे उतारना ही पड़ता है। अग्नि, गाय, पक्षी, अतिथि और कुत्ता हमारे प्राकृतिक उत्तम दानपात्र हैं। पितृदोष का निवारण गायत्री मंत्र के जपानुष्ठान से होता है। लघुरूद्री का अनुष्ठान किसी भी संकट का निवारक होता है। इसके प्रभाव के अनुभव से एक इसाई ने बैजनाथ में शिव मंदिर बनावाया था। गर्गाचार्य की संगति से राजा मुचुकुंद को भगवान् के दर्शन हुए थे। सर्वजनकल्याणकारी कार्य में देवत्व समाया रहता है। अगर हमारे पूजनीय माता-पिता न होते तो न हमारा शरीर होता न इसका सुख हमें मिलता। सूर्य और मंगल ग्रह शक्ति, ताप, पाचन और जोश के अधिष्ठाता हैं। सबेरे उठकर गणेश, पृथिवी, तुलसी, इष्ट देवी-देवता और माता-पिता को प्रणाम करने से सारा दिन मंगलमय बीतता है। मकर (माघ) सक्रान्ति को सूर्य और शनि का मेल होने पर तिल और

गुड़ आदि का दान महापुण्यदायक होता है। इस दिन भीष्म पितामाह ने अपने पिता से प्राप्त इच्छामृत्यु के वरदान स्वरूप प्राण छोड़े थे। इस परमवीर ने दस दिन तक कौरव पक्ष का अद्वितीय सेनापतित्व संभाला था।

मृत्यु दो शरीरों को जोड़ने वाली कड़ी है। गीता का अठारहवां अध्याय संपूर्ण गीता का सारांश है। कर्त्तव्य का निर्वाह और साहस गीता की महान् प्रेरणा है। वेद हमें सकाम कर्म से निष्काम कर्म की ओर जाने की प्रेरणा देते हैं। अभिप्राय यह कि पुत्रेष्टि यज्ञ करवाने पर भी उसका फल भगवान् पर छोड़ दिया जाए। कर्म तो वेदोक्त किया जाए, फल उसका प्रभु पर छोड़ दिया जाए। आहुति डालने का मतलब है ईश्वर की कल्याणकारी योजना में यथाशक्ति अपना हिस्सा डालना। पंचांग अपने आप में पूरा ज्योतिषशास्त्र है, इसका उपयोग करना आ गया तो ज्योतिष आ गया। यात्रारंभ के लिए अमृतयोग विशेष शुभ माना जाता है। एक चांद्र तिथि लगभग 23 घंटें तक रहती है। हमारा जन्मकालीन चंद्रमा हमारे व्यक्तित्व का सूचक होता है। तदनुसार हमारा नामकरण भी हमारे व्यक्तित्व का सूचक होना चाहिए। हमारे नाम का पहला अक्षर हमारे जन्मनक्षत्र के चौथे हिस्से का प्रतिनिधि होता है। इस प्रकार हमारे नामाक्षर, नक्षत्र का हिस्सा और शरीर तीनों एक सीध में ब्रह्मांड

का गोलाई में चक्कर लगाते रहते हैं। इस चक्कर में वे विभिन्न प्रकाश किरणों, परमाणुओं, वस्तुओं और जीवों से प्रभावित होते रहते हैं। हमें नया काम अपने शुभ चंद्रमा की अनुकूल किरणों में करना चाहिए।

अधिक मास सदा चंद्रमा का मास होता है, सूर्यमास नहीं। सू. मं. और श. ग्रह और वार स्वभाव से क्रूर या सख्त होते हैं। सृष्टि के जन्म पर पहले दिन रविवार होने से वही सप्ताह का पहला वार है। सबसे पहले उत्पत्ति भी सू. ग्रह की ही हुई थी, अतः वही पहला ग्रह भी है। विवाह के लिए वैशाख, ज्येष्ठ आषाढ़, माघ और फाल्गुन मास शुभ होते हैं। नए शुभ कार्यों के लिए अक्षय तृतीया, आषाढ़ शुक्ल नवमी, राम नवमी, देवठन की एकादशी सदा शुभ होते हैं। शुभ समय में उठाई गई मिट्टी भी सोना बन जाती है। दीप हमारे शुभ कर्मों का साक्षी है। काली माता द्वारा रक्तबीज नामक असुर के रक्त का पान आसुरी वृत्ति के सर्वनाश का प्रतीक है। यह सब वे दैवी संपदा की रक्षा और वृद्धि के लिए करती हैं। वे निर्दोष भक्त का कभी बुरा नहीं करती। वे केवल दुष्टों पर भारी पड़ती हैं। रक्तबीज का मतलब है एक बुराई करने से उससे अनेक बुराइयों का उपजना।

मृत्यु के बाद अगला जन्म लेने में लगभग तेरह दिनों का समय लगना बताया गया है। पितरों से सम्बन्धित वार चं. और शु.

होते हैं। कलश स्थापन कन्या लग्न में ईशान कोण में जौ बोकर उसके ऊपर रक्तवस्त्रावेष्टित नारियल सहित जल से भरा कलश रखा जाता है। अस्त और वक्री ग्रह काम में रूकावट डालते हैं। शनि की अशुभ दशा का फल भगवान् शिव को भी सतीदाह के रूप में भोगना पड़ा था। अशुभ दशा पूर्वकृत अशुभ कर्म की सूचक होती है। 21 जून को सूर्य दक्षिण अयन की ओर घूम जाता है। गुरुत्वाकर्षण की खोज ब्रह्मगुप्त ने की थी। हमारे व्यक्तित्व पर चं. सर्वाधिक प्रभाव डालता है। ग्रह हमारी बुद्धि को प्रभावित करते हैं और बुद्धि हमारे कार्यों को प्रभावित करती है। धन के देवता कुबेर की दिशा उत्तर है। मुख्य दरवाजे की सर्वोत्तम दिशा पूर्व है। इस दिशा में वास्तुदेवता का मुंह हमें पूर्व की ओर से प्रभावित करता है। इस दिशा से हमें सब कुछ शुभ मिलता है। ब्रह्मांड का संपूर्ण न्याय विभाग भगवान् शनि के हाथों में है। संयमपूर्ण व्यवहार करने वाले व्यक्ति पर वे सदा प्रसन्न रहते हैं।

संन्यास का मतलब है अपने कर्म का फल भगवान् के जिम्मे छोड़ देना। संसार में जितने भी विचार या कार्य हैं वे सब भगवान् नटराज के नृत्य की मुद्राएं हैं। भक्ति का अर्थ है अपने कामों को भगवान् की योजना में शामिल करना। असुर अपने स्वभाव के अनुसार मृत्यु से बचने के लिए भगवान् से हर किस्म का वरदान

मांग लेते हैं। महिषासुर को मारने के लिए मां पार्वती को दुर्गा का रूप धारण करना पड़ा था। असुर (अपराधी) भले ही वरदान पाकर जश्न मना लें लेकिन उनकी मृत्यु का रास्ता भगवान् के पास सदा बचा ही रहता है। उनका सरल सा 'तथास्तु' वरदान कभी साधारण नहीं होता। भला भगवान् की बुद्धि का अतिक्रमण कौन कर सकता है। चं. ने दक्ष के शाप से बचने के लिए मां सरस्वती के तट पर महामृत्युंजय मंत्र का जप करके अमरता पाई थी। ज्ञान केवल वहां रहता है जहां क्रोध नहीं होता। व्रत लेने में असमर्थ भीमसेन ने निर्जला एकादशी का व्रत लेकर व्रत का पूरा फल पाया था।

हमारी पुराण कथाएं आत्मा का बोध करवाने में सहायक हैं। संसार के पिता ब्रह्मा की शक्ति भगवती गायत्री हैं। संसार के परमाणुओं का प्रवाह विषमता से समता की ओर होता है। राजा सगर के पुत्रों की भस्म का प्रवाह कपिलाश्रम के पास गंगा जी में किया गया था। व्यासपूजा का मतलब है, गुरु-शिष्य के पवित्र संबंध की पूजा। क्षीरसागर में चार मास तक सोए विष्णु (हमारी आलस्य वृत्ति) देवठन की एकादशी को जागते हैं। समस्त जीवों द्वारा अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार एक-दूसरे का भला करने की वृत्ति का नाम यज्ञ है। सूर्य ग्रहणकाल में शिव (कल्याणकारी वृत्ति) नींद ले रहे होते हैं। उस समय सूर्य की सात्विक किरणों के अभाव

से प्रभावित जीवों में तमोगुण की वृद्धि हुई रहती है। ज्वाला जी मन्दिर में सती माता की जिह्वा गिरी थी। यहां की नौ ज्योतियां दुर्गा के नौ रूप हैं। उनका पवित्र धड़ नगरकोट में गिरा था, वहां नगरकोटी माता के दर्शन होते हैं। देवताओं की उपासना हमें सर्वोपकारी दैवी जीवनदृष्टि प्रदान करती है। छायाबिन्दु रूप राहु ग्रह सूर्य भगवान् से उनकी अमृत चुराने की शिकायत का बदला सूर्य ग्रहण के रूप में लेता है। छाया या अंधेरे में आसुरी वृत्ति का पैदा होना स्वाभाविक है। इस वृत्ति से बचने के लिए उस समय भगवन्नामस्मरण आवश्यक होता है।

शिवलिंग का अभिषेक शहद, दही और घी से किया जाता है। ब्रह्म की एक से बहुत होने की इच्छा रूप ब्रह्मांड के विस्फोट की आवाज ॐ रूप में आज भी कण-कण में विद्यमान् है। गंगा का मूल स्रोत गोमुख समुद्रतल से 14000 फुट ऊंचा है। ओपरी बाधा के निवारणार्थ गूगल धूप जलाकर हनुमान् चालीसा का पाठ और महामृत्युंजय मंत्र का जप किया जाता है। हमारी जन्म कुंडली हमारे प्रारब्ध या पूर्वकर्म की तस्वीर होती है। ओपरी बाधा भी हमारे बुरे कर्म के फल स्वरूप पैदा होती है। हर देवता अपने-अपने विभाग का अध्यक्ष है। विपरीत ग्रहों को शांत करने के लिए गायत्री जप, महामृत्युंजय जप तथा अपने इष्ट देवी-देवता की पूजा की जाती है।

हमारा जीवन आत्मा की शक्ति के विकास के लिए एक अमूल्य अवसर है। हमारी आत्मचेतना हमारी सर्वोच्च गुरु है। गुरु के उपदेश से भी अंततः इसी का जागरण होता है।

भगवान् महादेव या शिव सृष्टि के प्रथम राजा हैं। हर देवता के अंदर महादेव के दर्शन करने की आज्ञा है। हर देवता उसी एक महादेव का रूप है। किसी भी देवता को महादेव से पृथक् देखना पाप है। ग्रहण काल में इष्टमंत्र का जप, सतनजे का दान द्रव्य सहित किया जाता है। धर्म या परोपकार के रास्ते से हम अध्यात्म की मंजिल तक पहुंचते हैं। हर वस्तु को परमात्मा की संपत्ति समझना अध्यात्म दृष्टि है। विश्व को अध्यात्म दृष्टि देने वाली भारत मां पर हमें गर्व है। इस दृष्टि के अनुसार हर चीज में चेतना है। अध्यात्म दृष्टि पैदा होने पर हमारा किसी से भी वैर भाव बाकी नहीं रहता। पूर्व और उत्तर दिशाएं देवस्थान होने के कारण पूज्य और शुभ हैं। अग्निदेवता देवताओं के सेनापति हैं। ये शक्ति और ऊर्जा के रूप हैं। अर्जुन ने सेना (बाहुबल) और कृष्ण में से केवल कृष्ण को चुना था। हमारी मांग भी निरंतर कृष्ण के लिए रहनी चाहिए।

मनुष्य की जीवनयात्रा मैं से हम की ओर अग्रसर होती है। जीवन का सच्चा आनंद हम सबके साथ है। मैं में तंगदिली है, जबकि हम में दरियादिली है। पुरुषार्थ (परमात्मा के लिए काम) करने

से अच्छा प्रारब्ध बनता है। सांसारिक वस्तु में अहंकार करना हमारा प्रबल शत्रु है। वामनावतार वामनों या उपेक्षितों के अवतार हैं। वे स्वार्थी धनाधीशों को छल से वश में करके दैवी वृत्ति वाले लोगों का पोषण करते हैं। मध्यकाल तक भारत वैचारिक रूप से सम्राट रहा। वेद हमें बांटकर खाने का संदेश देते हैं। ऋग्वेद का अनुभव अग्नि ऋषि ने किया था। विराट् परमाणु के अंदर और परमाणु विराट् के अंदर है। आहुति या परोपकार हमारे शरीर और मन दोनों को शुद्ध करते हैं। ऋषि सत्य का अनुसंधान करते हैं, निष्पक्ष भाव से। अतिथिसेवा एक यज्ञ है। ईश्वर मेहनती आदमी को उसकी मेहनत से भी अधिक का लाभ देते हैं। प्रेम, करूणा और शांति आदि आत्मा के धर्म हैं। हमारे गुरु हमारे सुप्तात्मा को जगाते हैं। सज्जन आदमी एक जीता जागता तीर्थ होता है।

कमजोर आदमी अपनी आत्मा को नहीं पा सकता। आत्मलाभ के लिए शक्ति का संचय जरूरी है। ऋषि अपने अनुभव के माध्यम से हमारे जीवन का मार्गदर्शन करते हैं। हम एक वृक्ष की तरह अनेक प्रकार से परोपकार कर सकते हैं। मंत्र देवता के स्वरूप का दर्शन कराता है। मंत्र की यही सबसे बड़ी शक्ति है। वेदव्यास की महती देन यह है कि उन्होंने हमारी सुविधा के अनुसार वेद के विभाग किए। देवता को बुलाने वाले होता के लिए अलग, यज्ञ

विधाता अध्वर्यु के लिए अलग, मंत्रगान के उद्गाता के लिए अलग और यज्ञ निरीक्षक के लिए अलग। हवन भी एक यज्ञ है।

देवठन की एकादशी के पूर्व के चार मासों में पाताल के जीव धरती पर उभर आते हैं। हमारा शरीर पानी से भरे घड़े के समान है। घड़ा फूट जाने पर जिस तरह उसका पानी महासागर में मिल जाता है उसी तरह शरीर के जलादि तत्त्व महाप्रकृति में समा जाते हैं। धर्म (विशेष व्यवसाय) हमारा स्वाभाविक गुण है। उसी गुण के अंदर हमारा आनंद छिपा है। यही सूक्ष्म शरीर या मन की सर्वोत्तम अनुभूति है। शक्ति और शक्तिमान् पार्वती और शिव की तरह एक-दूसरे में समाए हुए हैं। हमारा अस्वाभाविक काम हमरी आत्मा का हानि कारक शत्रु है। भर्ग देवता वह दिव्यात्मा है जिससे समस्त आत्माएं संचालित होती हैं।

वीरवार को केले के वृक्ष का पूजन करने से कन्या विवाह में हो रहा विलंब दूर होता है। शनि का कोप शनिवार को पीपल वृक्ष की पूजा करने से शान्त होता है। भागवत पुराण के दसवें स्कंध की रासपंचाध्यायी गायत्री (परमात्मशक्ति) मां की साक्षात् मूर्ति है। बिल्व वृक्ष में मां लक्ष्मी (सर्वविध सुख) का निवास माना गया है। दक्षिण और पश्चिम शीतल दिशाएं मानी जाती हैं। इनकी ओर से आने वाली सूर्य किरणें लाभप्रद नहीं होती। पूर्व और उत्तर

की ओर से घर में प्रवेश करने वाली किरणें लाभप्रद होती हैं। वास्तुदेवता एक प्राकृतिक ऊर्जा है। हमारे अदृश्य शरीर का नाम मन है। जो लोग हिंसा में विश्वास करते हैं उनमें स्वभाव से असहनशीलता होती है। परिवर्तन इतिहास का नियम है लेकिन अपनी आत्मचेतना के विकास के प्रति सावधान व्यक्ति सचमुच महान् होता है।

झाड़ू बड़ा परोपकारी और आदरणीय है। इसके अपमान का फल है विपत्ति को न्यौता। संसार की हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना एक सम्मानजनक स्थान है। वर-वधू के ग्रहमिलान से तात्पर्य है दोनों के अदृश्य स्वभाव का मिलान। प्रत्यक्ष स्वभाव सदा संपूर्ण नहीं होता। अप्रत्यक्ष भी अपने आप में सदा संपूर्ण नहीं होता। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष दोनों स्वभाव समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। हमारे माता-पिता प्रत्यक्ष चांद और सूरज हैं। इनके आदर और सेवा से हमें चांद और सूरज दोनों ग्रहों की प्राकृतिक ऊर्जाएं मिलती हैं। धर्म या प्राकृतिक नियम वह आदरणीय नियम है जिसका किसी अन्य प्राकृतिक नियम से कोई विरोध नहीं होता। अपने आत्मा के विरोधी नियम का त्याग कर देने में ही सबका भला है। भगवान् से यदि हम कुछ मांगें तो यह मांगें कि हमें सदा अपनी सर्वकल्याणकारी योजना में हिस्सा लेने का मौका प्रदान करते रहें। हमारा स्वाभाविक काम सदा आध्यात्मिक और ईश्वरीय योजना के अनुकूल होता है। इस प्रकार का काम न

केवल हमारी सांसारिक जरूरतें पूरी करता है बल्कि आगामी जीवन को भी उन्नत और सुखद बनाता है।

भेड़ाघाट से प्राप्त नर्मदेश्वर महादेव प्राकृतिक रूप से प्रतिष्ठित होते हैं, इनकी अलग से प्रतिष्ठा करवाने की जरूरत नहीं होती। अनाथ बालक से बढ़कर हमारा कोई दानपात्र नहीं हो सकता। अनाथ के जीवन की उन्नत्ति में सहयोग देना विना शक सबसे बड़ा पुण्य है। देवप्रतिष्ठा के काम में देवता के अंदर चेतना या जीवन का संचार किया जाता है। मंत्रों से मूर्ति जीवित हो उठती है। जीवित मूर्ति ही हमारे सर्वविध कल्याण का संपादन करती है। अपूजित मूर्ति निष्प्रभाव होती है। यज्ञोपवीत एक जीवित मूर्ति है। उपनयन संस्कार के बाद उस मूर्ति की उपासना या संध्या कर्म करना जरूरी हो जाता है। विना संध्या के जनेऊ धारण करना बेकार है। गृहस्थ पीले रंग का जनेऊ धारण करते हैं और पुराना पड़ जाने पर उसे सिर के पीछे की ओर से उतारते हैं। इसके माध्यम से हम भगवान् की विश्व व्यवस्था में अपनी भागीदारी अदा करते हैं।

राम का जन्मस्थान भारत की आत्मा है। आत्मरक्षा और आत्मविकास व्यक्ति का ही नहीं देश का भी कर्त्तव्य है। सर्वधर्म सापेक्षता भारत के प्राण हैं। गायत्री मां रजोगुणी, सर्वत्र भ्रमणशील और कर्मठ हैं। सर्वदा संघर्ष करते हुए ये हमारी रक्षा और पोषण

करती रहती हैं। देवता की शक्ति देवता के उपासक पुजारी या दिवां में विराजमान होती है।

जन्म कुंडली में सूर्य बलवान् हो तो सूर्य से संबधित चीजों से लाभ होता है। अगर सूर्य कमजोर हो तो उन्हीं चीजों से नुकसान अथवा उन पर फालतू का खर्च बढ़ता है। इसी प्रकार सभी ग्रहों के प्रभाव उनकी ताकत और कमजोरी पर निर्भर करते हैं। बलवान् श. दु:ख को घटाता है।

मैं शब्द का मतलब केवल शरीर नहीं बल्कि संपूर्ण जीवन है। इस मतलब को जानने से हमारी बुद्धि वश में हो जाती है। विशेष तरीके से जिम्मेदारी को निभाने का नाम विवाह है। जन्म की भूमि या देश सदा पूजनीय होते हैं। अपनी इंद्रियों पर शासन करने वाला सबसे बड़ा विजेता होता है। दर्शन या फलसफा वह है जो सत्य या सभी जीवों के अंदर स्थित चेतना का दर्शन कराए। शास्त्र वह है जो संपूर्ण जीवन पर शासन करे। हमारे कर्म हमारे भाग्य के निर्माता हैं। संध्यादि उपासना करने से 'मैं' शब्द के असली अर्थ का अनुभव होता है। 'मैं' हमारी इन्द्रियों के कामों का गवाह है। सच्चा गवाह किसी की तरफदारी नहीं करता। सत्य का अनुभव करने वाली नजर को समाधि कहते हैं। जो जाता या चलता है उसे जगत् कहते हैं। देवता हमें देवत्व या दूसरों के लिए जीने की प्रेरणा देते हैं। सत्वगुण

या सुख बढ़ने का नाम ही स्वर्ग है। सांसारिक चीजों के प्रति ममता बढ़ने का नाम नरक है। परिवर्तनशील वस्तु के प्रति मोह हानिकारक होता है।

भगवान् अपना आत्मा है। आत्मा या चेतना संपूर्ण संसार में व्याप्त है। अपने आत्मा में स्थित होने का नाम आनंद है। भगवान् गणेश हमारे इंद्रियगण या इंद्रियसमूह के स्वामी हैं। ये हमारी इंद्रियों के मार्गदर्शक हैं। ब्रह्मा संसार का विस्तार करते हैं। सबको रूलाने वाले देवता रूद्र कहलाते हैं। जिसमें विष या जहर हो उसे विषम कहते हैं। असली मौनव्रत वह है जिसमें मन ही न रहे। चेतना की चंचलावस्था का नाम चित्त या मन है। चेतना प्रकाशरूप है। राम शिव में रमण करते हैं। ब्रह्म को लक्ष्य बनाकर काम करने वाले लक्ष्मण कहलाते हैं। दुष्ट मन रावण कहलाता है। केवल शरीर को चेतन समझना महापाप है। 'मैं' नष्ट नहीं होता। 'मैं' के अर्थ को समझने वाला ब्रह्मज्ञाता है। सबको सन्मार्ग पर चलाने वाला आदमी नेता कहलाता है। आजकल ऐसे नेता दुर्लभ हैं।

अवतारी पुरूष धर्म का रक्षक होता है। मोक्षदाता गुरू पूज्य है। चिंता चिता से बलवान् होती है। अनश्वर 'मैं' को जानने वाला पंडित कहलाता है। कुंठा या दासता से मुक्त स्थिति का नाम वैकुंठ है। ज्ञान का अर्जन करने वाला अर्जुन है। सत्य से न डिगने

वाला अच्युत है। कार्य का मूल कारण है। ज्ञान का मूल प्रमाण है। अविद्या (ममता) मोक्ष के मार्ग में बाधक है। मृत्यु से रहित स्थिति का नाम अमृत है। मेहनत करने से सर्वविध उन्नति होती है। अज्ञानरूप अंधकार को मिटाने वाली दृष्टि तीसरी आंख कहलाती है। मन का काम विषयों में विविध कल्पनाएं करते रहना है। चेतना शक्ति चित्त में रहती है। शरीर में मैंपन विषयों में ममता पैदा करता है। विषयों में आसक्त न होना ब्रह्मचर्य है। अपमान मरने से अधिक कष्टदायक है। अपने मन का स्वामी व्यक्ति स्वतंत्र होता है। सत्य के प्रति निष्ठा का नाम श्रद्धा है। मुक्ति (आनन्द) का साधन अपने आत्मा का ज्ञान है।

मनन का फल मंत्र का अनुभव है। कठोर पुरुषार्थ का नाम तपस्या है। हमारा आत्मा महादेव है। बुद्धि का काम 'शिवोऽहम्' का अनुभव करना है। मन का नाश हो जाने पर केवल आत्मा शेष रहता है। मंत्र से देवता वश में होते हैं। वेदों का लक्ष्य हमको अपने आत्मा का अनुभव कराना है। विवेक को मांगने वाला सच्चा भिक्षु है। भूख के बढ़ने को मोह कहते हैं। युद्ध समूल नाश करता है। विद्वान् का अनादर करना हानिकारक है। वेदों का सार आत्मज्ञान है। जिसका मन विषयों मे न रमे वह नर है। ब्रह्मज्ञाता ज्ञान का सागर है। कामातुर व्यक्ति मन के अधीन होता है। विवेक स्वर्ग का दरवाजा है।

दक्षिणा अपने काम में दक्ष को दी जाती है। अपने मन या विचार का स्वामी देवता कहलाता है।
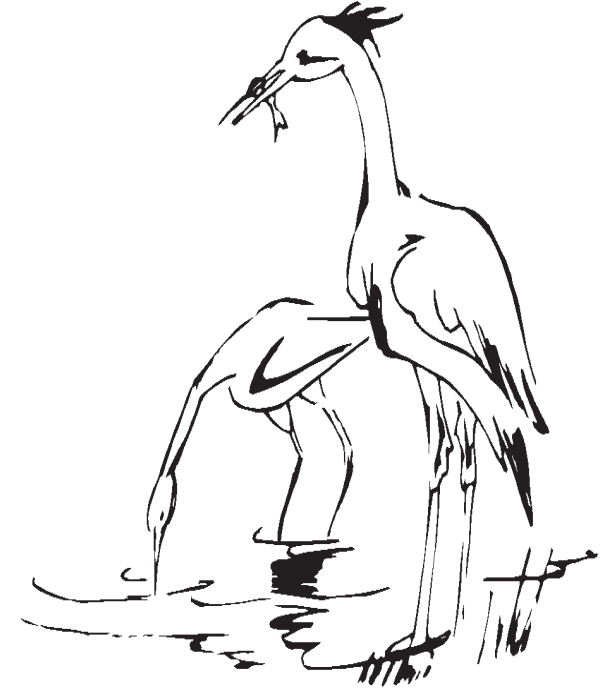
हमारे सामान्य व्यवहार में ब्राह्मणत्व की साधना

बघाट राज्य की स्थापना लगभग 2000 साल पहले हुई थी। कंडाघाट पहले कोहिस्तान कहलाता था। धाजा उत्सव राजा बलि की प्रसन्नता के लिए किया जाता है। आशा एक आन्तरिक सांत्वना है। संन्यास का मतलब है भगवान् की कार्ययोजना में अपने हिस्से का सहयोग देना। हमारी असफलता हमें सफलता के तरीके सिखाती है। भगवान् कृष्ण अथवा सर्वकल्याणकारी योजना की सफलता के लिए राधा ने नरक जाना भी मंजूर किया था। हमें केवल

होना ही नहीं बल्कि 'कुछ' होना चाहिए। हमारा चेहरा हमारे कार्यों का दर्पण होता है। निष्काम परोपकारी काम स्वयं संपत्तियां लाता है। हमारे रिश्तों में असरदार ताकत होती है। इतरा के पुत्र ऐतरेय ने अपने अपमान के बदले में ऐतरेय ब्राह्मण की रचना की थी। वीर्य की रक्षा हमारे आत्मविकास में सहायक होती है। दूसरों की गलतियों से कुछ सीख लेना बुद्धिमानी है। अपनी आजादी का दुरूपयोग करना मंहगा पड़ता है। केवल हमारा मौलिक व्यक्तित्व ही हमारे लिए लाभप्रद होता है। निर्भय बालक ही शिक्षा पा सकता है। किसान दुनिया की कील या केन्द्र है। उन्नत किसान देश की उन्नति का आधार है। डर मन को रोगी बनाता है। जिसकी चेतना निर्मल होगी उसका जीवन के प्रति नजरिया भी निर्मल होता है। ओढ़ी गई छवि (नकल) चेतना की मलिनता होती है। सीखना एक मानसिक प्रशिक्षण है। हमारे अपने पास की चीजों में हमारे लिए आशा की किरण होती है। दरिद्र नारायण भगवान् का आदरणीय रूप है। बिस्तर का प्रयोग झाड़कर करें। पानी गंदा न करें। हम भोजन बैठकर करें। स्नान साफ पानी से करें। मेहमान का आदर करना हमारी महान् परंपरा है। जूते हमेशा कमरों और पंगत से दूर खोलने चाहिए। मूत्र और शौच शौचालयों में करना चाहिए। कुछ भी खाने या पीने के बाद हाथ धोकर कुल्ला करना चाहिए। रजस्वला के स्थान व वस्त्र के स्पर्श से बचाव करें। दूसरों की इज्जत की रक्षा करें। महामृत्युंजय मंत्र के जप

से मृत्यु के भय का निवारण और ब्रह्मज्ञान का लाभ होता है।

स्वच्छ शौचालय हमें रोगमुक्त रखता है। वीर्य का हर कण एक जीवन है। नशों अथवा अज्ञानपूर्ण तमोगुणी जीवन बिताने से वीर्य या जीवन का नाश होता है। चलते-फिरते कुछ खाना असभ्यता है। हमारे अंदर अपनी बुरी आदत को बदलने की हिम्मत होनी चाहिए। सबकी भलाई के अंदर ही हमारी भलाई भी छिपी होती है। जिस औषधि पर हमारा विश्वास होता है, वही औषधि हमें स्वस्थ करती है। हर आदमी के अंदर कोई न कोई खास गुण जरूर होता है। जिसके पास स्वास्थ्य है, उसके पास सब कुछ है। हम अपनी जीवन रूपी भूमिका को ईमानदारी और मेहनत से निभाएं। दुनियां में आरंभ में हर अच्छी बात का मजाक किया जाता है। हमारे व्यक्तिगत कर्तव्य के अंदर ईश्वर का निवास होता है। हमें मनुष्य योनि तक पहुंचाने का अवसर देने के लिए कृपालु भगवान् का धन्यवादी होना चाहिए। औषधि के अंदर खुद विद्यमान रहकर भगवान् हमें स्वस्थ करते हैं। हमारी असफलताओं के मूल में आशा की किरण रहती है। परोपकार करके उसे भूल जाने पर हमें भगवान् की असीम प्रकार के अदृश्य लाभ मिलते हैं। शिक्षा जीने की एक कला है। विरोधी स्वरों के बावजूद भी हमें अपने विराधियों से अपना शुभ संवाद जारी रखना चाहिए। जहां तक हो सके अपनी समस्याओं के हल हमें अपने आप

खोजने चाहिए। विश्वास रखें, हमारा अगला सबेरा हमारे लिए अनेक प्रकार के उपहार लेकर आएगा। हमारे अपने लिए बनाए गए नियम हमें कभी काम से थकने नहीं देते। समंत्र स्नान हमें दिव्य शक्तियां प्रदान करता है।

इससे बड़ी महानता क्या हो सकती है कि प्रहलाद् ने अपने कुकर्मी पिता के लिए भी भगवान् से मोक्ष (परमसुख) मांगा था। हमारा काम भगवान् की प्रजा की सेवा में अर्पित होना चाहिए। भगवान् हमें हमारे हृदय या प्रेम के अंदर मिलते हैं। मनुष्य मात्र को अपने तरीके से अपना भला सोचने का अधिकार है। अच्छा सोचना अपने आप में एक अचूक दवाई है। केवल अपने स्वार्थ के लिए स्थापित संबंध तनाव पैदा करते हैं। देश का दोस्त ही हमारा सच्चा दोस्त है। घमंड विनाश का दरवाजा है। बरसात में विषैले कीटाणु सक्रिय हो जाते हैं। उस समय सूखे वस्त्र पहनना और पानी को छान कर पीना जरूरी होता है। भगवान् और महापुरूष कभी अपने किए गए उपकारों के लिए एहसान नहीं जताते।

अध्ययन का कार्य आत्मा से होता है। यह एक समर्पण है। पंजीकृत वसीयत हमें अनेक कानूनी अड़चनों से बचाती है। पूंजीवाद का अंत हमेशा निश्चित होता है। सर शब्द का प्रयोग हमारी गुलामी की निशानी है। गलती करना भी सीखने का एक हिस्सा है।

हर शब्द का अपना एक इतिहास है। प्रशंसा सुनना कान का नशा है। कोई भी विषेशज्ञ पहले नौसिखिया ही होता है। दिल से किए गए करूणापूर्ण फैसले ज्यादा अच्छे होते हैं। जिसमें अपनी निंदा सुन लेने की क्षमता है वह दुनिया को जीत सकता है। केवल अच्छे काम ही हमें ऊंचा उठाते हैं। प्रेमपूर्वक अपने कर्त्तव्य को निभाने का नाम सेवा है। हम न्यायपूर्वक धन कमाएं और उसे विवेकपूर्वक खर्च करें। हम जैसा काम करेंगे वैसा ही हमारा भविष्य होगा। मीठी वाणी पैसों से अधिक मूल्यवान् होती है। हमारी जीवनयात्रा हमारे आत्मा की धुरी पर चलती है। विश्वविद्यालय वह है जहां पर विश्वभर के लोग परिवार की तरह प्रेम पूर्वक जीना सीखते हैं। विना अंग्रेजी की अनिवार्यता के भी बहुत से देश अपनी भाषा के बल पर उन्नत हो चुके हैं। मानवता पूर्ण व्यवहार प्रोटोकोल से भी अधिक महत्वपूर्ण है। सब के सुख के लिए किए गए हमारे प्रयास हमारे लिए खुद सुख लाएंगे। मशीनों के प्रयोग के बावजूद भी हम मनुष्य बने रह सकते हैं।

एक ईमानदार आदमी ईश्वर की सर्वोच्च रचना है। महान् विचारों से ही महान् काम बनते हैं। हमारा निर्मल आत्मा हमारे शरीर की गतिविधियों को सदा देखता रहता है। हमारी समस्त समस्याओं के समाधान करने की प्रेरणा हमको हमारी आत्मा की आवाज देती रहती है, यदि कोई सुनने की कोशिश करे तो। विद्वान्

वह कहलाता है जो अपने शुभ ज्ञान पर आचरण भी करे। कोई भी व्यक्ति जिसके पास अच्छे काम का अनुभव हो, उसको अपने देश की संपत्ति समझ कर उसको संरक्षण दिया जाना चाहिए। शाकाहारी सदा परोपकारी होता है। दूसरे का मांस खाने वाला कभी परोपकार नहीं कर सकता। खाली ज्ञान कोई महत्व नहीं रखता, उसका सदुपयोग जरूरी है। सदुपयोग के अनेक रूप हो सकते हैं। अपने विचारों को कार्यरूप देने में ही हमारे जीवन की सार्थकता है।
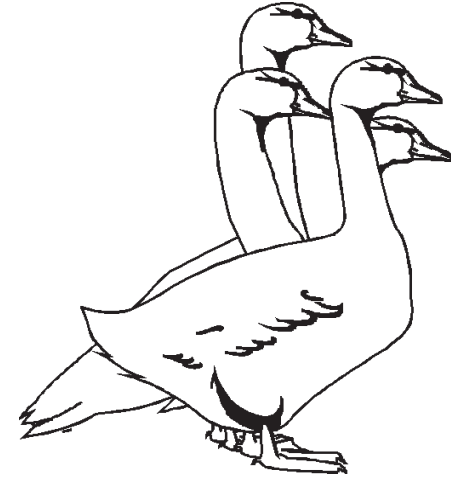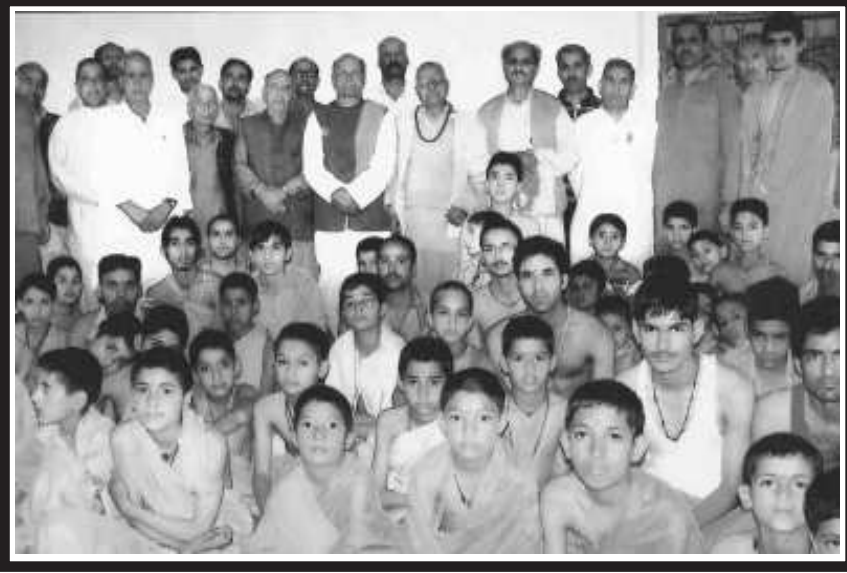
सर्वहितकारी ब्राह्मणत्व साधना के विविध आयाम

ब्राह्मणत्व साधना के संदर्भ में 'भला भाई अरो बुरा भाई' कथा सोलन क्षेत्र के बारे में बहुत कुछ कह जाती है। शेल ब्योल वृक्ष की टहनियों से बनता है जो कि पशुओं के चारे के साथ-साथ मशाल (हूला) आदि हेतु विशिष्ट समिधा भी दे जाता है। छा या लस्सी यहां के कृषकों की खुराक की कहानी बताती है। नगाड़ा यहां के उल्लास भरे जीवन को दर्शाता है। दोनों भाई जीवन की अच्छाई और बुराई के बीच समन्वय का संदेश देते हैं। प्राचीन कथाओं के अनुसार यहां नदी-नालों की गुफाओं में राक्षसों का वास

होता था। कोई चतुर मनुष्य ही राक्षसों के जीवन को बदल सकता था या उन्हें मार सकता था। महाबली भीम और हिडिंबा इसके प्रमाण हैं। अनेक राक्षस मनुष्यों की गुप्त सेवा भी करते थे। उनके उत्सवों के लिए वे बर्तनादि एक निश्चित स्थान पर रख देते थे, जहां पर उन्हें साफ करके वापिस रखना होता था। कहते हैं एक नरभक्षी राक्षस ने एक 'आफू' नामक मनुष्य को अपनी पीठ खुजलाने के लिए रखा था। उसने लोहे के गर्म ताले से उसकी पीठ खुजलाकर उसे जान से मारा था। जब उसके परिवार वालों ने उसे पूछा कि क्या हुआ तो वह बोला था-आफुए यानी अपने आप फुका। एक चित्र एक हजार शब्दों को कहने की शक्ति रखता है। विवेक सदा आदरणीय होता है। यौवन हमारे व्यवहार के अंदर दिखना चाहिए। हमारे शरीर का सच्चा व्यायाम हमारी शारीरिक मेहनत से होता है। हमारे विचार हमारे व्यक्तित्व के निर्माता हैं। हमें केवल उसी रूचिकर डिप्लोमा डिग्री को पाने की कोशिश करनी चाहिए जो लोकोपयोगी भी हो। मांस का स्वाद केवल किसी जीव की हत्या करके ही लिया जा सकता है। साहित्य आत्मा का भोजन है। जिस आत्मा को यह नसीब नहीं होता वह निरंतर क्षीण होती चली जाती है। साहित्य समाज के साथ जुड़कर जीने का तरीका सिखाता है। किसी को क्षमा करके हम उसे खुद सुधरने का अवसर प्रदान करते हैं। पवित्र तरीके से कमाया गया धन ही हमारे जीवन को पवित्र बनाता है। हमारा

शरीर एक पवित्र शिवालय है। इसके अंदर सर्वकल्याणकारी चेतन शिव निवास करते हैं। समय (जीवन) हमारे लिए भगवान् का दिया हुवा सर्वोत्तम उपहार है।

मेरे देश की भलाई के काम में ही मेरा अपना भला है। प्रयत्न करना हमारी चेतना का गुण है। प्रयत्नशील होना ही हमारे जीवित होने का लक्षण है। सत्य की ताकत जरूर असर करती है, भले ही धीरे। अच्छा आचरण बुद्धि से अधिक असरदार होता है। तीखी प्रतिक्रिया हमेशा नुकसान करती है। हम अपने विचारों में विनम्रता के साथ सदा मजबूत बने रहें। शान्त दिमाग में स्वास्थ्यप्रद तरंगें हिलोरें लेती हैं। साहित्य जीवन को स्वाधीन बनाता है। हमारी रचना हमारे लक्ष्य को दिशा देती है। भय हमारी उम्र को कम करता है। तकली एक कुदरती मशीन है। आत्मनिर्भर गांव और व्यक्ति ही भारत को उन्नत कर सकते हैं।

प्रेरणा उपदेश से अधिक असरदार होती है। अपने दोष को न देखना हमारा अंधापन है। शिखा या चोटी को बांधने से हमारे मस्तिष्क की शक्ति स्थिर बनी रहती है। मनुष्य का जीवन महाकाल और ब्रह्मांड का एक टुकड़ा है। जीवन का विकास क्रम हिंसा से अंहिसा की ओर चलता है। हमारे कम ज्ञान से भी कुछ सृजन हो सकता है। हर इन्सान मूलत: किसी न किसी किसान की

साधना का ही फल है। सुख केवल स्वावलंबन में है। डर हमें बेमौत मार सकता है। कम से कम शब्दों में अधिकतम उपयोगी विवरण प्रस्तुत करना एक श्रेष्ठ लेखन कला है। अपनी प्रतिभा पर घमंड करना एक आसुरी प्रवृत्ति है। सांसें मनुष्य और वनस्पतियों के बीच जीवन का आदान और प्रदान करती हैं। हमारा नाम या शब्द एक शक्ति है। इस शक्ति का प्रयोग सुन्दर और सम्मानजनक रूप में होना चाहिए। शब्द का अपमान ब्रह्म का अपमान है।

अभिमान हमें ब्राह्मणत्व से गिराता है। असुरराज विरोचन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र राजा बलि अपने पूर्वजन्म के सत्कर्मों के कारण सिहांसन पर बैठ गया। अपने गुरू शुक्र की आज्ञानुसार विश्वजीत यज्ञ करने पर उसको इन्द्रासन का लाभ हो गया। उस आसन की स्थिरता के लिए गुरू ने उसे सौ विश्वजीत यज्ञ करने की आज्ञा दी। कहते हैं सुख और शान्ति को पचाना बड़ा कठिन होता है। अभिमानवश उसने देवताओं को स्वर्ग से भगा दिया। देवताओं द्वारा भगवान् विष्णु से उसकी फरियाद करने पर भगवान् ने करूणावश भाद्र शुक्ल द्वादशी के दिन माता अदिति और ऋषि कश्यप के घर वामन रूप में अवतार लिया। उसके सौवें यज्ञ से पूर्व ही एक यज्ञ में भगवान् याचक ब्राह्मण के रूप में उपस्थित हो गए। गुरू शुक्र ने यह सब भांपकर यजमान को सावधान किया और कहा कि वह

यज्ञपूर्ति से पूर्व यज्ञस्थली को न छोड़े। घमंड के भी पांव होते हैं। उससे न रहा गया। 'आ बैल मुझे मार' कहावत चरितार्थ हो रही थी। अतिदान या अभिमान से बलि बंध गया। वह बीच में ही उठकर याचक से कुछ मांगने की प्रार्थना करने लगा। अंधे को क्या चाहिए था, दो आंखें। केवल तीन कदम धरती मांगी। संकल्प पूरा होते ही वामन विराट् रूप हो गए। पहला कदम पृथ्वी लोक पर दूसरा ऊपर के समस्त लोकों पर और तीसरा कदम बलि के कथनानुसार उसके सिर पर रखा। घमंड तो सद्गुणों का भी बुरा परिणाम लाता है। फिर भी भगवान् ने उसे पाताल पर शासन के साथ साथ अमरता भी प्रदान की। स्वार्थपूर्ण व्यवहार सदा मात खाता है। दूसरों को डराने वाला आदमी हमेशा डरपोक होता है। अपने रूचिकर विषय की पढ़ाई ही सदा कल्याणकारी होती है। पूजा की पहली शर्त समर्पण की भावना है। दुनियां का हर प्राणी दूसरों की मदद के विना जीवित नहीं रह सकता। हमारा जीवनचक्र आपसी मदद पर चल रहा है। गायत्री मां की उपासना से रजोगुण की शक्ति या क्रियाशीलता का लाभ होता है। दुर्लभ खनिज के लालच में प्रकृति का विनाश मानवमात्र को महंगा पड़ रहा है। बुद्धि से थके मनुष्य की भाषा कविता का रूप ले लेती है। हमारी संग्रह करने की आदत ने हमारी खुशियां छीन ली हैं। हर आदमी उसके काम से पहचाना जाता है। अच्छा लक्ष्य कभी छोटा

नहीं होता। मिट्टी हमेशा पकने पर ही मूल्यवान् बनती है। परंपरा से ही भारत की चिंताएं विश्वसनीय होती हैं। जैविक खेती जमीन की उपजाऊ शक्ति को टिकाऊ बनाती है। मुंगी की दाल में पर्याप्त पोषक तत्त्व होते हैं। कसौली जीवनरक्षक दवाओं के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। आयुर्वेदिक दवाइंया हमें सात्विक और सुखदायी जीवन प्रदान करती हैं। अनार, आंवला और बिल्व के वृक्ष घर के पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं। हिमाचल प्रदेश में पैदा होने वाली वनौषधियां सौम्य गुण वाली होती हैं।

सोलन जिला की जनसंख्या लगभग आठ लाख है। कसौली और चायल यहां के दर्शनीय स्थल हैं। यहां जीवन के मुख्य आधारों में से टमाटर और शिमला मिर्च की खेती होती है। मशरूम की खेती भी निरंतर बढ़ रही है। जिले के अंदर लगभग दस विश्वविद्यालय हैं। प्रदेश के कुल पौधों का तीसरा भाग औषधीय है। परंपरानुसार भगवान शिव या महादेव सृष्टि के सर्वप्रथम राजा माने जाते हैं। कहते हैं कि सोलन क्षेत्र का परहाड़ देवता पहले राजा शिरगुल का बजीर था। परहाड़ का राजा शिरगुल के साथ कोई विवाद हो जाने से वह सिरमौर छोड़कर कोठी (देलगी) में आकर बस गया था। कोठी गांव में आज भी कोठी चौंरा जगह पर परहाड़ को दीपदान की परंपरा है। परहाड़ कोठी गांव के कुठालों का पूर्वज

था। उसने राजा शिरगुल के विरूद्ध कश्मीरी राजकुमार बीजेश्वर को खड़ा किया था। यह अलग बात है कि कुछ लोग बीजेश्वर और शिरगुल के बीच के युद्ध को मनगढ़न्त बताते हैं। बिजट को बीजेश्वर मानने की बात भी गले नहीं उतरती। यह अलग बात है कि विशेष कर कुठालों के सिरमौर स्थित पूर्वजों का इष्ट देवता बिजट रहा हो। इतना सुनिश्चित है कि परहाड़ देवता बीजेश्वर का मंत्री रहा था।

देवथल एक पुरातन ऐतिहासिक स्थल माना जाता है। कहते हैं कि इसका पुराना नाम शेवथल यानी शिव स्थल था। शिव के उपासक बीजेश्वर ने भी शिव के आदेश से यहां शिव का मंदिर बनवाया था। बीजेश्वर आदि की मूर्तियां तो बाद में स्थापित की गई हैं। जन श्रुति के अनुसार नकुल ओर सहदेव का संबन्ध भी देवथल से बताया जाता है। बाड़ीधार से पांडवों का संबन्ध तो है ही। बघाट की सीमाएं पटियाला रियासत से लगती थी। शूलिनी माता आदि सात बहनें प्रसिद्ध हैं।

जड़ संसार भी चेतन आत्मा का ही रूप है जो अपने आपको व्यक्त नहीं कर सकता। संसार भगवान् शिव का आनंद नृत्य है। हमारे विविध देवी देवता एक ही महादेव शिव के रूप हैं। पीपल सर्वाधिक आक्सीजन प्रदान करता है। भारत में जातिवाद भेद भाव और नजराना या रिश्वत अंग्रेजों की देन है। साबूदाना बनाने में कीट

पतंगों की हिंसा होती है। नीम और पीपल के वृक्ष वर्षा लाने में अधिक सहायक हैं। काम सीखने का मौका कम वेतन लेकर भी नहीं छोड़ना चाहिए। परोपकार आत्मा की खुराक है। व्यक्ति की बजाए सिद्धान्त पर टिप्पणी करना लाभदायक है। आंवला में सभी विटामिन मौजूद होते हैं। लोगों की जरूरत के अनुसार कुछ हटकर काम करना उपयोगी होता है। नींद पूरी न होने से मोटापा बढ़ सकता है। हमारे नियम अधिकाधिक लोगों के लिए हितकर हों। हमारी समस्याएं हमारी आत्मा की शोधक होती हैं। नीम और पीपल के पेड़ हमारे स्वास्थ्य के रक्षक होते हैं। डर, आशा और लालच हमें बिकाऊ बनाते हैं। रस, आसव और अरिष्ट रूप औषधियां टिकाऊ होती हैं। सही व्यक्ति से सही काम लेने में ही फायदा है। देश काल और परिस्थिति के अनुसार ढलना हम पांडवों से सीखें। अहंकार हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। इसे अध्यात्मविद्या से गलाया जा सकता है। हमारा वही काम उत्तम होता है जिसका समर्थन आत्मा (सर्वहित भावना) करती हो।

मनुष्य का मूल स्वभाव सरलता, सहजता और विनम्रता है। इसे हम भगवान राम से सीखें। पेड़ पौधे भी साफ पानी पीते हैं। चाह या इच्छा को राह मिल ही जाती है। ज्ञान हमें होश में लाता है। सुख एक शीतल हवा है। स्वाबलंबन के लिए अखबार बेचना भी अच्छा है। प्रतिभा, मेहनत और भाग्य से सफलता मिलती है। हर

प्रकाश किरण के पीछे अंधकार जरूर होता है। नैतिक बल हर बुराई पर हावी होता है। फूल तोड़ने का मतलब है सौंदर्य को नुकसान पहुंचाना। हम जिस स्थान की उपज हैं उस स्थान की उपज हमारे लिए औषधि और उन्नतिदायक होती है।

हमारी योग्यता की असली पहचान है अपने विरोधी स्वर में भी अविरोधी स्वर की खोज। लक्ष्मी अथवा सर्वविध सुख वहां आता है जहां पति-पत्नी में अविरोध या प्रेम हो। हमारी सादगी में सत्य अंहिसा, सहजता और सुन्दरता निवास करते हैं। विकास या उन्नति के लिए हम सबको स्नेह और स्वतंत्रता की जरूरत होती है। भारत को असली पहचान एक आयुर्वेदज्ञाता प्रधानमंत्री ही दे सकता है। विश्व के कल्याण के लिए ताकत का प्रयोग करने में भी संकोच न हो। पर्यावरण के सुधारार्थ लोगों को जागरूक करने के लिए वर्णमाला में वनस्पतियों के नाम दिए जाएं। सभी कालों के लिए उपयोगी फिल्मों में गुरूदत्त की फिल्म 'प्यासा' भी एक मानी जाती है। भ्रूण हत्यारा ईश्वरीय इच्छा का हत्यारा होता है। हमारी छोटी छोटी उपलब्धियां बहुत कीमती होती हैं। हमारे लिए हर चुनौती में एक स्वर्णिम अवसर जरूर छिपा होता है।

चिंता से मुक्ति के लिए सही दिशा में मेहनत जरूरी है। मोटी बुद्धि का नाम मोह या महिषासुर है। जिसको कुछ नहीं चाहिए

केवल वही सब कुछ दे सकता है। बरसात में निर्गुण्डी या बणे की टहनी कहीं भी गाड़ने से उसका पौधा आसानी से तैयार हो जाता है। देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है। पेड़-पौधे स्वयं विष पीकर हमें प्राण या ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। ये साक्षात् नीलकंठ शिव हैं। हमारे अंदर बुरे काम की निंदा और अच्छे काम की प्रशंसा करने की हिम्मत होनी चाहिए। हम हमेशा पहले से बेहतर की खोज करते रहें। हर प्राणी प्यार का भूखा होता है। शरणदान हमारी पवित्र परंपरा है। रोम में प्रताड़ित यहूदियों को हमारे पूर्वजों ने दक्षिणी भारत में शरण दी थी।

हमारे स्वाभाविक गुण को प्रशिक्षण मिलना जरूरी है। सन् 1800 में रूड़की के स्थानीय लोगों ने गारा पत्थर और चूने की नहर बनाकर इंजीनियरी का कमाल दिखवाया था। हमारे जीवन का प्रधान लक्ष्य हनुमान जी की तरह रामकाज या विश्वकल्याण के लिए काम करना है। फिल्में भी 'तारे जमीं पर' फिल्म की तरह परिवार कल्याण आदि की शिक्षा दे सकती हैं। कार्बनडायऑक्साइड विष को सोखने का सबसे सस्ता तरीका है-वृक्षारोपण। इंसानियत के साथ समृद्धि सदा सराहनीय होती है। शांति के फल हमेशा मौन के वृक्ष पर लगते हैं। हम अपनी जरूरत से अधिक को आखिर रखेंगे कहां? अपने सहज काम में एक छोटा सा कदम भी महत्वपूर्ण होता है। किसी से नफरत करना समय की बर्बादी है। हमारी जिन्दगी किसी

और की जिन्दगी से नहीं तोली जा सकती। हमारे अच्छे सपने साकार होने ही चाहिए।

अपने सहज काम के विकास के लिए सेवानिवृत्ति एक अच्छा अवसर है। चोट हमें मजबूत बनाती है। हमारे जीवन की सार्थकता हमारे हाथ में होती है। हर व्यक्ति का अपने जीवन को जीने का एक स्वतंत्र तरीका होता है। हर दिन एक खास दिन होता है। सुख पाना हमारा अपना जिम्मा है। समय घाव को भर देता है। हमारे अंदर अपने प्रोत्साहनदाताओं की चाह की समझ होना जरूरी है। हमारे उत्पाद की उपयोगिता में निरंतर वृद्धि होनी चाहिए। वर्तमान समस्याओं और उनके समाधानों की खोज ही सच्चा विज्ञान है। हम अपने काम में निरन्तर श्रेष्ठता की ओर बढ़ें। भली या बुरी वस्तु नहीं बल्कि हमारी सोच होती है। शान्तिनिकेतन (विश्वविद्यालय) में प्राप्तांकों की अपेक्षा प्राप्त ज्ञान को महत्व दिया जाता है। वहां पहली कक्षा से पी0एच0डी0 तक की शिक्षा में खेती और बागवानी का शिक्षण भी शामिल है। रास्ते में चलने का आनंद मंजिल पर पहुंचने के आनंद से बड़ा है। अपने सिद्धान्त से समझौता करना घाटे का सौदा है। हमें अपनी आंतरिक चेतना की तानाशाही भी मंजूर कर लेनी चाहिए। कोई भी समस्या अजेय नहीं होती।

हमारा जीवन दूसरों के लिए प्रेरक बने। क्षत्रिय का

जन्म ज्ञान के साधकों और न्याय की रक्षा के लिए हुआ है। अध्यापक हमें बाहर और अंदर से मजबूत बनाता है। बघाट की संस्कृति को संरक्षित करने के उपाय बताते हुए परंपरा प्रेमी सम्मान्य विद्वान् बघाटराजवंशी कंवर श्री शैलेन्द्र सिंह जी कहते हैं :-

1. भाषा बोली

बघाट की बोली को संरक्षित करने के लिए समस्त परिवार के सदस्य आपस में केवल बघाटी का प्रयोग करें तथा यदा कदा कोई आयोजन करके इस में कविता पाठ या किसी विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन करें। बच्चों के लिए निबंध कविता की प्रतियोगिता आयोजित करें तथा बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए इनाम भी रखें जाएं।

2. पहनावा

पहले पहने जाने वाले वस्त्र जैसे सुथन, गोल या काली टोपी, बास्कट, सदरी, चुड़ीदार पायजामा, अचकन आदि को फिर से प्रचारित किया जाए।

3. आचार व्यवहार

पहले समय की तरह सभी बघाट के निवासियों को पुराने रीति रिवाजों के बारे में जानकरी दी जाए, विशेष कर बच्चों को। जैसे पहले बड़े छोटे लोग आपस में किस ढंग से अभिवादन

करते थे, जैसे पंडित जी पाय लागु, जय देया, झुक कर नमस्कार करना, पांव छूना इत्यादि। साथ ही किस प्रकार से बड़ों या छोटों को सम्बोधित किया जाता था। जैसे पंडित जी, कुवंर साहब, भाउ जी, देई जी इत्यादि।

4. सांस्कृतिक धरोहर

बघाट में प्रचलित मनोरंजन के साधन गाने, करियाला, ठोडा के आयोजन किये जाने चाहिए। इन को प्राथमिकता मिले। करियाला की प्रतियोगिता की जाए जिस में आजकल की समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया जाए। पहाड़ी गानों तथा ठोडे की प्रतियोगिता का आयोजन करके इन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं।

5. मेले व त्योहार

बघाट में मनाये जाने वाले मेलों तथा परम्पारिक कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। जैसे बोहच, बसाल, सलोगड़ा और द्‌यारशघाट इत्यादि मेलों का आयोजन पुराने ढंग से किया जाना चाहिए। ठोडे, कश्टे, करियाले इत्यादि का आयोजन हो। लोग राम नवमी, शिवरात्रि, जन्माष्टमी और नवरात्रों में व्रत इत्यादि रख कर इन त्यौहारों को भी मनाते थे।

6. खान पान

बघाट में पकाए जाने वाले व्यंजनों को लोक प्रिय बनाने बारे पग उठाए जाने चाहिए। मेलों के अवसर पर विशेष स्टॉल लगा कर पूड़े, खीर, लुश्के, चिलटू, टुटुवा, धिन्धड़े, पटांडे आदि परोसे जाने चाहिए।

7. पारम्पारिक खेलों को बढ़ावा

आज से पहले छोटे बच्चे पिठु, अखरोट, गोली, गुल्ली डंडा, छुपन छुपाई इत्यादि खेलते थे। इन खेलों को पुनः प्रोत्साहित किया जाए। बघाटी रीति रिवाजों को पुनः जीवन देकर किस प्रकार से फिर से समाज में खुशी का माहौल पैदा किया जाए, इसके लिए बुजुर्ग पुरूषों और महिलाओं का सहयोग लिया जाना हमारे लिए बहुत हितकारी होगा।

‘सर्वकामनापूरक सरलतम देवपूजन अथवा हवन’

(विद्वत् सम्मत)

किसी भी देवमूर्ति के सामने जाएं अथवा शुद्ध साफ सजी थाली में षट्कोण पर गणेश जी को स्नान करवाकर उनकी मूर्ति रखें। अपने पास साफ थाली में गंध अक्षत पुष्प मिलाकर रखें। गणेश जी को मौली से जूब बांधें और सजाएं। आचमन, पवित्रीकरण

और प्राणायाम करके कुश पवित्र पहनकर गणेश जी के पास नमः के साथ क्रमशः बीच की दो उंगलियों और अंगूठे से क्रमशः गंधाक्षतपुष्प चढ़ाते जाएं :-

मंगलमूर्तये श्री गणपतये नमः।

पृथिव्यै नमः।

अंबिकायै नमः।

ड्यारशदेवाय नमः।

बीजेश्वर देवाय नमः।

नगरकोट्यै नमः।

शूलिनीदेव्यै नमः।

तारादेव्यै नमः।

ज्वालायै नमः।

माहुनागाय: नमः।

महाकालिकायै नमः।

ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः।

महालक्ष्म्यै नमः।

महासरस्वत्यै नमः।

ब्रह्मणे नमः।

गंगायमुनादिनदीभ्यो नमः।

सत्यनारायणाय नमः।

सोमनाथादि द्वादशज्योतिर्लिंगेभ्यो नमः।

आदित्याय नमः।

ब्रह्माविष्णुशंकरेभ्यो नमः।

भृग्वादि ऋषिभ्यो नमः।

सप्तस्वरेभ्यो नमः।

सप्तरसातलेभ्यो नमः।

सप्तसागरेभ्यो नमः।

कश्यपादि सप्तर्षिभ्यो नमः।

सप्तद्वीप पवनादिभ्यो नमः।

भूरादि सप्तलोकेभ्यो नमः।

अश्वत्थामादि सप्तचिरंजीविभ्यो नमः।

नलाय नमः।

युधिष्ठिाराय नमः।

सीता रामाभ्यां नमः।

हरिश्चन्द्राय नमः।

बलरामाय नमः।

दुर्गायै नमः।

अहिल्यादिपंचकन्याभ्यो नमः।

अयोध्यादिसप्तपुरीभ्यो नमः।

कर्कोटकादिनागेभ्यो नमः।

मत्स्यादि चतुर्विशंति अवतारेभ्यो नमः।

श्रोत्रिये भ्यो नमः।

अग्नये नमः।

लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

उमामहेश्वराभ्यां नमः।

शचीपुरंदराभ्यां नमः।

सर्वेषां कुलेष्टदेवताभ्यो नमः।

सर्वेषां कुल ग्राम स्थानदेवताभ्यो नमः।

वास्तुपुरूषाय नमः।

अस्मन्मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

ॐकाराय नमः।

सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः।

गौर्यादि शोडष मातृका भ्यो नमः।

कलश कुंभाय नमः।

कलशस्थ वरूणादि देवताभ्यो नमः।

पंचलोकपालेभ्यो नमः।

दशदिक्पालेभ्यो नमः।

चतुःष्टियोगिनीभ्यो नमः।

शेषवासुक्यादि नागेभ्यो नमः।

ऋगादि चतुर्वेदेभ्यो नमः।

सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः।

सर्वतोभद्रमंडलस्थ देवताभ्यो नमः।

स्कन्दाय नमः।

हनुमते नमः।

परशुरामादि ब्राह्मणेभ्यो नमः।

षष्ठीदेव्यै नमः।

शनिराहुकेतुभ्यो नमः।

ऋद्धि सिद्धि आदि देवताभ्यो नमः।

सिद्धपीठेभ्यो नमः।

वेदव्यासादि धर्माचार्येभ्यो नमः।

यमेभ्यो नमः।

पूर्वजेभ्यो नमः।

पितृ भ्यो नमः।

बगलामुख्यादि दशमहाविद्याभ्यो नमः।

भैरवाय नमः।

सप्तलोकस्थदेवताभ्यो नमः।

एकादशरूद्रेभ्यो नमः।

धर्माय नमः।

पुराणादिधर्मशास्त्रेभ्यो नमः।

वृन्दावनप्रयागपुष्करादि तीर्थेभ्यो नमः।

बद्रीनाथादि धामभ्यो नमः।

अश्विन्यादि नक्षत्रेभ्यो नमः।

स्वजन्मवार नक्षत्र राशिग्रहेभ्यो नमः।

गोमातृभ्यो नमः।

प्राणादिवायुभ्यो नमः।

तुलसीवटादि वृक्षदेवताभ्यो नमः।

दीप भैरवाय नमः।

एकादश्यादि व्रतेभ्यो नमः।

सत्यादि युगेभ्यो नमः।

मनुशतरूपाभ्यां नमः।

विश्वकर्मणे नमः।

गर्गादि गोत्रेभ्यो नमः।

सर्ववर्णे भ्यो नमः।

नवदुर्गाभ्यो नमः।

नारीशक्ति भ्यो नमः।

शिवपरिवाराय नमः।

रामपंचायतानदेवताभ्यो नमः।

शिवादिपंचायतनदेवताभ्यो नमः।

भारतमात्रे नमः।

अन्नपूर्णायै नमः।

साकेतादिदिव्यधाम भ्यो नमः।

ब्रह्मगायत्री देव्यै नमः।

ध्रुव प्रह्लादादि भक्तेभ्यो नमः।

राधा कृष्णाभ्यांनमः।

कामधेनुकल्पवृक्षाभ्यां नमः।

दिगीश्वेरेभ्यो नमः।

दिग्भ्यो नमः।

महाकालेश्वराय नमः।

ॐकाराय नमः।

मार्कंडेयमहामृत्युंजयाभ्यां नमः।

हिमाचलप्रदेशे पूजितेभ्यो देवेभ्यो नमः।

भारतवर्षे पूजितेभ्यो देवेभ्यो नमः।

समस्त संसारे पूजिते भ्यो देवेभ्यो नमः।

(प्रातः काल इन नाममंत्रों का उच्चारण करने से संस्कृत भाषा भी आएगी और भगवान् की कृपा भी अनायास प्राप्त होगी)

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत भाषा का मूल तात्पर्य ब्रह्माण्ड के कण कण में समाए हुए एकमात्र भगवान् शिव के स्वरूप को समझने तथा उनके कल्याणकारी स्वभाव को अपने दैनिक व्यवहार में उतारने में है। इसी तात्पर्य को ध्यान में रखकर यहां संस्कृत भाषा में प्रवेश करने का एक सरल तरीका सुझाया गया है।

क्रिया नम् का अर्थ है झुकना

प्र+नम् = प्रणम् का अर्थ है प्रणाम करना

कर्ता (करने वाला) तथा

कर्ता के साथ वाली क्रिया के साथ लगने वाले प्रत्यय

कः (कौन)	=	ति
बालकः	=	ति
सः (वह)	=	ति
तौ (वे दो)	=	तः
ते (वे सब)	=	अन्ति
त्वं (तुम)	=	सि

युवां (तुम दो)	=	थः
यूयं (तुम सब)	=	थ
अहं (मैं)	=	आमि
आवां (हम दो)	=	आवः
वयं (हम सब)	=	आमः
कः नमति	=	कौन झुकता है।
बालकः नमति	=	बालक झुकता है।
कः प्रणमति	=	कौन प्रणाम करता है?
सः प्रणमति	=	वह प्रणाम करता है।
तौ प्रणमतः	=	वे दो प्रणाम करते हैं।
ते प्रणमन्ति	=	वे सब प्रणाम करते हैं।
त्वं प्रणमसि	=	तुम प्रणाम करते हो।
युवां प्रणमथः	=	तुम दो प्रणाम करते हो।
यूयं प्रणमथ	=	तुम सब प्रणाम करते हो।
अहं कं प्रणमामि	=	मैं किसको प्रणाम करता हूं?
अहं गणेशं प्रणमामि	=	मैं गणेश को प्रणाम करता हूं।

संस्कृत के शब्द के साथ आम तौर पर अम् या ई लगाने से उस शब्द का अर्थ अमुक या फलां को हो जाता है। जैसे शिव+अम्= शिवम् (शिवको) पार्वतीं, जलं, देवं, देवीं और रामं आदि।

अहं शिवं प्रणमामि = मैं शिव को प्रणाम करता हूं।

आवां पार्वतीं प्रणमाव: = हम दो पार्वती को प्रणाम करते हैं।

वयं रामं प्रणमाम: = हम राम को प्रणाम करते हैं।

इस प्रकार हम अपने शब्दों को अनेक क्रियाओं के साथ जोड़ने का अभ्यास कर सकते हैं। यहां क्रियाओं के रूप केवल वर्तमानकाल के दिए जा रहे हैं क्योंकि पूजनकर्म में केवल वर्तमान काल का ही प्रयोग होता है। किसी भी शब्द के आठ रूप होते हैं। जैसे शिव शब्द के शिव (ने), शिव को, शिव से, शिव के लिए, शिव से जुदा, शिव का, शिव में (पर), हे शिव! पूजन में 'के लिए' का प्रयोग अधिक होता है। जैसे देवाय, देवाभ्यां, देवेभ्य: आदि। अत: देववाचक शब्दों के साथ इसका अभ्यास करें। शिव जैसे अ अंत वाले शब्दों के रूप संस्कृत में शिव + आय = शिवाय, देवाय और गणेशाय आदि बनेंगे। देवपूजन के प्रेमी लोगों को देववाचक शब्दों के साथ चतुर्थी विभक्ति लगाने का अधिकाधिक अभ्यास करना चाहिए, कल्याण होगा।

शिवाय नम: = शिव के लिए नमस्कार की तरह देवाय नम:,

गणेशाय नम: = ई अंत वाले देवी वाचक शब्दों के देव्यै, पार्वत्यै, लक्ष्म्यै, आदि रूप बनेंगे।

देव्यै नम:=देवी के लिए नमस्कार की तरह पार्वत्यै नम:, लक्ष्म्यै नम:।

गणेशाय नम: = गणेश के लिए नमस्कार

सम् + अर्पयामि = समर्पयामि = सौंप रहा हूं। (समर्पण ही भक्ति है)

क: अर्पयति? अहं समर्पयामि = मैं सौंप रहा हूं।

अहं गणेशाय आसनं समर्पयामि। इतना सीख जाने के बाद आप पूजन के समय अपने पुरोहित जी से अर्थ पूछते जाएं। देवताओं की कृपा से आप शुद्ध संस्कृत बोलना और लिखना सीख जाएंगे। जिस व्यक्ति के पास विनम्रतापूर्ण समर्पण का भाव है उसके पास संस्कृत भाषा और सांस्कृतिक जीवन शैली स्वयं चली आती है। सुसंस्कृत होना ही हमारा राष्ट्रीय धर्म है। राष्ट्र धर्मे निधनं श्रेय:।

वास्तव में भगवान् को कुछ सौंपने से हमारा प्रत्यक्ष लाभ यह होता है कि इससे हमारी भावना शुद्ध हो जाती है। सबको सब कुछ सौंपने वाले भगवान् हमारी वस्तुओं के भूखे नहीं हैं। भगवान् की हमें दी हुई वस्तु ही हम भगवान् को सौंपते हैं। त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये। हमारी समस्त समस्याओं का कारण भगवान् की वस्तुओं के प्रति हमारी झूठी ममता है। इस झूठी ममता से बचने का एकमात्र उपाय है कि उन वस्तुओं को उस भगवान् को ही सौंप दें, जिसकी कि वे वास्तव में हैं। संस्कृत भाषा का हर अक्षर, शब्द और वाक्य हमें यही सिखाता हुआ नजर आयेगा। एक न एक दिन हमें इसका अभ्यास भगवान् के सान्निध्य का आनंद अवश्य

प्राप्त करवाता है। हार्दिक शुभकामनाएं।

नमति सफलः वृक्षः (फल वाला वृक्ष झुकता है।)

झुकना विनम्रता का लक्षण है। झुक कर किया गया प्रणाम ही सफल देता है। कोमल कदम उंचाई तक ले जाते हैं। संस्कृत वाक्य के शब्दों का क्रम बदलने पर भी वह अपना मूल अर्थ नहीं खोता। नम्रता का यह गुण व्यक्तित्व के लचीलेपन की ओर भी संकेत करता है।

सफलः वृक्षः नमति। वृक्षः सफलः नमति। वृक्षः नमति सफलः। ...आदि

ये सब वाक्य एकार्थक हैं। वृक्ष बहुत हों तो वाक्य होगा - नमन्ति सफलाः वृक्षाः। इसके परिवर्तित क्रम वाले शब्द भी यही अर्थ देंगे। इस तरह स्वयं छोटे छोटे वाक्य बनाने का अभ्यास करें :-

बालकः जलं पिबति।

बालकाः फलं खादन्ति।

अत्र मम गृहं अस्ति।

तत्र तेषां गृहाणि सन्ति।

सबेरे संध्या के मंत्रों को पढ़ने से संस्कृत भाषा शीघ्र समझ में आती है। हमें सूर्योदय से पहले सूर्य भगवान् का स्वागत करना चाहिए। स्वागतयोग्य व्यक्ति या देवता के पहुंचने के बाद

उसका स्वागत करने जाना उसका अपमान है। स्वागत आगमन से पहले होता है। संध्या करने के बाद अपना दैनिक कार्य करना चाहिए। अपने संकल्प में अहं सविश्वपरिवारः का प्रयोग अनंत फलदायक होता है। हम वस्तुतः भगवान् की प्रसन्नता के लिए ही सब करते हैं। संध्यारहित दिन का काम केवल स्वार्थपूर्ण होता है। अनेक लोग पूजन कर्मकांडादि का सही क्रम जानना चाहते हैं। हर पंडित अपने अपने क्रम से इसे करते हैं। इसमें कोई उलझन नहीं है। कर्म कांड करते की विद्या है। इसे निरंतर करने से ही सीखना संभव है। सीखने का नाम ही जीवन है। हममें से हर एक को अपने लिए स्वयं विवेकपूर्वक एक क्रम निर्धारित करना पड़ता है। शुभ परिवर्तन में कभी संकोच नहीं करना चाहिए। अपने निर्धारित क्रम या काम की पुष्टि में हमारे पास कोई वेदसम्मत प्रमाण अवश्य होना चाहिए। इसके लिए गीता के प्रमाण सुगम रहते हैं जो साक्षात् वेदस्वरूप हैं। गीता माता मानवमात्र के सद्गुणों का समर्थन करती है। निस्संदेह यह एक सर्वधर्मसापेक्ष आचारसंहिता है जिसे हर देश को अपने यहां संविधान के रूप में मान्यता देनी चाहिए।

सोलन की भूमि ने प्राचीन काल से संस्कृत भाषा और पावन संस्कारों की रक्षा और विकास में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। इसी श्रृंखला में आज यहां एक संस्कृत विश्वविद्यालय या

शोध संस्थान की महती आवश्यकता महसूस की जा रही है। सोलन के सम्मान्य नेताओं, विद्वानों और अधिकारियों के सम्मिलित प्रयासों से यह कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो सकता है। आशा है सोलन इस दिशा में यथाशीघ्र कदम बढ़ाएगा। जय मां सरस्वती।

आओ बघाटि बोलि शिख में

म्हारी आपणी माटी रि सुगन्ध म्हारी बोली मांए रौ। आजकाले दूरा रे रोजगारा अरो पब्लिक स्कूला रे फैशना रे कारण इ सुगन्ध दुर्लभ ओणि लग रोइ। इयां बाता रा ध्यान राख रो ही एती बघाटि बोलि शिखणि रा एक आसान जा तरीका प्रस्तुत असो :-

बघाट = भौत सारे घाटा रा समूह। जिशा कंडाघाट, ओछघाट अरो दयारशघाट आदि।

बघाटि = बघाटा या सोलन क्षेत्रा मांय रोहणि आला आदमि।

बघेर केई = बालक कहां है? एती असो = यहां है।

एसरा नांव का? = इसका नाम क्या है? रणवीर।

रणवीर केई रौ? = रणवीर कहां रहता है?

रणवीर एती रौ = रणवीर यहां रहता है।

इ कुणजि बोलि बोलो? = यह कौन सी बोली बोलती है?

इ बघाटि बोलो = यह बघाटी बोलती है।

इ बेटि कसरि? = यह बेटी किसकी है।

इ बेटि मेरि असो = यह बेटी मेरी है।

इ कौथी मांय पढ़ो? = यह किस कक्षा में पढ़ती है।

इ दशवी मांय पढ़ो? = यह दसवीं में पढ़ती है।

घरे कुण असो? = घर में कौन है?

घरे आमा असो = घर में माँ है।

से का करो? = वह क्या कर रही हैं?

रोटी पकाओ = वह खाना पका रही हैं।

पाणि केई? = पानी कहां है?

बाल्टी मांय = बाल्टी में।

पाणि कसके देणा? = पानी किसको देना है?

बोबो खे = बड़ी बहिन जी को।

से कोए रोशुइ = वह नाराज क्यों हुई?

तियां खे मोंए ढाल ना कि थि = उनको मैंने प्रणाम नहीं किया था।

एबे का होणा = अब क्या होगा?

म्हारे मनावणि = हम मनाएंगे

किसी जानकार से मतलब पूछें :- कुण जाणा? कबे आवणा?

का खाणा? कसरे नीणा? कोए चाखा? कीशा जाओ? केसी बाठि?

केई देखा?

एबु पतोखणा। कसरे नी चेंईं। तब न बोल्यो। भाइया जाणा। हाऊं नी जाणा। म्हारा असो। तीना रा का जाओ। जबे बोलला। तीशा ही करो। तीना रा का काम? बागटी खे जा। ओरा आव। पोरा जा। पीछु ना देखे। बेला न रोए। गावि ल्याव। बोल्दा पाल। पैले घा बाड। मोइ दे। ब्वारे ला। ओब्रा केई? ब्राग ब्रुंग रोआ। जुगाली खे कुण गोआ। कुकड़ी कनिए खाई। बणा दे ल्याव। से कोए लुका। फीरे दे ना बोले। आवका चल। चूल ना चोड़े। बिकर ला। हूंदे भेज। ऊबा राख। चूल चलेव। चड़खू खेद। काव बाशे। तिणिए आदा पटा। भाव सस्ता असो। तबे कबे? हामे नी पूछा। सानि रूट। शेज म्हारे ढोणि। सप्ता कबे दे बेठणा। ब्या मांय देख में। बुरा ना मान्यो। नी आथि। तीना काय का असो? तिनी खे बोलो। इना काय सब ठेंव। एनी रे केतणे पैसे होणे? आऊं आपि काय दे देउए। ताता, सीना, शला, बांगा, चेटा, खाटा, टीणा, नाल, टोडा, खाति, प्योंला, मूंड, गल, खुटि, अडकणि, ओलण, रोटि, बरयालि, कूता, काव, गीज, शायल, सूंर, बांदर, पाथर, माटि, भस्मा। माखे देखो, हामाखे देओ। मांदे लौ, हामा दे लौ, जड़ा दे काडे, म्हारे गौर, मेजा पांय, कनी मांय, हैं भई।

हाऊं बघाटि असु। मेरा नांव विनीत असो। हाऊं

बघाटी सामाजिक संस्था रा सक्रिय सदस्य असू। बघाटा रे आखरी राजे दुर्गासिंहा रा जीवन दर्शन म्हारे जीवना रा प्रेरणा स्त्रोत असो। माखे प्हाड़ा रे रिति रिवाज बड़े प्यारे लगो। मेरी जमीन मेरि मां असो। प्राण जाओ पेरि जमीन न जाओ, इ मेरि सोच असो। हामे आपणी जिंदगी मांए जादे दखावा नी करदे। भगवाने हामा खे जो मेहनत रो ईमानदारी बख्श राखि हामे एते ही साय संतुष्ट असू। हामें मां सोलनी अरो एती रे देवी देवते रे कृतज्ञ असू जीने हामा खे एती रा सुंदरसुखदायक प्हाड़ बख्श राखा।

हामे जैविक या वैदिक खेति करू। दुनियां एबे रासायनिक खेती दे उबणि लग गोइ। कारण कि मां रा दूध बि शुद्ध नी रय गोआ। प्राकृतिक साधना साय कि दि खेति हामा खे स्वस्थ राख सको। अंग्रेज पहले एती रि प्राकृतिक जैविक उपज सस्ति लय रो आपणे देशा खे भेज्या करो थे। जादे फायदे रे चकरा मांए हामें आजा तेंईं संकट मोल लंदे रोए।

बागटी मांएं हामा खे एबे मीठा जैर नी उपजावणा चेंईं। प्राकृतिक उपजा रा एबे मोल बि जादे मीलो। इशि जि खेति हामा खे पुरवा (बिहार) सिक्किम और हालैंडा दे शिखणि चेंईं। प्राकृतिक माटि नरम, भरभरि अरो हवादार हो। नीम ऑयल, नीम पाउडर और गौमूत्र आदि प्राकृतिक कीटनाशक प्रयोग करने चेंईं।

केंचुआ खादा रि उपयोगिता अरो मोल दिनों दिन बढ़नि लगे दे। एते रा प्रयोग सफल माना जाओ। इ बढ़िया घरेलु उद्योग असो। गांव भैरा रे मेहता नेकराम जी जैविक खेती री खातर पुरस्कृत असो। तीना दे एते रा गुर शिखणा चैं।

हमारे मिशन अथवा जीवन लक्ष्य

हमारे जन्म या कर्म के आधार पर मनुष्य के चार प्रकार के लक्ष्य या मिशन हैं। ये सर्वथा स्वाभाविक या प्राकृतिक होते हैं। ज्ञान, रक्षा, कृषि और श्रम। चारों मिशन विश्वसंचालक ईश्वर के सर्वोपकारी प्रयोजन को पूरा करते हैं। पहला मिशन है ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करते हुए भगवान् के प्रयोजन की पूर्ति में संलग्न रहना। दूसरा है ईश्वर के प्रयोजन को साधने में लगे हुए परोपकारी लोगों और न्याय की सर्वविध रक्षा करना। तीसरा है कृषि और व्यापार के द्वारा समाज की जरूरतों की पूर्ति करते हुए ईश्वर की सेवा करना। चौथा है शारीरिक श्रम या नौकरी के द्वारा समाज या ईश्वर की सेवा करना। इन चारों प्रकार के मिशनों में समाज या ईश्वरविरोधी कर्मों के लिए कोई स्थान नहीं है। नशा, हिंसा, शोषण, और घृणित काम सर्वथा समाज या ईश्वरविरोधी होते हैं। चारों मिशन पवित्र और सम्मानजनक हैं। चारों का चरम लक्ष्य एक मात्र ईश्वरप्राप्ति है परन्तु अपने-अपने स्वाभाविक साधनों से। हमारे साधन नितान्त वंशगत

और प्राकृतिक होते हैं। हमारी सर्वविध उन्नति हमारे स्वाभाविक कर्म में निहित है, अधिक धन के लालच में उसे त्यागना नहीं चाहिए। केवल अधिक धन के लालच में हर किसी अन्य अस्वाभाविक काम के पीछे भागना विनाशकारी है। आजकल विदेशों की नकल पर अनेक कंपनियां हमें करोड़पति और मालो माल बनने का लालच देकर हमें अपने स्वाभाविक कर्म से डिगा रही हैं। इस प्रकार का लालच भ्रष्टाचार और अपराधों का पिता है। इससे बचना चाहिए, विशेषकर युवा पीढ़ी को। हमारा स्थायी सुख स्वदेशी तरीके से धन कमाने में है। यही हमारा राष्ट्रीय धर्म या कर्त्तव्य है। विदेशों की नकल करने से मातृभूमि का अपमान होता है। अपनी मातृ भूमि का अपमान तो विदेशी भी नहीं करते।

"सोलन क्षेत्र के बाह्माणत्व साधक पंडित"

स्व0 पं0 श्री दुर्गादत क्वारग गांव के निवासी थे और इन्होंने कर्मकांड और ज्योतिष के माध्यम से समाज की आजीवन सेवा की। ज्योतिष में इनके वंशगत अपने मौलिक अनुभव थे। स्व0 पं0 श्री संतराम गर्ग गोत्री थे तथा सपाटू में रहकर इन्होंने कर्मकांड, पुराणप्रवचन और ज्योतिष में दूर दूर के इलाकों तक अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान की। ये भी अपने वंशगत मौलिक अनुभवों के लिए विख्यात थे।

स्व0 पं0 श्री नीलकंठ गोरखा सेना के पंडित थे जो कि संभवत: नेपाल सीमा से लगते किसी गांव के निवासी थे। इनके धार्मिक अनुभव विश्वयुद्धों से जुड़ाव के कारण विश्वस्तरीय थे। इनकी पौराणिक कथाएं अपने जीवन के अनुभवों से जुड़ी होती थी और शास्त्र सम्मत भी। वर्तमान् पं0 परशुराम भारद्वाज उनके वर्तमान शिष्यों में से एक हैं। पं0 श्री जगत्राम संभवत: नालागढ़ क्षेत्र से संबंध रखते थे तथा पुराणप्रवचन और आयुर्वेद इनकी सेवाओं के विशेष क्षेत्र थे। स्थानीय पंडितों में से अनेकों ने इनका शिष्यत्व ग्रहण किया था। इनकी कार्यशैली स्वतंत्र थी। स्व0 पं0 श्री देवीदत्त शांगड़ी ग्राम निवासी ने संभवत: गुजरात, महाराष्ट्र, चंडीगढ़, और सोलन को अपनी सेवाएं प्रदान की थी। इनका प्रमुख क्षेत्र उपासना और आयुर्वेद था। ये प्रसिद्ध शाक्त थे और इनके शिष्यों की संख्या सोलन क्षेत्र में भी पर्याप्त है। स्व0 पं0 भगवान् दास क्वारग गांव के रहने वाले थे तथा उन्होंने कर्मकांड, आयुर्वेद और पुराणों के माध्यम से समाज की आजीवन सेवा की।

ऊपरोक्त पंडितों के अतिरिक्त नौरा खंडोल गांव से जुड़े बघाट के राजपुरोहित आदि अनेक पंडितों ने कर्मकांड विषय में पर्याप्त ख्याति प्राप्त की थी, जिनकी अगली पीढ़ी के भी अनेक पंडित इस विद्या को यथावत् अपनाए हुए हैं। उक्त परिवार कभी

आयुर्वेद के लिए भी विख्यात रहा था। राजवैद्य माधव शर्मा की सेवाओं से तो प्राय: समस्त सोलन क्षेत्र परिचित है। शोघी के पास गांव थड़ी के पंडित भी सोलन में राजवैद्य रहे थे। शील का धाला गांव भी कभी वैद्यक के लिए प्रसिद्ध था। सोलन के क्षेत्रीय पंडितों ने इस दिशा में समाज को निरंतर सेवाएं प्रदान की हैं तथा कर रहें है। सभी स्व0 पं0 शोभाराम (शतल), पं0 लक्ष्मीदत्त (क्यार), पं0 लक्ष्मीदत्त (पड़ग) और पं0 गीताराम (धाला) आदि अनेक पंडितों की सेवाओं को आज भी समाज याद करता है। प्रसिद्ध कर्मकांडी और पुराणप्रवक्ता पं0 श्री हरिदत्त (जौणा जी) अब काफी वृद्ध हैं। सनातन धर्म के उक्त स्वतंत्र सम्मान्य सिपाहियों के अतिरिक्त अनेक सेवारत पं0 अंशकालिक उल्लेखनीय सांस्कृतिक सेवाएं समाज को समर्पित कर रहे है। उन लोगों का विवरण देना यहां संभव नहीं है। वर्तमान में स्वतंत्र रूप से यजमानों के लिए समर्पित पंडितों में पं0 श्री चंद्रदत भारद्वाज (पाटी चबेर), पं0 परशुराम भारद्वाज (शांगड़ी), श्री मुनिलाल (नौरा खंडोल), श्री हरिराम (नौरा खंडौल), श्री वेणी माध व (नौरा खंडौल), ईश्वरदत्त (नौरा खंडोल), श्रीधर (सपाटु), श्री ईशान (पड़ग) और श्री जितेन्द्र, एवं श्री रजनीश (शोघी) ब्राह्मणत्व की साधना के प्रति समाज को निरंतर जागरूक कर रहे हैं।

भारतीय मानसिकता या ब्राह्मणत्व के विकास में

ब्राह्मणसभा दयारशघाट की गतिविधियां भी उल्लेखनीय हैं। सोलन क्षेत्र की यह एक मात्र ऐसी पारंपरिक संस्था है, जो निःस्वार्थ भाव से साल में चार बार सर्वजन कल्याणार्थ लघुरूद्रीय आदि अनुष्ठान अथवा सपादलक्ष गायत्री जप और पुराणयज्ञ आदि का आयोजन करती रहती है। भारतीय दृष्टि में धर्मानुष्ठान द्वारा ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति में ही मनुष्यता का चरम विकास है।

गायत्री युवक मंडल नौरा खंडोल वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार यज्ञ विवाहादि कार्यक्रमों को सामुहिक रूप से संयुक्त परिवार की तरह मंदिर के साथ जोड़कर संपन्न करता है। आज के समय में अपने घर में श्रीमद्भागवत पुराण कथा यज्ञ का आयोजन वैसे भी कठिन होता जा रहा है। अनंत शिव सन्निधौ के अनुसार मंदिर में इसके आयोजन का महत्व बढ़ जाता है। परंपरानुसार देवता भी अपना आशीर्वाद बारह भाइयों द्वारा मिलकर यज्ञ करने पर ही देते हैं। स्थानीय आठ मुख्य यजमानों ने सबके सहयोग से इस वर्ष शारदीय नवरात्र में श्रीमद् भागवत् पुराण कथा यज्ञ संपन्न किया है। मंदिर कोष को इसमें मिलाकर युवक मंडल ने एक प्रेरक आदर्श प्रस्तुत किया है। उक्त मंडल धार्मिक गतिविधियों के लिए गायत्री मंदिर परिसर को अधिकाधिक विकसित करना चाहता है। ईश्वर इनकी नेक कामनाएं पूरी करें। धर्मो रक्षति रक्षितः। स्थानीय नर्मदेश्वर

महादेव मंदिर का सभा भवन मानवता के विकासार्थ एक बड़ी पावन देन है। इसकी नींव पं0 मौजीराम ने रखी थी, जिनकी योजना को उनके भाई राजवैद्य माधवराम जी ने आगे बढ़ाया। मंदिर एवं सभा भवन का रख रखाव उनके पुत्र पौत्र एवं अगली पीढ़ी सफलता पूर्वक कर रहे हैं। ये लोग सार्वजनिक धार्मिक गतिविधियों हेतु इस स्थल का उपयोग सहर्ष करने देने के लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं। ईश्वर इन्हें सपरिवार सुख संप्रदा प्रदान करें। आने वाले समय में हमारे स्थानीय मंदिर ही नयी पीढ़ी के लिए सुसंस्कार देने वाले केन्द्र होंगे, ऐसा आम आदमी का विश्वास है।

ब्रह्मांशोपनिषत्

सर्वपदार्थान्तर्गते चेतनाचेतन तत्त्वे सम्मिलित रूपेण ब्रह्म उच्यते। इदं चक्षुषा न दृश्यते परं सूक्ष्मबुद्ध्या अवश्यं अनुभूयते। इदं ब्रह्मांडस्य रचनायाः पूर्वं बीजरूपेण तिष्ठति। यथा वटवृक्षस्य बीजे वटवृक्षः, दुग्धे च घृतं बीजरूपेण तिष्ठति तथैव ब्रह्मणि संसारः बीजरूपेण तिष्ठति। ब्रह्मणा 'एकोऽहं' बहु स्याम् इतीच्छया स्वांड रूपं विस्फोट्य ब्रह्मांडे चेतनाचेतनगुणाः कारणगुणानुसारं सहैव उत्पाद्यन्ते। सर्वे जीवाः अजीवाः च न्यूनाधिकरूपेण चेतनाचेतनगुणयुक्ताः। चेतनभागाधिक्येन चेतनजीवाः स्वाभिव्यक्तौ समर्थाः। अचेतनभागाधिक्येन अचेतनजीवाश्च अल्पसमर्थाः। ब्रह्मांडस्य प्रत्येकः कणः

ब्रह्मण: अंश:। कणे कणे ब्रह्मानुभूति: मानवजीवनस्य चरमं लक्ष्यम्। प्रत्येक: कण: ब्रह्मण: ईश्वरस्य वा विस्तृतं रूपम्। कणानां परस्परं वैभिन्यभानमेव समस्याकारणम्। वस्तुत: कणात् कण: जीवात् जीव: च अभिन्न:। य एवं विजानाति स ब्रह्म विजानाति। विज्ञाय च स्वकर्मकुर्वन्नेव पदे पदे ब्रह्मानंदं लभते। ब्रह्मानंदं लभते। इति एष: ब्रह्मांशोपनिषत्।।

विलय एक ब्राह्मण विभूति का

इसी वर्ष जन्माष्टमी के दिन 82 वर्षीय आचार्य श्री प्रभाकर मिश्र ब्रह्मलीन होकर एक विशेष रिक्तता पैदा कर गए। वे वेद, आयुर्वेद, न्याय व्याकरण, संस्कृत, ज्योतिष और अध्यात्म के मूर्धन्य विद्वान् रहे। सबको साथ लेकर चलने की इनमें अद्‌भुत क्षमता थी। इन्होंने ब्राह्मण अंतर राष्ट्रीय संगठन, सार्वभौम सनातन धर्म सभा, विश्वधर्मसंसद् और विश्व आयुर्वेद परिषद् की स्थापना की। मासिक 'सनातन वाणी' का तीस वर्षो तक संपादन किया। उन्होंने व्याकरण और सांख्य योग में आचार्य, आयुर्वेद में वाचस्पति और संस्कृत साहित्य में डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त की थी। ये दरभंगा विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। भारत सरकार द्वारा ये 'पंडितराज' और 'गीता भाष्यकार' की उपाधि से अलंकृत किए गए थे। इनकी अनेक सर्वजनोपयोगी पुस्तकों में से 'धर्म कर्म विज्ञान' अपना एक

विशिष्ट स्थान रखती है। इन्होंने संस्कृत भाषा और आयुर्वेद के प्रचारार्थ लगभग 50 देशों की यात्रा भी की थी। अपने जीवन में ये एक विख्यात धर्मज्ञाता और चिकित्सक रहे। रौटरी इंटरनेशनल ने भी इनको सम्मानित किया था। सर्वजनकल्याणकार्य करने के कारण इनको 'इंद्रप्रस्थ धर्मपीठाधीश्वर जगद् गुरू शंकराचार्य श्री प्रभानंद सरस्वती' की उपाधि से विभूषित किया गया था। इनके उपरान्त उनके सुपुत्र श्री उदय मिश्र उपरोक्त पद को सुशोभित करते हुए उनके मिशन को गति प्रदान कर रहे हैं। ईश्वर करे आम आदमी तक उनकी सेवाओं का लाभ पहुंचे। जयतु ब्राह्मणत्वम् ।

हमारा धार्मिक जीवन

संसार का हर कण अपने स्वभाव या विशेषता पर गतिशील है। स्वभाव या विशेषता का नाम ही धर्म है। धर्म वस्तु को धारण करता है। धर्म के नष्ट होने पर वस्तु भी नष्ट हो जाती है। इसी तरह धरती, आसमान, सूर्य, चन्द्र, जीव और मनुष्य अपने अपने धर्म या गुण पर चल रहे हैं। धर्म किसी भी वस्तु, व्यक्ति, समाज, प्रदेश या देश की आत्मा है। धर्म या आत्मा के कारण ही हम सब का अस्तित्व है। यही कर्म, कर्त्तव्य, गुण या विशेषता कहलाता है। यही परोपकार, विश्वसमन्वय और प्रेम का आधार है। स्विटजर लैण्ड का धर्म घड़ियों का निर्माण, जापानियों की राष्ट्रीयता तो अमेरिकियों का

व्यापार ही धर्म है। हम सर्वजीवोपकारी धर्म या कर्त्तव्य का अनुसरण करने वाले व्यक्ति को ही अपना नेता चुनते हैं। भारत का भी कोई धर्म है तो वह है धर्म तत्त्व की व्याख्या करना और उसको अपने जीवन कार्यों में ढालना। धर्म या प्राकृतिक स्वभाव भारत का प्राण है। हमारे अवतारों, ऋषियों, ब्राह्मणों और अनुसंधाताओं ने ब्रह्मांड व्यापी धर्म को सनातन, हिन्दू या वैश्विक नाम दिया है। किसी भी शाखा धर्म का विरोध न करने वाला यही धर्म समस्त संप्रदायों का मूल है, बाकी तो सब शाखा-पत्र हैं। संसार भर का धर्म केवल एक है और किसी भी वस्तु या देश को धर्म निरपेक्ष नहीं कहा जा सकता। कण-कण धर्मसापेक्ष है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' धर्म सापेक्षता का ही नियम है, धर्म निरपेक्षता का नहीं। हमारा ओढ़ना और बिछौना सर्वजीवोपकारी धर्म है। यही हमारी स्थायी संपत्ति है। हमारी सभी सफलताओं का मूल धर्म है। इस प्रसंग में देवठी (सोलन) के समीप शावग गांव के निवासी श्री मोहन सिंह जी के परिवार के प्रयास सर्वथा स्तुत्य हैं जो धार्मिक तीर्थ यात्राओं का सकुशल सात्विक प्रबंधन करते हैं। समस्त संप्रदायों के श्रेष्ठ नियमों की साररूप सर्व धर्मसापेक्षता ही मानवमात्र का धर्म है जिसका आधारग्रंथ गीता है। धर्म की जय।